Ministry of Information and Broadcasting
Government of India

बुद्ध भगवान से प्रेरणा

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषणों का एक संग्रह

पत्र सूचना कार्यालय

पत्र सूचना कार्यालय

प्रस्तावना

" हम उस देश के वासी हैं जिसने दुनिया को युद्ध नहीं बुद्ध दिए हैं "
- प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी
(संयुक्त राष्ट्र महासभा, सितम्बर 2019)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने निरंतर भारत की आध्यात्मिक शक्ति की न केवल राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में केन्द्रीयता पर जोर दिया है वरन वैश्विक समस्याओं के समाधान में भी इस शक्ति की महत्ता को निरंतर रेखांकित किया है। प्रधानमंत्री हमेशा ऐसी आध्यात्मिक और दैवीय विभूतियों के प्रशंसक रहे हैं जिन्होंने आध्यात्म को कर्म कांडों से मुक्त करके देश सेवा और जान कल्याण का एक सशक्त जरिया बनाया। स्वाभाविक है की प्रधानमंत्री भगवान् बुद्ध के गहरे प्रशंसक एवं अनुयायी रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने सदा ही भारत की आध्यात्मिक शक्ति को देश का भाग्य विधाता और गुलामी के वर्षों में आशा की संजीविनी के रूप में देखा है। वो हमेशा बहुत स्पष्ट रहे हैं की भारत के गौरवपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन की पीठिका भारत की आध्यत्मिक शक्ति पर ही आधारित है।

प्रधान मंत्री का बहुजन हिताय की सक्रिय, पुन: सर्जनकारी और पथ-प्रदर्शक धारणा में दृढ़ विश्वास है। ये ऐसे गुण हैं जो भगवान बुद्ध के संदेश में स्वाभाविक रूप में प्रतिध्वनित हैं, जिसमें वे हमें सर्वाधिक सहज और शांत तरीके से स्वयं और मानवता की जिम्मेदारी लेने के लिए कहते हैं। प्रधान मंत्री मोदी द्वारा अक्सर उद्धृत सूत्रों में से एक "अप्पदीपो भव" है यानी, be your own light, अपना पथ स्वयं प्रदर्शित करें। वैसे तो हर आध्यात्मिक व्यक्ति इस अवधारणा से खुद को जोड़ेगा पर प्रधानमंत्री जैसे वैश्विक व्यक्ति के लिए ये सूत्र बहुत व्यापक रूप ले लेते हैं. एक दीप के तौर पर व्यक्ति महज़ स्वयं को ही नहीं वरन सारी सृष्टि को प्रकाशमय बनता है।

वैसे ही, इसी तरह, प्रधानमंत्री, भगवान बुद्ध की 'ये पमत्ता यथा मता' की शिक्षा का महत्व उजागर करते हैं। अर्थात् शिथिलता त्यागकर ही अमृत पाया जा सकता है और शिथिलता मृत्यु है। अपनी अति परिश्रमी निजी जीवन शैली में इस सूत्र वाक्य को अपनाते हुए, वे इसे राष्ट्रीय और वैश्विक दृष्टिकोण से देखते हैं, और वे कहते हैं कि ऐसी शिक्षाओं का पालन करते हुए, भारत पूरी दुनिया को साथ लेकर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है।

प्रधान मंत्री के भाषणों से गौतम बुद्ध के बारे में एक और पहलू उभरता है, वो है भारत द्वारा शांति के सिद्धांतो का मजबूत प्रतिनिधित्व जिसका सबसे विशेष आधार भगवान बुद्ध के उपदेश हैं। उन्होंने कहा है कि भारत एक ऐसा देश है जिसने दुनिया को 'युद्ध नहीं बल्कि बुद्ध ' दिया है। वे मोहन (भगवान कृष्ण) के कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में दिए गए गीता संदेश से बहुत प्रभावित हैं तो वहीं दूसरे मोहन (मोहनदास करमचंद गांधी) के आधुनिक समय में अहिंसा की धारणा के नेतृत्व के भी कायल हैं। शक्ति, जलवायु, आपदा और शांति के लिए भारत के दृष्टिकोण की व्याख्या करने के लिए भगवान बुद्ध को अक्सर प्रधान मंत्री मोदी द्वारा उद्धृत किया जाता है।

यह पुस्तिका भगवान बुद्ध के बारे में माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के भाषणों का संकलन है जिसमें उनके भारत के प्रधान मंत्री के रूप में पदभार संभालने के बाद से दिए गए भाषण शामिल हैं। संकलन विभिन्न अवसरों पर उनके भाषणों के दौरान उदगारों को एक स्थान पर एकत्रित करता है। प्रधान मंत्री मोदी के भाषण, आमतौर पर भारतीय नीति के प्रमुख तत्वों और उन नीतियों के मार्गदर्शक सिद्धांतों के संकेतक के रूप में कार्य करते हैं। ये भाषण न केवल हमें अतीत की जानकारी देते हैं बल्कि उस सकारात्मक दिशा का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं जिसमें देश आगे बढ़ रहा है। वे प्राथमिक स्रोत हैं जो शीर्ष चिंतन की प्रमुख प्रवृत्तियों को व्यक्त करते हैं।

इस शिक्षाप्रद संग्रह में बौद्ध धर्म से संबद्ध आध्यात्मिक अवसरों पर दिए गए 12 भाषण और 8 अन्य भाषणों के कुछ हिस्से शामिल हैं। ये भाषण भगवान बुद्ध के प्रति प्रधान मंत्री मोदी की समृद्ध आस्था और विश्वास को समझने में महत्वपूर्ण हैं। इन भाषणों में, प्रधान मंत्री मोदी भगवान बुद्ध की शिक्षाओं और दर्शन को उजागर करते हैं जो आज के दौर में प्रासंगिक हैं। ये भाषण ऐसे ऐतिहासिक सीखों और सन्दर्भों से परिपूर्ण हैं जिनकी समसामयिकता स्वयं सिद्ध है । संग्रह में भगवान बुद्ध की मूल्यवान शिक्षाएं शामिल हैं जो हमारे दैनिक जीवन की बेहतरी के लिए अमल में लायी जा सकती हैं। विश्व का वर्तमान परिदृश्य भगवान बुद्ध की शिक्षाओं पर फिर से विचार करने का उपयुक्त समय है जो शांति, सद्भाव और स्थिरता की दिशा में एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य कर सकता है। धार्मिक व्यवहार, ज्ञान, करुणा और सौहार्द का बौद्ध दृष्टिकोण, और तृष्णा का त्याग, एक नई विश्व व्यवस्था के लिए आधार प्रदान करता है जहां हिंसा और संघर्ष त्याग कर प्राकृतिक संसाधनों को विकृत किए बिना विकास पर बल दिया जा सकता है।

संग्रह में भगवान बुद्ध और बौद्ध धर्म से सम्बंधित प्रमुख उद्धरणों पर एक खंड भी शामिल है, जिनका प्रयोग प्रधान मंत्री मोदी ने राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी धारणाएं स्पष्ट करने के लिए किया है।

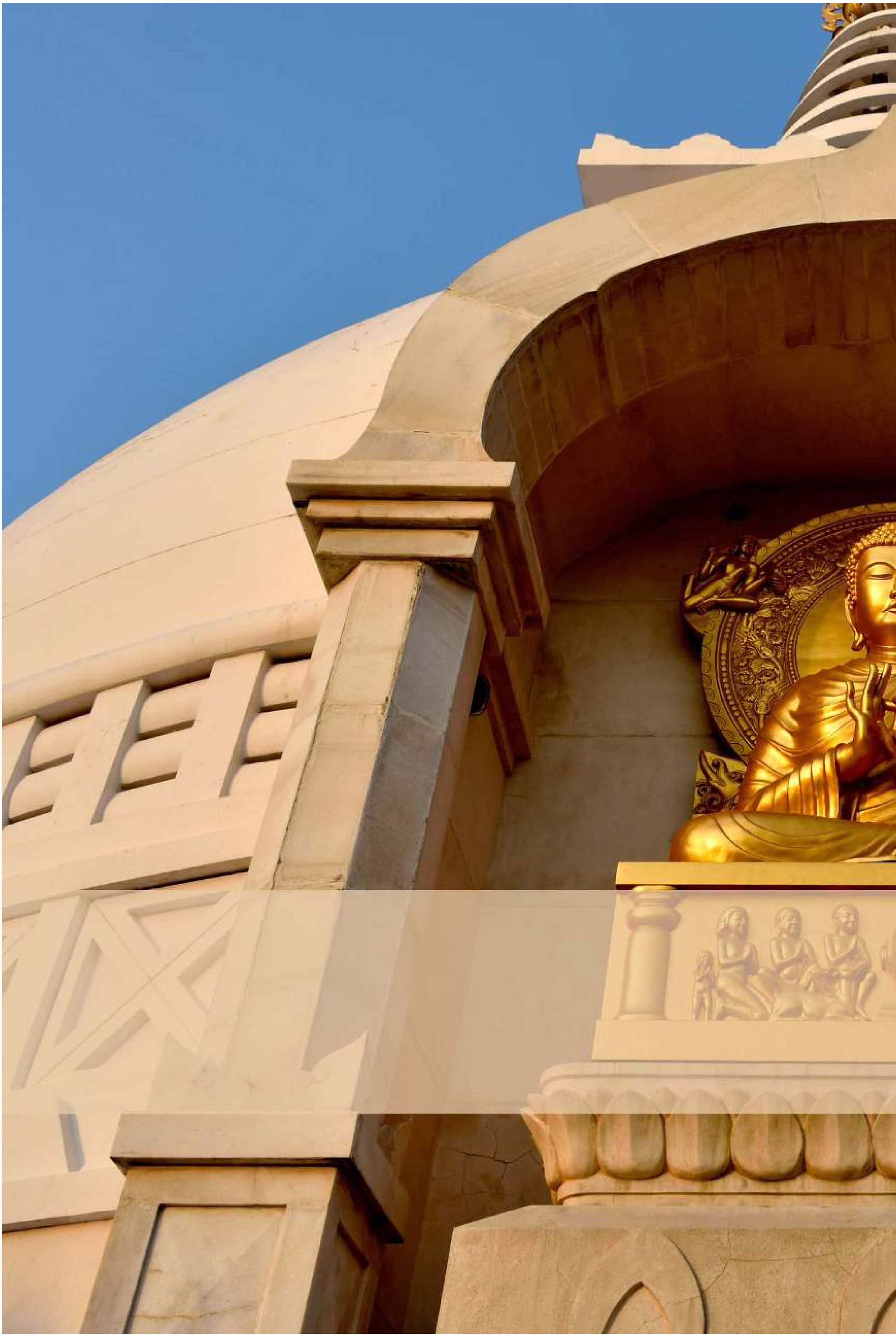

बुद्ध भगवान को समर्पित भाषण

बुद्ध पूर्णिमा पर वर्चुअल वेसाक दिवस समारोह के मौके पर प्रधानमंत्री का संबोधन
26 मई 2021

नमो बुद्धाय! नमस्ते!
वेसाक के इस विशेष दिन पर आप सभी को संबोधित करके मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। वेसाक, भगवान बुद्ध के जीवन के जीवन को याद करने का दिन है। यह उनके महान आदर्शों और बलिदानों पर चिंतन करने का भी दिन है, जो उन्होंने हमारे धरती की उत्थान के लिए किए थे।

मित्रों,
पिछले साल भी, मैंने एक वेसाक दिवस कार्यक्रम को संबोधित किया था। यह कार्यक्रम कोविड-19 महामारी के खिलाफ मानवता की लड़ाई का नेतृत्व करने वाले सभी फ्रंटलाइन वर्कर्स को समर्पित था। एक साल बाद, हम निरंतरता और परिवर्तन का मिश्रण देख रहे हैं। कोविड-19 महामारी ने हमें छोड़ा नहीं है।

भारत समेत कई देशों ने दूसरी लहर का सामना किया है। यह दशकों में मानवता के सामने आया सबसे बुरा संकट है। हमने ऐसी महामारी एक सदी में नहीं देखी है। पूरे जीवन में एक बार सामने आई इस महामारी ने बहुत से घरों को त्रासदी और पीड़ा पहुंचा चुकी है।

महामारी ने हर एक देश पर असर डाला है। इसका आर्थिक प्रभाव भी बहुत ज्यादा है। कोविड-19 के बाद हमारी धरती पहले जैसी नहीं होगी। आने वाले समय में, हम निश्चित तौर पर घटनाओं को प्री-कोविड या पोस्ट कोविड के रूप में याद रखेंगे। लेकिन, पिछले एक साल के दौरान, बहुत से उल्लेखनीय बदलाव भी हुए हैं। अब हमारे पास महामारी को लेकर बेहतर समझ है, जिसने इसके खिलाफ हमारी लड़ाई को मजबूत किया है। सबसे महत्वपूर्ण, हमारे पास वैक्सीन है, जो जीवन को बचाने और महामारी को हराने के लिए बेहद जरूरी है। महामारी के हमले के एक साल के भीतर वैक्सीन का बनना इंसानों के दृढ़ संकल्प और तप की ताकत को दर्शाता है। भारत को अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है, जिन्होंने कोविड-19 टीके बनाने पर काम किया।

इस मंच के माध्यम से, मैं एक बार फिर हमारे फर्स्ट रिस्पॉन्डर्स, फ्रंटलाइन हेल्थकेयर वर्कर्स, डॉक्टर्स, नर्सेस और वॉलंटियर्स को सैल्यूट करना चाहता हूँ, जो नि:स्वार्थ भाव से रोजाना जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए अपना जीवन जोखिम में डालते हैं। उन लोगों के प्रति मैं संवेदना व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खोया है। मैं उनके शोक में शामिल हूँ।

मित्रों,
भगवान बुद्ध के जीवन का अध्ययन करते समय, उसमें चार स्थलों का उल्लेख मिलता है। इन चारों स्थलों ने भगवान बुद्ध का मानवीय पीड़ा से

सामना कराया था। साथ ही, उनके भीतर मानव की पीड़ा को दूर करने के लिए अपने जीवन को समर्पित करने की इच्छा भी जगाई थी।
भगवान बुद्ध ने हमें 'भवतु सब मंगलम', आशीर्वाद, करुणा और सभी के कल्याण की शिक्षा दी। पिछले साल में, हमने कई व्यक्तियों और संगठनों को इस मुश्किल वक्त का मुकाबला करने के लिए आगे आते और तकलीफ को कम करने के लिए हर संभव प्रयास करते देखा है।

मैंने भी पूरे विश्व से बौद्ध संगठनों, बुद्ध धर्म के अनुयायियों की ओर से उपकरणों और सामग्रियों के रूप में किए गए उदार योगदान को जाना है। जनसंख्या और भौगोलिक विस्तार, दोनों ही संदर्भ में कार्य का पैमाना बहुत व्यापक है। मनुष्यों की उदारता और सहयोग की प्रबलता ने मनुष्यता को विनम्र बनाया है। ये सारे काम भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के अनुरूप हैं। यह सर्वोच्च मंत्र अप्प दीपो भव: को प्रकट करता है।

मित्रों,
कोविड-19 निश्चित तौर पर हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है। जब हमने इससे लड़ने के लिए सारे संभव प्रयास किए हैं, तब हमें मानवता के सामने मौजूद दूसरी चुनौतियों को बिल्कुल भी नहीं भूलना चाहिए। सबसे प्रमुख चुनौतियों में से एक जलवायु परिवर्तन की चुनौती है। वर्तमान की लापरवाह जीवन शैली ने आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरा पैदा कर दिया है। मौसम का रुझान बदल रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। नदियां और जंगल खतरे में हैं। हम अपनी धरती को जख्मी नहीं रहने दे सकते हैं। भगवान बुद्ध का ऐसी जीवन शैली पर जोर था, जिसमें प्रकृति मां का सम्मान सबसे ऊपर है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि भारत उन कुछ बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है, जो अपने पेरिस लक्ष्यों को पाने के रास्ते पर है। हमारे लिए, सतत जीवन, सिर्फ सही शब्दावलियां नहीं हैं, बल्कि यह सही कार्य करने के बारे में है।

मित्रों, गौतम बुद्ध का जीवन शांति, सद्भाव और सह-अस्तित्व पर आधारित था। आज भी, ऐसी शक्तियां मौजूद हैं, जिनका अस्तित्व घृणा, आतंक और मूर्खतापूर्ण हिंसा को फैलाने पर टिका हुआ है। ऐसी शक्तियां उदार लोकतांत्रिक सिद्धांतों में भरोसा नहीं करती हैं। आज वक्त की मांग है कि मनुष्यता में भरोसा रखने वाले सभी लोग एक साथ आएं और आतंकवाद व कट्टरपंथ को हराएं। उसके लिए भगवान बुद्ध का दिखाया मार्ग हमेशा ही प्रासंगिक है। भगवान बुद्ध की शिक्षाएं और सामाजिक न्याय को दिया गया महत्व पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरोने की शक्ति बन सकता है। उन्होंने उचित ही कहा था - नत्ती संति परण सुखं: शांति से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

मित्रों, भगवान बुद्ध पूरे ब्रह्मांड के लिए प्रकाश पुंज थे। हम सभी ने समय-समय पर उनसे प्रेरणा ली और करुणा, सार्वभौमिक जिम्मेदारी और भलाई के रास्ते को चुना। महात्मा गांधी ने गौतम बुद्ध के बारे में ठीक ही कहा था, बुद्ध ने हमें आडंबर छोड़ने और अंत में सत्य व प्रेम की विजय पर भरोसा करना करना सिखाया है।आज बुद्ध पूर्णिमा पर, आइए हम भगवान बुद्ध के आदर्शों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को एक बार फिर से दोहराएं।

धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस और आषाढ़ पूर्णिमा के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री का संदेश
24 जुलाई 2021

नमो बुद्धाय!
आज हम गुरु-पूर्णिमा भी मनाते हैं, और आज के ही दिन भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद अपना पहला ज्ञान संसार को दिया था। हमारे यहाँ कहा गया है, जहां ज्ञान है वहीं पूर्णता है, वहीं पूर्णिमा है। और जब उपदेश करने वाले स्वयं बुद्ध हों, तो स्वाभाविक है कि ये ज्ञान संसार के कल्याण का पर्याय बन जाता है। त्याग और तितिक्षा से तपे बुद्ध जब बोलते हैं तो केवल शब्द ही नहीं निकलते,बल्कि धम्मचक्र का प्रवर्तन होता है। इसीलिए, तब उन्होंने केवल पाँच शिष्यों को उपदेश दिया था, लेकिन आज पूरी दुनिया में उन शब्दों के अनुयायी हैं, बुद्ध में आस्था रखने वाले लोग हैं।

साथियों,
सारनाथ में भगवान बुद्ध ने पूरे जीवन का, पूरे ज्ञान का सूत्र हमें बताया था। उन्होंने दुःख के बारे में बताया, दुःख के कारण के बारे में बताया, ये आश्वासन दिया कि दुःखों से जीता जा सकता है, और इस जीत का रास्ता भी बताया। भगवान बुद्ध ने हमें जीवन के लिए अष्टांग सूत्र, आठ मंत्र दिये।

सम्मादिट्ठी, सम्मा-संकप्पो, सम्मावाचा, सम्मा-कम्मन्तो, सम्मा-आजीवो, सम्मा-वायामो, सम्मासति, और सम्मा-समाधि।

यानी कि, सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक मन, सम्यक समाधि यानी मन की एकाग्रता। मन, वाणी और संकल्प में, हमारे कर्मों और प्रयासों में अगर ये संतुलन है तो हम दुःखों से निकलकर प्रगति और सुख को हासिल कर सकते हैं। यही संतुलन हमें अच्छे समय में हमें लोककल्याण की प्रेरणा देता है, और मुश्किल में धैर्य रखने की ताकत देता है।

साथियों,

आज कोरोना महामारी के रूप में मानवता के सामने वैसा ही संकट है जब भगवान बुद्ध हमारे लिए और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। बुद्ध के मार्ग पर चलकर ही बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना हम कैसे कर सकते हैं,
भारत ने ये करके दिखाया है। बुद्ध के सम्यक विचार को लेकर आज दुनिया के देश भी एक दूसरे का हाथ थाम रहे हैं, एक दूसरे की ताकत बन रहे हैं। इस दिशा में 'इंटरनेशनल बुद्धिष्ट कनफेडरेशन' का 'केयर विथ प्रेयर इनिशिएटिव' ये भी बहुत प्रशंसनीय है।

साथियों,
धम्मपद कहता है-

न ही वेरेन वेरानि,
सम्मन्तीध कुदाचनम्।

अवेरेन च सम्मन्ति,
एस धम्मो सनन्ततो॥

अर्थात, वैर से वैर शांत नहीं होता। बल्कि वैर अवैर से, बड़े मन से, प्रेम से शांत होता है। त्रासदी के समय में दुनिया ने प्रेम की, सौहार्द की इस शक्ति को महसूस किया है। बुद्ध का ये ज्ञान, मानवता का ये अनुभव जैसे जैसे समृद्ध होगा, विश्व सफलता और समृद्धि की नई ऊंचाइयों को छूएगा।

इसी कामना के साथ एक बार फिर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई। आप स्वस्थ रहें और मानवता की सेवा करते रहें!

धन्यवाद।

उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में महापरिनिर्वाण मंदिर में अभिधम्म दिवस पर प्रधानमंत्री का संबोधन, 20 अक्टूबर 2021

नमो बुद्धाय!

इस पवित्र मंगल कार्यक्रम में उपस्थित उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्रीमान योगी आदित्यनाथ जी, कैबिनेट में मेरे सहयोगी श्री जी किशन रेड्डी जी, श्री किरण रिजिजू जी, श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी, श्रीलंका से कुशीनगर पधारे, श्रीलंका सरकार में कैबिनेट मंत्री श्रीमान नमल राजपक्षा जी, श्रीलंका से आए अति पूजनीय, हमारे अन्य अतिथिगण, म्यांमार, वियतनाम, कंबोडिया, थाइलैंड, लाओ PDR, भूटान और दक्षिण कोरिया के भारत में एक्सीलेंसी एंबेसेडर्स, श्रीलंका, मंगोलिया, जापान, सिंगापुर, नेपाल और अन्य देशों के वरिष्ठ राजनयिक, सभी सम्मानित भिक्षुगण, और भगवान बुद्ध के सभी अनुयायी साथियों!

आश्विन महीने की पूर्णिमा का ये पवित्र दिन, कुशीनगर की पवित्र भूमि, और अपने शरीर-अंशों- रेलिक्स, के रूप में भगवान बुद्ध की साक्षात् उपस्थिति! भगवान बुद्ध की कृपा से आज के दिन कई अलौकिक संगत, कई अलौकिक संयोग एक साथ प्रकट हो रहे हैं। अभी यहाँ आने से पहले मुझे कुशीनगर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लोकार्पण का सौभाग्य मिला है। कुशीनगर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के जरिए पूरी दुनिया से करोड़ों बुद्ध अनुयायियों को यहाँ आने का अवसर मिलेगा, उनकी यात्रा आसान होगी। इस इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर श्रीलंका से पहुंची पहली फ्लाइट से अति-पूजनीय महासंघ, सम्मानित भिक्षुओं, हमारे साथियों ने, कुशीनगर में पदार्पण किया है। आप सभी की उपस्थिति भारत और श्रीलंका की हजारों साल पुरानी आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत की प्रतीक है।

साथियों,
हम सभी जानते हैं कि श्रीलंका में बौद्ध धर्म का संदेश, सबसे पहले भारत से सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा ले कर गए थे। माना जाता है कि आज के ही दिन 'अर्हत महिंदा' ने वापस आकर अपने पिता को बताया था कि श्रीलंका ने बुद्ध का संदेश कितनी ऊर्जा से अंगीकार किया है। इस समाचार ने ये विश्वास बढ़ाया था, कि बुद्ध का संदेश पूरे विश्व के लिए है, बुद्ध का धम्म मानवता के लिए है। इसलिए, आज का ये दिन हम सभी देशों के सदियों पुराने सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊर्जा देने का भी दिन है। मैं आप सभी को बधाई देता हूँ कि आप आज भगवान बुद्ध के महा-परिनिर्वाण स्थल पर उनके सामने उपस्थित हैं। मैं श्रीलंका और दूसरे सभी देशों से आए हमारे सम्मानित अतिथिगणों का भी हार्दिक स्वागत करता हूँ। हमारे जो अतिपूजनीय महासंघ, हमें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हैं, मैं उन्हें भी आदरपूर्वक नमन करता हूँ। आपने हम सबको

भगवान बुद्ध के अवशेष स्वरूप- रेलिक्स के दर्शन का सौभाग्य दिया है। यहां कुशीनगर के इस कार्यक्रम के बाद आप मेरे संसदीय क्षेत्र वाराणसी भी जा रहे हैं। आपकी पवित्र चरण रज, वहां भी पड़ेगी, वहां भी सौभाग्य लेकर आएगी।

साथियों, मैं आज International Buddhist Confederation के सभी सदस्यों को भी बधाई देता हूँ। आप जिस तरह आधुनिक विश्व में भगवान बुद्ध के सन्देश को विस्तार दे रहे हैं, वह वाकई बहुत सराहनीय है। आज इस अवसर पर मैं अपने पुराने सहयोगी श्री शक्ति सिन्हा जी को भी याद कर रहा हूँ। International Buddhist confederation के डीजी के तौर पर कार्य कर रहे शक्ति सिन्हा जी का कुछ दिन पहले स्वर्गवास हुआ है। भगवान बुद्ध में उनकी आस्था, उनका समर्पण हम सबके लिए एक प्रेरणा है।

साथियों, आप सभी जानते हैं, आज एक और महत्वपूर्ण अवसर है- भगवान बुद्ध के तुषिता से वापस धरती पर आने का! इसीलिए, आश्विन पूर्णिमा को आज हमारे भिक्षुगण अपने तीन महीने का 'वर्षावास' भी पूरा करते हैं। आज मुझे भी वर्षावास के उपरांत संघ भिक्षुओं को 'चीवर दान' का सौभाग्य मिला है। भगवान बुद्ध का ये बोध अद्भुत है, जिसने ऐसी परम्पराओं को जन्म दिया ! बरसात के महीनों में हमारी प्रकृति, हमारे आस पास के पेड़-पौधे, नया जीवन ले रहे होते हैं। जीव-मात्र के प्रति अहिंसा का संकल्प और पौधों में भी परमात्मा देखने का भाव, बुद्ध का ये संदेश इतना जीवंत है कि आज भी हमारे भिक्षु उसे वैसे ही जी रहे हैं। जो साधक हमेशा क्रियाशील रहते हैं, सदैव गतिशील रहते हैं, वो इन तीन महीनों में ठहर जाते हैं, ताकि कहीं कोई अंकुरित होता हुआ कोई बीज कुचल न जाए, निखरती हुई प्रकृति में अवरोध न आ जाए! ये वर्षावास न केवल बाहर की प्रकृति को प्रस्फुटित करता है, बल्कि हमारे हमारे अंदर की प्रकृति को भी संशोधित करने का अवसर देता है।

साथियों,

> धम्म का निर्देश है- यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं सुगन्धकं। एवं सुभासिता वाचा, सफलाहोति कुब्बतो॥

अर्थात्, अच्छी वाणी और अच्छे विचारों का अगर उतनी ही निष्ठा से आचरण भी किया जाए, तो उसका परिणाम वैसा ही होता है जैसा सुगंध के साथ फूल ! क्योंकि बिना आचरण के अच्छी से अच्छी बात, बिना सुगंध के फूल की तरह ही होती है। दुनिया में जहां जहां भी बुद्ध के विचारों को सही मायने में आत्मसात किया गया है, वहाँ कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी प्रगति के रास्ते बने हैं। बुद्ध इसीलिए ही वैश्विक हैं, क्योंकि बुद्ध अपने भीतर से शुरुआत करने के लिए कहते हैं।

भगवान बुद्ध का बुद्धत्व है- sense of ultimate responsibility.

अर्थात्, हमारे आसपास, हमारे ब्रह्मांड में जो कुछ भी हो रहा है, हम उसे खुद से जोड़कर देखते हैं, उसकी ज़िम्मेदारी खुद लेते हैं। जो घटित हो रहा है उसमें अगर हम अपना सकारात्मक प्रयास जोड़ेंगे, तो हम सृजन को गति देंगे। आज जब दुनिया पर्यावरण संरक्षण की बात करती है, क्लाइमेट चेंज की चिंता जाहिर करती है, तो उसके साथ अनेक सवाल उठ खड़े होते हैं। लेकिन, अगर हम बुद्ध के सन्देश को अपना लेते हैं तो 'किसको करना है', इसकी जगह 'क्या करना है', इसका मार्ग अपने आप दिखने लगता है।

साथियों,

हजारों साल पहले भगवान बुद्ध जब इस धरती पर थे तो आज जैसी व्यवस्थाएं नहीं थीं लेकिन फिर भी बुद्ध विश्व के करोड़ों करोड़ लोगों तक पहुँच गए, उनके अन्तर्मन से जुड़ गए। मैंने अलग-अलग देशों में, बौद्ध धर्म से जुड़े मंदिरों, विहारों में ये साक्षात अनुभव किया है। मैंने देखा है, कैंडी से क्योटो तक, हनोई से हंबनटोटा तक, भगवान बुद्ध अपने विचारों के जरिए, मठों, अवशेषों और संस्कृति के जरिए, हर जगह हैं। ये मेरा सौभाग्य है कि मैं कैंडी में श्री डलाडा मैलागोवा वहां दर्शन करने पहुंचा था गया हूँ, सिंगापुर में उनके दंत-अवशेष के मैंने दर्शन किए हैं, और क्योटो में किन्का-कुजी जाने का अवसर भी मुझे मिला है। इसी तरह, साउथ ईस्ट कंट्रीज़ के भिक्षुओं का आशीर्वाद भी मुझे मिलता रहा है। अलग अलग देश, अलग अलग परिवेश, लेकिन मानवता की आत्मा में बसे बुद्ध सबको जोड़ रहे हैं। भारत ने भगवान बुद्ध की इस सीख को अपनी विकास यात्रा का हिस्सा बनाया है, उसे अंगीकार किया है। हमने ज्ञान को, महान संदेशों को, महान आत्माओं के विचारों को बांधने में कभी भरोसा नहीं किया। उसको बांध कर रखना यह हमारी सोच नहीं है, हमने जो कुछ भी हमारा था, उसे मानवता के लिए 'ममभाव' से अर्पित किया है। इसीलिए, अहिंसा, दया, करुणा जैसे मानवीय मूल्य आज भी उतनी ही सहजता से भारत के अन्तर्मन में रचे बसे हैं। इसीलिए, बुद्ध आज भी भारत के संविधान की प्रेरणा हैं, बुद्ध का धम्म-चक्र भारत के तिरंगे पर विराजमान होकर हमें गति दे रहा है। आज भी भारत की संसद में कोई जाता है तो इस मंत्र पर नजर जरूर पड़ती है- 'धर्म चक्र प्रवर्तनाय'!

साथियों,
आम तौर पर ये भी धारणा रहती है, कि बौद्ध धर्म का प्रभाव, भारत में मुख्य रूप से पूरब में ही ज्यादा रहा। लेकिन इतिहास को बारीकी से देखें तो हम पाते हैं कि बुद्ध ने जितना पूरब को प्रभावित किया है, उतना ही पश्चिम और दक्षिण पर भी उनका प्रभाव है। गुजरात का वडनगर, जो मेरा जन्मस्थान भी है, वो अतीत में बौद्ध धर्म से जुड़ा एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अभी तक हम ह्वेन सांग के उद्धरणों के जरिए ही इस इतिहास को जानते थे, लेकिन अब तो वडनगर में पुरातात्विक मठ और स्तूप भी excavation में मिल चुके हैं मिल चुके हैं। गुजरात का ये अतीत इस बात का प्रमाण है कि बुद्ध दिशाओं और सीमाओं से परे थे। गुजरात की धरती पर जन्मे महात्मा गांधी तो बुद्ध के सत्य और अहिंसा के संदेशों के आधुनिक संवाहक रहे हैं।

साथियों, आज भारत अपनी आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस अमृत महोत्सव में हम अपने भविष्य के लिए, मानवता के भविष्य के लिए संकल्प ले रहे हैं। हमारे इन अमृत संकल्पों के केंद्र में भगवान बुद्ध का वो सन्देश है जो कहता है-

अप्पमादो अमतपदं,
पमादो मच्चुनो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति,
ये पमत्ता यथा मता।

यानी, प्रमाद न करना अमृत पद है, और प्रमाद ही मृत्यु है। इसलिए, आज भारत नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है, पूरे विश्व को साथ लेकर आगे चल रहा है। भगवान बुद्ध ने कहा था- अप्प दीपो भव। यानी, अपने दीपक स्वयं बनो। जब व्यक्ति स्वयं प्रकाशित होता है तभी वह संसार को भी प्रकाश देता है। यही भारत के लिए आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा है। यही वो प्रेरणा है जो हमें दुनिया के हर देश की प्रगति में सहभागी बनने की ताकत देती है। अपने इसी विचार को आज भारत 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ आगे बढ़ा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान बुद्ध के इन विचारों पर चलते हुये हम सब एक साथ मिलकर मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

वेसाक उत्सव पर प्रधानमंत्री का वीडियो संदेश
7 मई 2020

आप सभी को और विश्वभर में फैले भगवान बुद्ध के अनुयायियों को बुद्ध पूर्णिमा की, वेसाक उत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनाएं !!!

ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे पहले भी इस पवित्र दिन पर, आपसे मिलने, आप सभी से आशीर्वाद लेने का अवसर मिलता रहा है। साल 2015 और 2018 में दिल्ली में, और साल 2017 में कोलंबो में मुझे इस कार्यक्रम से जुड़ने का, आपके बीच आने का मौका मिला था। हां, इस बार परिस्थितियां कुछ और हैं, इसलिए आमने-सामने आकर आपसे मुलाकात नहीं हो पा रही।

साथियों,
भगवान बुद्ध का वचन है - मनो पुब्बं-गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया, यानि, धम्म मन से ही होता है, मन ही प्रधान है, सारी प्रवृत्तियों का अगुवा है। इसलिए, आपका और मेरा, मन का जो जुड़ाव है, उसके कारण सशरीर उपस्थिति की कमी उतनी महसूस नहीं होती। आपके बीच आना बहुत खुशी की बात होती, लेकिन अभी हालात ऐसे नहीं हैं ।
इसलिए, दूर से ही, टेक्नोलॉजी के माध्यम से आपने मुझे अपनी बात रखने का अवसर दिया, इससे बढ़कर के संतोष और क्या हो सकता है इसका मुझे संतोष है।

साथियों,
लॉकडाउन की इन विकट परिस्थितियों में भी वर्चुअल वेसाक बुद्ध पूर्णिमा दिवस समारोह के इस आयोजन के लिए अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ प्रशंसा का पात्र है। आपके इस अभिनव प्रयास के कारण ही इस आयोजन में विश्व भर के लाखों अनुयायी एक दूसरे से जुड़ रहे हैं। लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर के अलावा श्रीलंका के श्री अनुराधापुर स्तूप और वास्कडुवा मंदिर में हो रहे समारोहों का इस तरह एकीकरण, कितनी अद्भुत कल्पना है, कितना सुन्दर दृश्य है । हर जगह हो रहे पूजा कार्यक्रमों का ऑनलाइन प्रसारण होना अपने आप में अद्भुत अनुभव है।
आपने इस समारोह को कोरोना वैश्विक महामारी से मुकाबला कर रहे पूरी दुनिया के हेल्थ वर्कर्स और दूसरे सेवा-कर्मियों के लिए प्रार्थना सप्ताह के रुप में मनाने का संकल्प लिया है। करुणा से भरी आपकी इस पहल के लिए मैं आपकी सराहना करता हूँ।
मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसे ही संगठित प्रयासों से हम मानवता को इस मुश्किल चुनौती से बाहर निकाल पाएंगे, लोगों की परेशानियों को कम कर पाएंगे।

साथियों,
प्रत्येक जीवन की मुश्किल को दूर करने के संदेश और संकल्प ने भारत की सभ्यता को, संस्कृति को हमेशा दिशा दिखाई है। भगवान बुद्ध ने भारत की इस संस्कृति और इस महान परम्परा को बहुत समृद्ध किया है । वो अपना दीपक स्वयं बनें और अपनी जीवन यात्रा से, दूसरों के जीवन को भी प्रकाशित करते रहे। और इसलिए, बुद्ध किसी एक परिस्थिति तक सीमित नहीं हैं, किसी एक प्रसंग तक सीमित नहीं हैं। सिद्धार्थ के जन्म, सिद्धार्थ के गौतम होने से पहले और उसके बाद, इतनी शताब्दियों में समय का चक्र अनेक स्थितियों, परिस्थितियों को समेटते हुए निरंतर चल रहा है।
समय बदला, स्थिति बदली, समाज की व्यवस्थाएं बदलीं, लेकिन भगवान बुद्ध का संदेश हमारे जीवन में निरंतर प्रवाहमान रहा है। ये सिर्फ इसलिए संभव हो पाया है क्योंकि, बुद्ध सिर्फ एक नाम नहीं है बल्कि एक पवित्र विचार भी है। एक ऐसा विचार जो

प्रत्येक मानव के हृदय में धड़कता है, मानवता का मार्गदर्शन करता है।

बुद्ध, त्याग और तपस्या की सीमा है। बुद्ध, सेवा और समर्पण का पर्याय है। बुद्ध, मज़बूत इच्छाशक्ति से सामाजिक परिवर्तन की पराकाष्ठा है। बुद्ध, वो है जो स्वयं को तपाकर, स्वयं को खपाकर, खुद को न्योछावर करके, पूरी दुनिया में आनंद फैलाने के लिए समर्पित है।

और हम सभी का सौभाग्य देखिए, इस समय हम अपने आसपास, ऐसे अनेकों लोगों को देख रहे हैं, जो दूसरों की सेवा के लिए, किसी मरीज के इलाज के लिए, किसी गरीब को भोजन कराने के लिए, किसी अस्पताल में सफाई के लिए, किसी सड़क पर कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए, चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं।

भारत में, भारत के बाहर, ऐसा प्रत्येक व्यक्ति अभिनंदन का पात्र है, विश्व के हर कोने में ऐसा प्रत्येक व्यक्ति अभिनन्दन का पत्र है, नमन का पात्र है।

साथियों, ऐसे समय में जब दुनिया में उथल-पुथल है, कई बार दुःख-निराशा-हताशा का भाव बहुत ज्यादा दिखता है, तब भगवान बुद्ध की सीख और भी प्रासंगिक हो जाती है। वो कहते थे कि मानव को निरंतर ये प्रयास करना चाहिए कि वो कठिन स्थितियों पर विजय प्राप्त करे, उनसे बाहर निकले। थक कर रुक जाना, कोई विकल्प नहीं होता। आज हम सब भी एक कठिन परिस्थिति से निकलने के लिए, निरंतर जुटे हुए हैं, साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

भगवान बुद्ध के बताए 4 सत्य यानि दया, करुणा, सुख-दुख के प्रति समभाव और जो जैसा है उसको उसी रूप में स्वीकारना, ये सत्य निरंतर भारत भूमि की प्रेरणा बने हुए हैं। आज आप भी देख रहे हैं कि भारत निस्वार्थ भाव से, बिना किसी भेद के, अपने यहां भी और पूरे विश्व में, कहीं भी संकट में घिरे व्यक्ति के साथ पूरी मज़बूती से खड़ा है।

लाभ-हानि, समर्थ-असमर्थ से अलग, हमारे लिए संकट की ये घड़ी सहायता करने की है, जितना संभव हो सके मदद का हाथ आगे बढ़ाने की है। यही कारण है कि विश्व के अनेक देशों ने भारत को इस मुश्किल समय में याद किया और भारत ने भी हर ज़रूरतमंद तक पहुंचने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भारत आज प्रत्येक भारतवासी का जीवन बचाने के लिए हर संभव प्रयास तो कर ही रहा है, अपने वैश्विक दायित्वों का भी उतनी ही गंभीरता से पालन कर रहा है।

साथियों, भगवान बुद्ध का एक एक वचन, एक एक उपदेश मानवता की सेवा में भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। बुद्ध भारत के बोध और भारत के आत्मबोध, दोनों का प्रतीक हैं। इसी आत्मबोध के साथ, भारत निरंतर पूरी मानवता के लिए, पूरे विश्व के हित में काम कर रहा है और करता रहेगा। भारत की प्रगति, हमेशा, विश्व की प्रगति में सहायक होगी।

साथियों, हमारी सफलता के पैमाने और लक्ष्य दोनों, समय के साथ बदलते रहते हैं । लेकिन जो बात हमें हमेशा ध्यान रखनी है, वो ये कि हमारा काम निरंतर सेवाभाव से ही होना चाहिए। जब दूसरे के लिए करुणा हो, संवेदना हो और सेवा का भाव हो, तो ये भावनाएं हमें इतना मजबूत कर देती हैं कि बड़ी से बड़ी चुनौती से आप पार पा सकते हैं।

सुप्प बुद्धं पबुज्झन्ति,
सदा गोतम सावका

यानि जो दिन-रात, हर समय मानवता की सेवा में जुटे रहते हैं, वही बुद्ध के सच्चे अनुयायी हैं। यही भाव हमारे जीवन को प्रकाशमान करता रहे, गतिमान करता रहे। इसी कामना के साथ,

आप सभी का बहुत-बहुत आभार। इस मुश्किल परिस्थिति में आप अपना, अपने परिवार का, जिस भी देश में आप हैं, वहां का ध्यान रखें, अपनी रक्षा करें और यथा-संभव दूसरों की भी मदद करें। सबका स्वास्थ्य उत्तम रहे, इसी मंगल-कामना के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ। धन्यवाद!

वेसाक उत्सव पर प्रधानमंत्री का वीडियो संदेश
7 मई 2020

आदरणीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी, अन्य विशिष्ट अतिथि। आषाढ़ पूर्णिमा के अवसर पर अभिवादन के साथ अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ। इसे गुरु पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। यह हमारे गुरुओं को याद करने का दिन है, जिन्होंने हमें शिक्षा दी है। इसी भावना के साथ हम भगवान बुद्ध को श्रद्धांजलि देते हैं।

मुझे खुशी है कि मंगोलियाई कंजूर की प्रतियां मंगोलिया सरकार को प्रस्तुत की जा रही हैं। मंगोलिया में मंगोलियाई कंजूर का बहुत सम्मान किया जाता है। ज्यादातर मठों में इसकी एक प्रति है।

दोस्तों, भगवान बुद्ध का अष्ट मार्ग कई समाजों और राष्ट्रों को उनकी बेहतरी की दिशा दिखाता है। इसमें करुणा और दया के महत्व की अहमियत बताई गई है। भगवान बुद्ध के उपदेश हमारे विचार और क्रिया दोनों में सादगी के महत्व का गुणगान करते हैं। बौद्ध धर्म हमें सम्मान करना सिखाता है। लोगों के लिए सम्मान।गरीबों का सम्मान करें।

महिलाओं का सम्मान। शांति और अहिंसा का सम्मान। इसलिए, बौद्ध धर्म के उपदेश एक चिरस्थायी ग्रह का साधन हैं।

दोस्तों, भगवान बुद्ध ने सारनाथ में अपने पहले उपदेश में और उसके बाद के उपदेशों में दो चीजों - आशा और उद्देश्य पर बातें की। उन्होंने इन दोनों के बीच गहरा संबंध पाया। आशा से उद्देश्य की भावना आती है। भगवान बुद्ध के लिए यह मानवीय पीड़ा को दूर करने वाला था। हमें आज इस अवसर पर जागना होगा और लोगों के बीच आशा को बढ़ाने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं, वो करें।

दोस्तों, मैं 21वीं सदी को लेकर बहुत आशान्वित हूँ। यह उम्मीद मेरे युवा मित्रों- हमारी युवा पीढ़ी से मिलती है। यदि आप इस बारे में एक बेहतरीन उदाहरण देखना चाहते हैं कि आशा, नवाचार और करुणा कैसे दुख को दूर कर सकती हैं तो आपको हमारे स्टार्ट-अप सेक्टर पर नजर डालनी चाहिए। उज्ज्वल युवा दिमाग वैश्विक समस्याओं का समाधान ढूंढ रहे हैं। भारत का स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र दुनिया के बड़े स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक है।

मैं अपने युवा मित्रों से भी आग्रह करूंगा कि वे भगवान बुद्ध के विचारों से जुड़े रहें। भगवान बुद्ध के विचार उन्हें प्रेरित करेंगे और आगे का रास्ता भी दिखाएंगे। कभी-कभी वे आपको शांत भी करेंगे और आपको खुश करेंगे। दरअसल, भगवान बुद्ध का अप्प: दीपो भव: का उपदेश स्वयं आपका मार्गदर्शक है और यह प्रबंधन का एक अद्भुत पाठ है।

दोस्तों, आज दुनिया असाधारण चुनौतियों से जूझ रही है। इन चुनौतियों के स्थायी समाधान भगवान बुद्ध के आदर्शों से मिल सकते हैं। भगवान बुद्ध के आदर्श अतीत में प्रासंगिक थे। वे वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं। और, भविष्य में भी वे प्रासंगिक बने रहेंगे।

मित्रों, यह समय की मांग है कि अधिक से अधिक लोगों को बौद्ध धरोहर स्थलों से जोड़ा जाए। हमारे भारत में बौद्ध धर्म से जुड़ी ऐसी कई जगहें हैं। आप जानते हैं कि लोग मेरे संसदीय क्षेत्र वाराणसी को और किस रूप में जानते हैं? सारनाथ के घर के रूप में। हम बौद्ध स्थलों की कनेक्टिविटी पर ध्यान देना

चाहते हैं। कुछ दिनों पहले भारतीय मंत्रिमंडल ने घोषणा की थी कि कुशीनगर हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाया जाएगा। इससे बहुत सारे लोग, तीर्थयात्री और पर्यटक आएंगे। यह कई लोगों के लिए आर्थिक अवसर भी पैदा करेगा।

भारत आपका इंतजार कर रहा है!

दोस्तों, एक बार फिर से आप सभी को मेरा अभिवादन। भगवान बुद्ध के विचार और अधिक उज्ज्वलता, एकजुटता और भाईचारे को बढ़ाए। उनका आशीर्वाद हमें अच्छा करने के लिए प्रेरित करे।

धन्यवाद। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

भारत-जापान संवाद सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संदेश
21 दिसंबर 2020

प्रिय मित्रों,

छठे भारत-जापान संवाद सम्मेलन को संबोधित करना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है।

हमने पांच साल पहले जापान के पूर्व प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के साथ सम्मेलनों की यह श्रृंखला शुरू की थी। तब से, संवाद की यह यात्रा नई दिल्ली से टोक्यो, यंगून से उलानबटार तक होकर गुजरी है। यह यात्रा वार्ता और बहस को प्रोत्साहन देने, लोकतंत्र, मानवतावाद, अहिंसा, स्वतंत्रता और सहिष्णुता के साझा मूल्यों पर प्रकाश डालने और आध्यात्मिक तथा विद्वततापूर्ण आदान-प्रदान की हमारी प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ाने के अपने मूल उद्देश्यों के लिए हमेशा उचित रही है। मैं 'संवाद' को निरंतर समर्थन प्रदान करने के लिए जापान सरकार को धन्यवाद देता हूँ।

मित्रों,
इस मंच ने विशेष रूप से युवाओं में भगवान बुद्ध

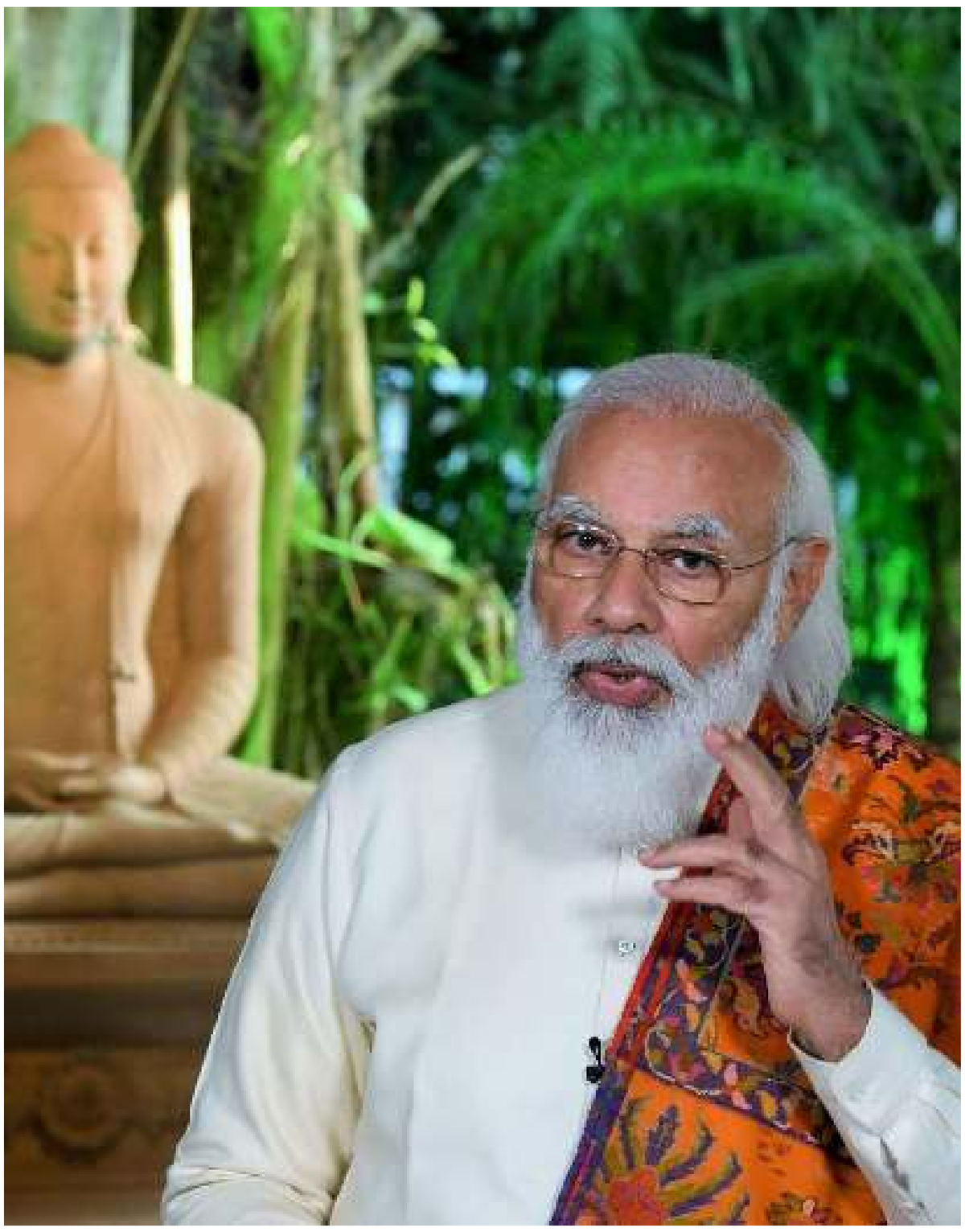

के विचारों और आदर्शों को बढ़ावा देने की दिशा में बड़ा काम किया है। ऐतिहासिक रूप से गौतम बुद्ध के संदेशों का प्रकाश भारत से दुनिया के अनेक हिस्सों तक फैला है। यह प्रकाश एक स्थान पर स्थिर नहीं रहा है। जिस नये स्थान पर यह प्रकाश पहुंचा है वहां भी बौद्ध धर्म के विचारों ने सदियों से आगे बढ़ना जारी रखा है। इस कारण बौद्ध धर्म के साहित्य और दर्शन का यह बहुमूल्य खजाना अलग-अलग देशों और भाषाओं में अनेक मठों में पाया जाता है।

लेखन पूरी मानवता का खजाना होता है। मैं आज ऐसे सभी पारंपरिक बौद्ध साहित्य और धर्म ग्रंथों के लिए पुस्तकालयों के सृजन का प्रस्ताव करना चाहता हूँ। हम भारत में इस तरह की सुविधा का निर्माण करने में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे और इसके लिए उचित संसाधन भी उपलब्ध कराएंगे। यह पुस्तकालय विभिन्न देशों से इस प्रकार के बौद्ध साहित्य की डिजिटल प्रतियों का संग्रह करेगा। इसका उद्देश्य ऐसे साहित्य का अनुवाद करना और इसे बौद्ध धर्म के सभी भिक्षुओं और विद्वानों को स्वतंत्र रूप से उपलब्ध कराना है। यह पुस्तकालय ऐसे साहित्य का भंडार मात्र ही नहीं होगा।

यह शोध और संवाद के लिए एक मंच तथा मनुष्यों के बीच, समाज के बीच तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच एक सच्चा 'संवाद' भी होगा। इसके शोध में यह जांच करना भी शामिल होगा कि बुद्ध के संदेश किस प्रकार समकालीन चुनौतियों के मुकाबले हमारे आधुनिक विश्व का मार्गदर्शन कर सकते हैं। इनमें गरीबी, जातिवाद, उग्रवाद, लिंग भेदभाव, जलवायु परिवर्तन और ऐसी कई अन्य चुनौतियां शामिल हैं।

मित्रों,
लगभग तीन सप्ताह पहले मैं सारनाथ गया था। सारनाथ वह जगह है जहाँ गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपना पहला उपदेश दिया था। सारनाथ से प्रकट हुआ यह ज्योति पुंज पूरी दुनिया में फैल गया और इसने करुणा, महानता और सबसे बढ़कर पूरी मानवता की भलाई के लिए मानव कल्याण को गले लगाया। इसने धीरे-धीरे शांतिपूर्वक विश्व इतिहास के मार्ग को ही परिवर्तित कर दिया। सारनाथ में ही भगवान बुद्ध

ने धम्म के अपने आदर्श के बारे में विस्तार से उपदेश दिया था। धम्म के केन्द्र में मानव और अन्य मनुष्यों के साथ उनका संबंध स्थित हैं। इस प्रकार अन्य मनुष्यों के जीवन में सकारात्मक शक्ति होना ही सबसे महत्वपूर्ण है। संवाद ऐसा होना चाहिए जो हमारे इस ग्रह में सकारात्मकता, एकता और करुणा की भावना का प्रसार करे और वह भी ऐसे समय में जब इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

मित्रों,
यह नए दशक का पहला संवाद है। यह मानव इतिहास के एक महत्वपूर्ण दौर में आयोजित किया जा रहा है। आज किये जाने वाले हमारे कार्य हमारे आने वाले समय का आकार और रास्ता तय करेंगे। यह दशक और उससे आगे का समय उन समाजों का होगा, जो सीखने और साथ-साथ नव परिवर्तन करने पर उचित ध्यान देंगे। यह उज्जवल युवा मस्तिष्कों को पोषित करने के बारे में भी है, जिससे आने वाले समय में मानवता के मूल्यों को बढ़ावा मिलेगा। शिक्षण ऐसा होनी चाहिए जिससे नवाचार को आगे बढ़ाया जा सके। कुल मिलाकर नवाचार मानव सशक्तिकरण का मुख्य आधार है।

समाज जो खुले दिमाग वाला लोकतांत्रिक और पारदर्शी है वही नवाचार के लिए अधिक उपयुक्त है। इसलिए प्रगतिरूपी प्रतिमान को बदलने का अब पहले की अपेक्षा बेहतर समय है। वैश्विक विकास की चर्चा कुछ लोगों के बीच ही नहीं की जा सकती है। इसके लिए दायरे का बड़ा होना जरूरी है। इसके लिए कार्य सूची भी व्यापक होनी चाहिए। प्रगति के स्वरूप को मानव केन्द्रित दृष्टिकोण का अनुसरण करना चाहिए और वह हमारे परिवेश के अनुरूप होना चाहिए।

मित्रों,

यमक वग्गो धम्मपद: में उचित रूप से वर्णन किया गया है-

न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो॥

शत्रुता से कभी शांति हासिल नहीं होगी। विगत में, मानवता ने सहयोग के बजाय टकराव का रास्ता अपनाया। साम्राज्यवाद से लेकर विश्व युद्ध तक, हथियारों की दौड़ से लेकर अंतरिक्ष की दौड़ तक, हमने संवाद किए लेकिन उनका उद्देश्य दूसरों को नीचे खींचना था। आइये, अब हम मिलकर ऊपर उठें। गौतम बुद्ध की शिक्षाओं से हमें शत्रुता को सशक्तता में बदलने की शक्ति मिलती है। उनकी शिक्षाएँ हमें बड़ा दिलवाला बनाती हैं। वे हमें विगत से सीखने और बेहतर भविष्य बनाने की दिशा में काम करने की शिक्षा देती हैं। यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे अच्छी सेवा है।

मित्रों,
'संवाद' का सार घनिष्ठता बनाए रखना है। 'संवाद' हमारे अंदर बेहतर समावेश करे, यह हमारे प्राचीन मूल्यों को आकर्षित करने और आने वाले समय के लिए अपने आपको तैयार करने का समय है। हमें मानवतावाद को अपनी नीतियों के केनद्र में रखना चाहिए। हमें अपने अस्तित्व के कैंद्रीय स्तंभ के रूप में प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व स्थापित करना चाहिए। स्वयं अपने साथ, अपने अन्य साथियों और प्रकृति के साथ 'संवाद' इस पथ पर हमारा मार्ग प्रकाशित कर सकता है। मैं ऐसे महतवपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन के लिए आयोजकों को बधाई देता हूँ और उनके विचार-विमर्श में सफलता की कामना करता हूँ।

नई दिल्ली में बुद्ध जयंती उत्सव के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री का संबोधन
30 अप्रैल 2018

मंच पर उपस्थित मंत्रिमंडल के मेरे सहयोगी डॉक्टर महेश शर्मा जी, श्रीमान किरण रिजुजू जी, International Buddhist Foundation के सेक्रेटरी जनरल डॉक्टर धममपिये जी, देशभर से आए सभी श्रद्धालुगण, देवियो और सज्जनों।

हमारे यहां मंत्र शक्ति की एक मान्यता है कि जब एक साथ, एक ही जगह हजारों मन-मस्तिष्क एक ही मंत्र का जाप कर रहे हों तो ऊर्जामंडल बनता है और हम सबने यहां उस ऊर्जामंडल का एहसास किया है। आंखें खुली हैं तो हम एक-दूसरे को देख रहे हैं लेकिन मस्तिष्क की तंत्रिकाओं के भीतर भगवान बुद्ध के नाम का जो उच्चारण प्रतिपल हो रहा है वो आप में, मुझ में, हम सभी में हम महसूस कर पाते हैं।

भगवान बुद्ध के प्रति जिस तरह का भाव और भक्ति हम सभी रखते हैं, शायद उसका बयां करने के लिए शब्द कम पड़ जाएंगे। जैसे लोग मंत्र से मुग्ध तो होते ही हैं, वैसे ही हम बुद्ध से भी मुग्ध होते हैं। मेरा सौभाग्य है कि आज बुद्ध पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर मुझे आप सभी के बीच आने का, सभी का; विशेष करके सभी धर्म गुरूओं का आशीर्वाद लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अभी हमारे महेश शर्मा जी और किरण रिजुजू जी बता रहे थे कि दूसरी बार मैं यहां आया। गत वर्ष भी आता लेकिन गत वर्ष मैं ऐसे ही एक समारोह

के लिए, बैशाख के लिए श्रीलंका के अंदर मुख्य मेहमान के तौर पर गया था। और श्रीलंका में मैंने बुद्ध पूर्णिमा वहां के लोगों के साथ, वहां की सरकार के साथ और विश्वभर से आए हुए बौद्ध धर्मगुरूओं के बीच में मनाने का मुझे सौभाग्य मिला था।

हम सब तो बहुत व्यस्त रहते हैं, अपनी-अपनी जिम्मेदारियों हैं। लेकिन इस व्यस्तता के बीच भी जीवन में कुछ ही क्षण हमें शायद भगवान बुद्ध का नाम लेकर धन्य हो जाते हैं। लेकिन यहां मैं जो धर्मगुरू देख रहा हूँ, भिक्षुकगण देख रहा हूँ, इनहोंने तो अपना पूरा जीवन बुद्ध के करूणा के संदेश को पहुंचाने के लिए आहुत कर दिया है। वे स्वयं बुद्ध के मार्ग पर चल पड़े हैं। और मैं आज इस अवसर पर विश्वभर में भगवान बुद्ध का संदेश पहुंचाने वाले उन सभी महा-मानवों का आदरपूर्वक प्रणाम करता हूँ, नमन करता हूँ।

आप सभी देश के अलग-अलग हिस्सों से यहां आए हैं, आपका भी मैं हृदयपूर्वक स्वागत करता हूँ। मुझे ये भी आज एक अवसर मिला कि जिन्होंने इस कार्य के लिए संस्थान हो, व्यक्ति हो, जिन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया- मुझे उनका भी सम्मान करने का अवसर मिला है। मैं उन सभी प्रयासों को, उनके इस योगदान को आदरपूर्वक अभिनंदन करता हूँ और भविष्य के लिए उन्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। विशेषकर सारनाथ के Central Institute of Higher Tibetan Studies और बौद्ध गया के ऑल इंडिया भिक्षुक संघ को मैं बैशाख सम्मान प्राप्त करने के लिए आदरपूर्वक बधाई देता हूँ।

साथियो पूरी धरती का ये भूभाग, हमारा भारत जिस अमूल्य धरोहर का वारिस है, वह अतुलनीय है। दुनिया के अन्य हिस्सों में विरासत की ऐसी समृद्धि देखने को शायद ही मिल पाती है।
गौतम बुद्ध का जन्म, उनकी शिक्षा, उनके महा-परिनिर्वाण पर सैंकड़ों वर्षों से बहुत कुछ कहा गया है, बहुत कुछ लिखा गया है, और ये आज की पीढ़ी का सौभाग्य ही है कि तमाम विपदाओं के बाद, कठिनाइयों के बावजूद उसमें से बहुत सी चीजें बची हुई है, सुरक्षित हैं।

आज हमें इस बात का गर्व है कि भारत की इस धरती से जितने भी विचार निकले, उन सभी विचारों में सर्वोच्च भाव सिर्फ और सिर्फ मानव का कल्याण, सृष्टि का कल्याण, यही central theme इस धरती से निकले सभी विचारों के केंद्र में रहा है। और हमें इस बात का गर्व है कि नए-नए विचारों के इस दौर में कभी भी दूसरे के अधिकारों या उसकी भावनाओं का कभी भी अतिक्रमण नहीं किया गया है। न अपने-पराये का भेद, न मेरी विचारधारा-तुम्हारी विचारधारा का भेद, न मेरे ईश्वर-तुम्हारे ईश्वर का भेद।

हमें गर्व है कि भारत से जो भी विचारधाराएं निकलीं, वो पूरी मानवजाति के हितों को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ती चली गईं। किसी से ये नहीं कहा, और कभी भी नहीं कहा कि तुम हमारे साथ आओगे, तभी तुम्हारा भला होगा; ऐसा कभी नहीं कहा। बुद्ध के विचारों ने न सिर्फ रास्तों के अंदर एक नवचेतना जगाई बल्कि आज भी एशिया के अनेक देशों के राष्ट्रीय चरित्र को बुद्ध के विचार, बुद्ध की परम्परा; येही तो परिभाषित कर रहे हैं। साथियो, ये हमारी इस धरती की विशेषता रही है और यही एक बड़ी वजह भी है कि हमारा देश; और ये बात हर हिन्दुस्तानी गर्व के साथ कह सकता है, सीना तान करके कह सकता है, दुनिया के साथ आंख में आंख मिला करके कह सकता है कि हमारी संस्कृति, हमारा इतिहास, हमारी परम्परा इस बात की गवाह है कि हिन्दुस्तान कभी भी आक्रान्ता नहीं रहा है। कभी भी उसने किसी दूसरे देश का अतिक्रमण नहीं किया है। हजारों वर्षों से हमारी संस्कृति मूलभूत चिंतन के कारण इस राह पर चल पड़ी है।

साथियों, सिद्धार्थ- सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध बनने की यात्रा, वे कथा, वो केवल निर्वाण प्राप्ति के पथ की कथा नहीं है। ये कथा है इस सत्य की, कि जो व्यक्ति भी अपने ज्ञान, धन, संपदा से दूसरों की वेदना और दुख दूर करने का प्रयास करता है, वह हर व्यक्ति सिद्धार्थ से बुद्ध की राह पर चल पड़ता है, चल सकता है, बुद्धत्व को प्राप्त कर सकता है।

बुद्ध पूर्णिमा में हमें करुणा और मैत्री का स्मरण हर पल होता है। एक ऐसे समय में जब हिंसा, आतंकवाद, जातिवाद, वंशवाद, इसकी कालिमा बुद्ध के संदेश को जैसे काले बादल की तरह ढकती दिख रही है तो करुणा और मैत्री की बात और अधिक relevant हो जाती है, और अधिक आवश्यक हो जाती है, और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। जीवित वो नहीं है जो ध्वंस, हिंसा और घृणा से अपने विरोधी पर हमला करे । जीवन तो उसी का है जो घृणा, हिंसा और अन्याय के तत्व को सार्थक मैत्री, करुणा से जीतकर विश्व के इस सबसे बड़ी विजय हासिल करे।

ये तथ्य है कि जिन्होंने क्रुद्ध मन को शांत बुद्ध के धयान से जीता, वही सफल भी हुआ, वही अमर भी हुआ। सत्य और करुणा का योग, और सत्य और करुणा का योग ही है, वही योग बुद्ध बनाता है, हमारे भीतर बुद्ध को पल्लवित करता है।

बुद्ध का अर्थ हिंसा के लिए प्रेरित मन को क्रुद्ध स्थिति से शुद्ध अंत:करण की स्थिति में आना-लाना, मनुष्य और मनुष्य के मध्य कोई समाज, उसकी जाति, वर्ण, भाषा के आधार पर भेद करे; ये संदेश न भारत का हो सकता है न ये संदेश बुद्ध का हो सकता है, इन इस धरती पर इस विचार के लिए जगह हो सकती है। यहां कोई, किसी भी जाति, वर्ण, वर्ग, आस्था का हो; उसे सदैव अपनापन, आत्मीयता के साथ सहज स्वीकारा गया है। यहूदी समाज हो, पारसी समाज हो; हजारो वर्ष से एक रूप-एक रस होकर, फिर जो सदैव हमारे रक्त, हमारे मानस, हमारे अस्थि का अविभाज्य अंग है, उनसे भेदभाव की कल्पना भी हमने कभी नहीं की। समता का भाव, समानता भाव अपने जीवन में जीना ही, बुद्ध को जीने का मतलब यही होगा। उसी समता, समरसता, समदृष्टि, और संघ भाव के कारण बुद्ध विश्वभर के सर्वाधिक स्वीकार्य महापुरुष हो गए। यह भाव बाबा साहेब आम्बेडकर न जीया तो वे भी बुद्ध की राह पर चल पड़े।

आज विश्व में भारत का सर्वश्रेष्ठ परिचय हमारी

भौतिक क्षेत्र में उन्नति के साथ ही हमारा बुद्ध का देश होना, ये भी दुनिया में भारत के महात्मय को बढ़ाता है। 'धम्मम शरणम गच्छामि, बुद्धम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि', ये हमारे देश की पवित्र भूमि से निकल संपूर्ण विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाने वाला जन-जन का मंत्र बन गया है। इसलिए बुद्ध पूर्णिमा का सबसे बड़ा संदेश है, 'तुम दूसरों को बदलने से पहले स्वयं को बदलना शुरू करो, तुम भी बुद्ध हो जाओगे, तुम बाहर सबको देखने से पहले अपने भीतर के युद्ध को जीतो, तो तुम- तुम भी बुद्ध हो जाओगे'। 'अपो दीपः आप भवः'- स्वयं अपना प्रकाश अपने भीतर खोजोगे तो आप भी बुद्ध बन जाओगे।
भगवान बुद्ध भी हमेशा चित की शांति और हृदय में करुणा की प्रेरणा देते रहते थे। समानता, नयाय, स्वतंत्रता और मानव अधिकार, आज के लोकतांत्रिक विश्व के प्रमुख मूल्य हैं। लेकिन इन पर बहुत स्पष्ट संदेश गौतम बुद्ध ने आज से ढाई हजार साल पहले दिया था। भारत में तो ये विषय अलग से विचारणीय न होकर समग्र विश्व-दृष्टि का ही अंग था।

भगवान बुद्ध के अपने दर्शन में समानता का अर्थ ये है कि हर व्यक्ति की इस धरती पर एक गरिमापूर्ण उपस्थिति है। हरेक व्यक्ति को अवसर संसाधनों का, अधिकारों की उपलब्धता बिना किसी भेदभाव सुनिश्चित की जानी चाहिए।

साथियों, दुनिया का कोई भी देश हो, जातिवाद से लेकर आतंकवाद तक सामाजिक नयाय को चुनौती देने वाली हर विषमता इंसान ने खुद ने ही पैदा की। ये विषमताएं ही अन्याय, शोषण, अत्याचार, हिंसा, सामाजिक तनाव और सौहार्द अहिंसा का मूल स्रोत है। जबकि दूसरी तरफ न्याय, स्वतंत्रता और मानव अधिकार के सिद्धांत समानता के सिद्धांत के ही एक प्रकार से विस्तार हैं। इसका अर्थ ये है कि समानता इन सिद्धांतों का आधार तत्व है।

यदि हमारे समाज में समानता की भावना सुदृढ़ होगी तो सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता, मानव अधिकार, सामाजिक परिवर्तन, व्यक्तिगत अधिकार, शांति, सौहार्द, समृद्धि, ये सारे मार्ग हमारे लिए खुल जाएंगे और हम तेजी से आगे बढ़ पाएंगे।
भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश में 'अष्टांग' की चर्चा की है। भगवान बुद्ध के संदेश में 'अष्टांग' की बात आती है। और मैं मानता हूँ कि 'अष्टांग' के मार्ग को जाने बिना, पाए बिना बुद्ध को पाना बहुत मुश्किल होता है। 'अष्टांग' मार्ग में भगवान बुद्ध ने कहा है- एक सम्यक दृष्टि, दूसरा सम्यक समकल्प, तीसरा सम्यक वाणी, चौथा सम्यक आचरण, पांचवा सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयत्न, सम्यक चेतना और सम्यक ध्यान यानी right view, right thought, right speech, right conduct, right livelihood, right efforts, right consciousness, right consultation, भगवान बुद्ध ने ये 'अष्ट्मार्ग' हमारे लिए सूचित किया है।

आज के युग में जिन संकटों से हम जूझ रहे हैं, जिन समस्याओं से हम जूझ रहे हैं, उन समस्याओं का समाधान भगवान बुद्ध के दिखाये रास्ते पर चलते हुए संभव है। समय की मांग है की संकट से अगर विश्व को बचाना है; बुद्ध का करुणा, प्रेम का संदेश सबसे उपयुक्त मार्ग है। तो बुद्ध को मानने वाली सभी शक्तियां सक्रिय होनी चाहिए। भगवान बुद्ध ने भी कहा था कि इस रास्ते पर संकलित होकर चलने से ही सामर्थय प्राप्त होगा। साथियों, भगवान बुद्ध उन दार्शनिकों में से थे जिन्हें तर्कबुद्धि और भावना का संकल्प आवशयक लगता था। वो अपने 'धम्म' के सिद्धांतों के तार्किक परीक्षण के बहुत ही आग्रही थे। वो अपने शिष्यों से बिना किसी विशेष आदर या अनुराग के उनके अपने विचारों को भी तर्क की कसौटी पर कसने के लिए हर हमेश आग्रह करते थे। भगवान बुद्ध के संदेशों को ठोस, दार्शनिक स्वरुप देने वाले महान बौद्ध चिंतक नागार्जुन ने second century में, द्वितीय शताब्दी में सम्राट उदय को जो सलाह दी थी, वो सलाह आज भी बहुत प्रासंगिक है।

उन्होंने कहा था- "नेत्रहीनों, बीमारों, वंचितों, असहायों और दरिद्रों को बिना किसी अवरोध के भोजन और पानी मिलने की व्यवस्था और उनके प्रति करुणा का भाव रखना चाहिए;

पीड़ितों, और बीमार लोगों की समुचित देखभाल और परेशान किसानों को बीज और अन्य जरूरी सहयोग दिया जाना चाहिए।"

भगवान बुद्ध का वैश्विक विजन इस बात पर केन्द्रित रहा कि सारे संसार में सबका का दुख सदा-सदा के लिए कैसे दूर हो? वो कहते हैं कि किसी को दुख को देख कर दुखी होने से जयादा बेहतर है कि उस व्यक्ति को उस के दुख को दूर करने के लिए सक्षम बनाया जाए, तैयार कराया जाए और उसे सशक्त किया जाए।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारी सरकार करुणा और सेवाभाव के उसी रास्ते पर चल रही है जिस रास्ते को भगवान बुद्ध ने हमें दिखाया है। जीवन में दु:ख कैसे कम हो, कठिनाइयां कैसे कम हों, एक सामान्य मानवी का जीवन कैसे आसान बने, इसे हम सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं।

जनधन योजना के तहत 31 करोड़ से ज्यादा गरीबों के बैंक अकाउंट खोलना, सिर्फ 90 पैसे प्रतिदिन और एक रुपए महीने के प्रीमियम पर लगभग 19 करोड़ गरीबों को बीमा कवच देना, 3 करोड़ 70 लाख से ज्यादा गरीब महिलाओं को मुफ्त में गैस का चूल्हा देना, कनेक्शन देना; मिशन इंद्रधनुष के तहत 3 करोड़ से जयादा शिशुओं और 80 लाख से ज्यादा गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण करना; मुद्रा योजना के तहत बिना बैंक गारंटी 12 करोड़ से ज्यादा ऋण देना, ऐसे अनेक कार्य इस सरकार में गरीब को सशक्त बनाने के लिए किए गए हैं। और अब अब तो आयुष्मान भारत योजना के तहत सरकार लगभग 50 करोड़ गरीबों को साल में 5 लाख रुपए तक के इलाज की सुविधा भी सुनिश्चित करने के लिए आगे बढ़ रही है।

साथियों, Inclusiveness का ये विचार, सबको साथ चलने का विचार ही था जिसने, बुद्ध जी के जीवन को एकदम से बदल दिया। एक राजा का बेटा था जिसके पास सारी सुख-सुविधाएं थीं, वो जब गरीब का देखता है, उसका दर्द, उसकी तकलीफ देखता है, तभी उसके भीतर ये भाव भी आता है कि 'मैं इनसे अलग नहीं, मैं इन्हीं के समान हूँ'।

इस सच्चाई ने ही उनहें एक विजन दिया- ज्ञाण, तर्कक्षमता, चैतन्य, नैतिकता, मूल्यधर्मिता का भाव उनके भीतर अपने-आप एक शक्ति बनके उभरने लगा। आज इस भाव को जितना हम आत्मसात करेंगे, उतना ही हम सबसे पहले मनुष्य बनने के लिए योग्य होंगे। मनुष्यता के लिए, मानवता के लिए, 21वीं सदी को पूरी दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण सदी बनाने के लिए ये किया जाना बहुत ही आवश्यक है।

भाइयो और बहनों, गुलामी के लंबे कालखंड के बाद अनेक वजहों से हमारे यहां भी अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का कार्य उस तरीके से नहीं हुआ, जैसे होना चाहिए था। जो देश अपने इतिहास का संरक्षण करते हैं, उस विरासत को उसी भव्यता के साथ भावी पीढ़ी को नहीं सौंपता, वो देश कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार अपनी सांस्कृतिक धरोहर और विशेषकर भगवान बुद्ध से जुड़ी स्मृतियों के लिए एक बृहद विजन पर भी काम कर रही है।

हमारे देश में करीब-करीब 18 राज्य ऐसे हैं जहां पर भगवान बुद्ध से जुड़े हुए कोई न कोई तीर्थ क्षेत्र हैं। इनमें से कई तो 2 हजार वर्ष से जयादा पुराने हैं और विश्वभर से लोगों को आकर्षित करते रहे हैं। ऐसे में ये भी बहुत आवश्यक है कि जो लोग इन स्थलों को देखने आ रहे हैं, उनकी सुविधाओं के हिसाब से भी इन जगहों को विकसित किया जाए। इसी सोच पर चलते हुए देश में स्वदेश दर्शन स्कीम के तहत एक Buddhist circuit पर भी काम किया जा रहा है।

Buddhist circuit के लिए सरकार 360 करोड़ रुपए से ज्यादा स्वीकृत कर चुकी है। इसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश और गुजरात, ऐसे स्थानों पर बौद्ध स्थलों का और विकास किया जा रहा है।

इसके अलावा सड़क परिवहन मंत्रालय गया-वाराणसी, कुशीनगर, इस पूरे route पर सड़कों के किनारों पर आवश्यक सुविधाओं को विकसित कर रहा है। पर्यटन मंत्रालय द्वारा हर दो साल में International Conclave on Buddhism, उसका भी आयोजन किया जाता है। इस वर्ष जब ये कार्यक्रम होगा तो उसमें भी दुनियाभर से अलग-अलग क्षेत्रों से विद्वान जुटेंगे। इस तरह के कार्यक्रमों का भी मकसद यही है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक हमारी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में जानकारी पहुंचे, स्थानीय स्तर पर और दूसरे देशों से भी पर्यटक बौद्धस्थलों को देखने जाएं, उनके बारे में जानकारी हासिल करें।

इसके अलावा केंद्र सरकार, भारत के करीबी देशों में भी बौद्ध विरासत के संरक्षण में उन देशों की मदद कर रही है। आर्कयोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया (ASI) द्वारा म्यांमार के बागान में, Ananda temple के पुनुरुद्धार और chemical preservation का काम तेजी से चल रहा है। दो साल पहले आए भूकंप में ये मंदिर काफी छतिग्रस्त हो गया था। ASI अफगानिस्तान के बामियान में, कंबोडिया के ओंकारवाट और 'तोप्रोहम' मंदिर में, लाओस के वतपोह मंदिर में वियतनाम के Myson मंदिर के संरक्षण के कार्य में भी भारत सरकार जुटी है। विशेषकर मंगोलिया की बात करूं तो भारत सरकार Ganden Monastery की सारी Manuscripts के संरक्षण और उनके digitization का काम भी कर रही है।

आज मेरा इस मंच से भारत सरकार के कुछ महत्वपूर्ण मत्रालयों से एक आग्रह है। बौद्ध दर्शन से जुड़े देश के अलग-अलग हिस्सों में जो संस्थान चल रहे हैं, उनमें भगवान बुद्ध के शिक्षा संग्रह-'त्रिपिटका' के संरक्षण और अनुवाद का जो कार्य किया जा रहा है, उसे एक मंच पर कैसे लाया जा सकता है। क्या एक विस्तृत portal विकसित किया जा सकता है जिसमें आसान शब्दों में भगवान बुद्ध के विचार और उन पर जो कार्य इन संस्थानों में कया गया है, उसका संकलन हो सके? मैं महेश शर्माजी से आग्रह करूंगा कि वो इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व अपने हाथ में लें और इसे तय समय में पूरा करने का प्रयास करें।

साथियो, ये हम सभी का सौभाग्य है कि ढाई हजार वर्ष बाद भी भगवान बुद्ध की शिक्षाएं हमारे बीच हैं। और जब मैं सौभाग्य कहता हूँ तो आप उसके पीछे की परिस्थितियों के बारे में सोचिए कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ?

निश्चित तौर पर हमारे पहले जो लोग थे, इसमें उनकी बड़ी भूमिका रही है। ये हम से पहले वाली पीढ़ियों का योगदान था, उनका संरक्षण था कि आज हम बुद्ध पूर्णिमा पर इस तरह के कार्यक्रम कर पा रहे हैं। ढाई हजार साल तक हमारे पूर्वजों ने इस विरासत को संजो कर संजोए रखने के लिए और हर पीढ़ी को देने के लिए निरंत प्रयास किया है। अब आने वाला मानव इतिहास आपकी सक्रिय भूमिका का इंतजार कर रहा है, आपके संकल्प का इंतजार कर रहा है।

मैं चाहता हूँ कि आज जब आप यहां से जाएं तो मन में इस विचार के साथ जाएं कि 2022 में, जब हमारा देश स्वतंत्रता के 75 वर्ष का पर्व मना रहा होगा, तब तक ऐसे कौन से 5 या 10 संकल्प होंगे, जिन्हें आप पूरा करना चाहेंगे।

ये संकलप अपनी विरासत की रक्षा, गौतम बुद्ध के विचारों के प्रसार, किसी से भी जुड़े हो सकते हैं। लेकिन मेरी प्रार्थना है कि यहां उपस्थित हर व्यक्ति, हर संस्था, हर संगठन, 2022 का लक्ष्य तय करके कुछ न कुछ संकल्प अवश्य लें।

आपके ये प्रयास New India के संकलप को पूरा करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाएंगे। चुनौतियां हमें पता है, हम सभी पर भगवान बुद्ध का आशीर्वाद है, इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि जो भी संकल्प लेंगे, उसे अवश्य प्राप्त करके रहेंगे।

मुझे आज बुद्ध पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर भगवान बुद्ध के चरणों में आ करके बैठने का अवसर मिला, उनहें नमन करने का अवसर मिला, आप सभी के दर्शन करने का अवसर मिला,

इसके लिए मैं अपने-आपको धन्य मानता हूँ।

एक बार फिर आप सभी को बुद्ध पूर्णिमा की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ और मैं मेरी वाणी को विराम देता हूँ।

*****

कोलंबो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेसाक दिवस समारोह में प्रधानमंत्री का संबोधन
12 मई 2017

वेसाक दिवस सबसे पवित्र दिन है।

यह मानवता के लिए भगवान बुद्ध, 'तथागत' के परिनिर्वाण, जन्म और प्रबोधन के प्रति आदर व्यक्त करने का दिन है। यह बुद्ध में आनंदित होने का दिन है। यह परम सत्य और चार महान सत्य एवं धम्म की कालातीत प्रासंगिकता को प्रतिबिंबित करने का दिन है।

यह दस पारमिता यानी पूर्णता- दान (उदारता), सील (शील), नेख्खम (नैष्क्रम्य यानी महान त्याग), पिन्या (प्रज्ञा यानी जानना), वीरि (वीर्य यानी भीतरी शक्ति), ख्नती (सहनशीलता), सच्च (सत्य), अदित्ठान (अधिष्ठान), मेत्ता (मैत्री) और उपेख्खा (उपेक्षा) - के बारे में चिंतन करने का दिन है।

यह आपके लिए यहां श्रीलंका में, भारत में हमारे लिए और दुनियाभर के बौद्धों के लिए काफी

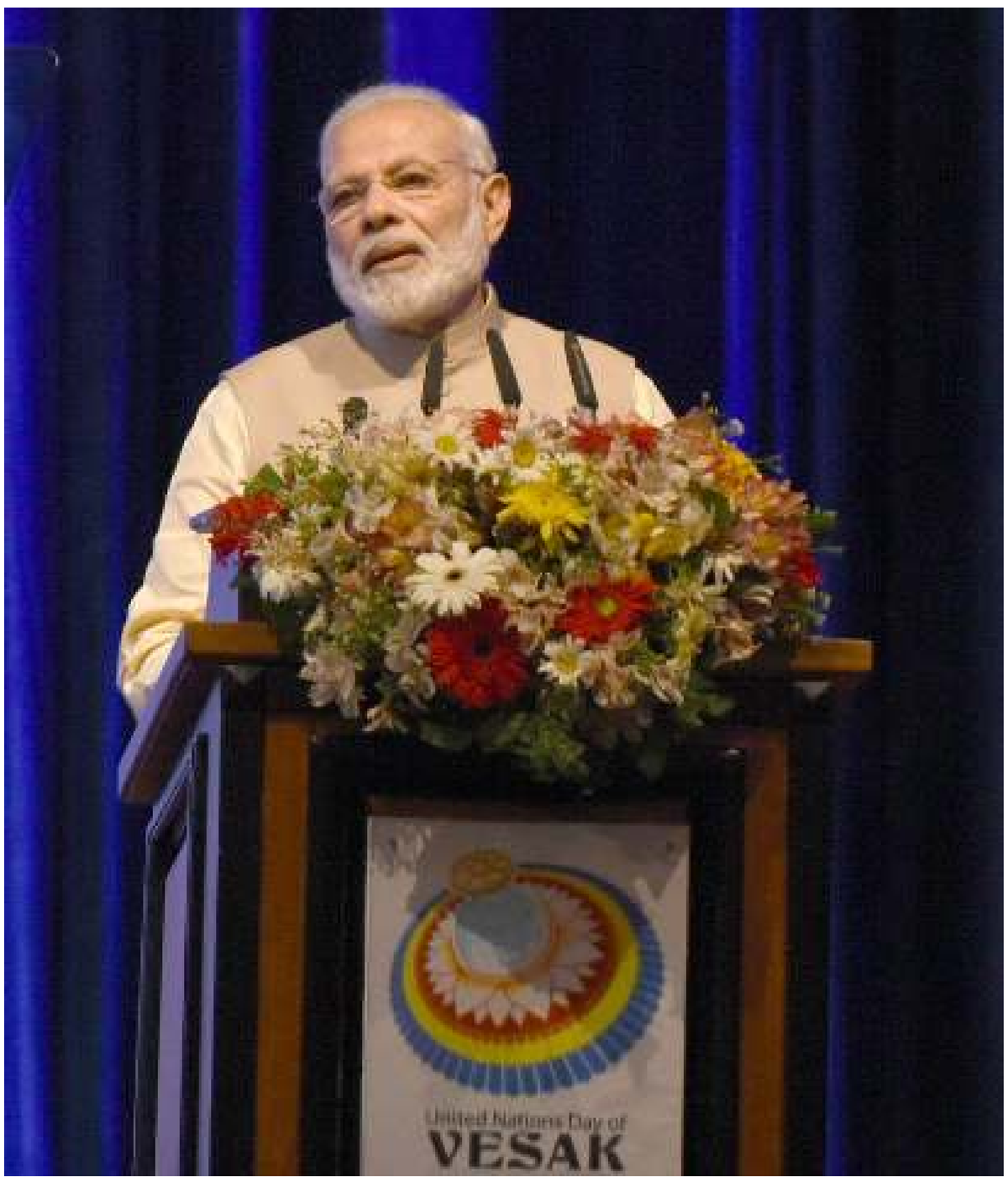

महत्व का दिन है। और मैं महामहिम राष्ट्रपति मैत्रीपाल सिरीसेना, महामहिम प्रधानमंत्री रनिल विक्रमसिंघे और श्रीलंका के लोगों का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे कोलंबो में आयोजित इस वैशाख दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित किया है। मैं इस शुभ अवसर पर सम्यकसमबुद्ध यानी जो पूरी तरह आत्म जागृत है, भूमि से 1.25 अरब लोगों की शुभकामनाएं भी अपने साथ लाया हूँ।

महामहिम, और मित्रों, हमारे क्षेत्र ने विश्व को बुद्ध एवं उनकी शिक्षाओं का अमूल्य उपहार दिया है। भारत में बोध गया, जहां राजकुमर सिद्धार्थ बुद्ध बने थे, बौद्ध जगत का एक पवित्र केंद्र है। वाराणसी में भगवान बुद्ध के पहले उपदेश, जिसे संसद में प्रस्तुत करने का सम्मान मुझे मिला था, ने धम्म के चक्र को गति प्रदान किया। हमारे प्रमुख रास्ट्रीय प्रतीकों ने बौद्ध धर्म से प्रेरणा ली है। बौद्ध धर्म और इसकी शिक्षाओं से हमारा शासन, दर्शन एवं हमारी संस्कृति ओतप्रोत है। बौद्ध धर्म का दैवीय सुगंध भारत से निकलकर दुनिया के सभी कोनों में फैल गया। सम्राट अशोक के सुयोग्य पुत्र महिंद्र और संघमित्र ने सबसे बड़ा उपहार धम्म को फैलाने के लिए धम्म दूत के रूप में भारत से श्रीलंका की यात्रा की थी। और बुद्ध ने स्वयं कहा था:

सब्बदानामाधम्मादानं जनाती

यानी धम्म का उपहार सबसे बड़ा उपहार है। श्रीलंका आज बौद्ध शिक्षा एवं प्रज्ञता के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में शामिल होकर गौरवान्वित है। सदियों बाद अनगरिका धर्मपाल ने भी इसी तरह की यात्रा की थी लेकिन इस बार अपने मूल देश में बौद्ध धर्म की अलख जगाने के लिए यात्रा श्रीलंका से भारत के लिए की गई। किसी तरह आप हमें अपनी जड़ों तक वापस ले आए। बौद्ध धरोहर के कुछ सबसे महत्वपूर्ण तत्वों को संरक्षित करने के लिए विश्व भी श्रीलंका का आभारी है।

विश्व बौद्ध धरोहर के कुछ महत्वपूर्ण तत्वों को संरक्षित करने के लिए श्रीलंका के लिए कृतज्ञता का ऋण भी देता है। वैशाख हमारे लिए बौद्ध धर्म के इस अटूट साझा विरासत को मनाने का एक अवसर है। यह एक ऐसी विरासत है जो हमारे समाज को पीढ़ियों और सदियों तक जोड़ती है।

मित्रों,
भारत और श्रीलंका के बीच मित्रता को समय-समय पर 'महान उपदेशकों' ने गढ़ा था। बौद्ध धर्म हमारे संबंधों को लगातार एक नई चमक देता रहा है। करीबी पड़ोसी देश होने के नाते हमारे संबंध कई स्तरों तक विस्तृत है। इसे बौद्ध धर्म के हमारे पारस्परिक मूल्यों से बल मिलता है क्योंकि यह हमारे साझा भविष्य की असीम संभावनाओं से प्रेरित है। हमारी मित्रता ऐसी है जो हमारे लोगों के दिलों में और हमारे सामजिक ताने-बाने में निवास करती है।

बौद्ध विरासत के हमारे संबंधों को सम्मान और गहराई देने के लिए मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि इसी साल अगस्त से एयर इंडिया कोलंबो और वाराणसी के बीच सीधी उड़ान सेवा शुरू करेगी। इससे श्रीलंका के मेरे भाइयों और बहनों के लिए बुद्ध की नगरी की यात्रा आसान हो जाएगी, और आप सीधे श्रावस्ती, कुसीनगर, संकासा, कौशांबी और सारनाथ की यात्रा कर सकेंगे। मेरे तमिल भाई और बहन भी काशी विश्वनाथ की भूमि वाराणसी की यात्रा करने में समर्थ होंगे।

आदरणीय भिक्षुओं, महामहिम और मित्रों,
मैं समझता हूँ कि हम श्रीलंका के साथ हमारे संबंधों में फिलहाल व्यापक संभावनाओं के दौर में हैं। यह विभिन्न क्षेत्रों में हमारी भागीदारी में उल्लेखनीय छलांग लगाने का अवसर है। और, हमारे लिए हमारी दोस्ती की सफलता का सबसे अधिक प्रासंगिक बेंचमार्क आपकी प्रगति और सफलता है। हम श्रीलंका के अपने भाइयों और बहनों की आर्थिक समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम सकारात्कम बदलाव और आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए निवेश जारी रखेंगे ताकि विकास के लिए हमारे सहयोग को और गहराई दी जा सके। हमारी ताकत हमरे ज्ञान, क्षमता और समृद्धि को साझा करने में निहित है। व्यापार और निवेश में हम पहले से ही महत्वपूर्ण साझेदार हैं। हमारा मानना है कि हमारी सीमाओं के पार व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और विचारों का मुक्त प्रवाह हमारे पारस्परिक लाभ के लिए होगा। भारत के तीव्र विकास का लाभ पूरे क्षेत्र को और विशेष रूप से श्रीलंका को मिल सकता है। हम बुनियादी ढांचा एवं कनेक्टिविटी, परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्र में अपने सहयोग को बढ़ाने के लिए तैयार हैं। हमारी विकास साझेदारी कृषि, शिक्षा, स्वास्थ, पुनर्वास, परिवहन, बिजली, संस्कृति, जल, आश्रय, खेल एवं मानव संसाधन जैसे मानव गतिविधियों के लगभग हरेक क्षेत्र तक विस्तृत है।

श्रीलंका के साथ भारत के विकास सहयोग का आकार आज 2.6 अरब अमेरिकी डॉलर है। और इसका एकमात्र उद्देश्य श्रीलंका को अपने लोगों के लिए शांतिपूर्ण, समृद्ध एवं सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने में मदद करना है। क्योंकि श्रीलंका के लोगों की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का संबंध 1.25 अरब भारतीयों से जुड़ा है। क्योंकि चाहे स्थल हो अथवा हिंद महासागर का जल, दोनों जगह हमारे समाज की सुरक्षा अविभाज्य है। राष्ट्रपति सिरीसेना और प्रधानमंत्री विक्रमसिंघे के साथ हुई मेरी बातचीत ने साझा लक्ष्यों को हासिल करने के लिए हाथ मिलाने की हमारी इच्छा को प्रबल किया है। जैसा कि आपने अपने समाज के सद्भाव एवं प्रगति के लिए महत्वपुर्ण विकल्प बनाया है, तो भारत में आप एक ऐसे मित्र एवं साझेदार को पाएंगे जो राष्ट्र निर्माण के लिए आपके प्रयायों में मदद करेगा।

आदरणीय भिक्षुओं, महामहिम और मित्रों,
भागवान बुद्ध का संदेश आज इक्कीसवीं सदी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह ढाई सौ साल पहले था। बुद्ध द्वारा दिखाई गई राह मध्यम प्रतिपदा हम सभी को निर्देशित करती है। इसकी सार्वभौमिक एवं सदाबहार प्रकृति असरदार है। यह विभिन्न देशों को एक सूत्र में बांधने की शक्ति है। दक्षिण, मध्य, दक्षिणपूर्व और पूर्वी एशिया के

देश भगवान बुद्ध की धरती से अपने बौद्ध संबंधों पर गर्व करते हैं।

वेसाक दिवस के लिए चुने गए विषय- सामाजिक न्याय एवं स्थायी विश्व शांति- में बुद्ध की शिक्षा गहराई से प्रतिध्वनित होती है। यह विषय स्वतंत्र दिख सकता है, लेकिन वे दोनों गहराई से एक-दूसरे पर निर्भर और अंतरसंबंधित हैं। सामाजिक न्याय का मुद्दा विभिनन समुदायों के बीच होने वाले संघर्ष से जुड़ा है। सैद्धांतिक रूप से यह तनहा अथवा तृष्णा के कारण पैदा होता है जिससे लालच उत्पन्न होता है। लालच ने मानव जाति को हमारे प्राकृतिक आवास पर हावी होने और उसे नीचा दिखाने के लिए प्रेरित किया है। हमारी सभी चाहत को पूरा करने की हमारी इच्छा ने समुदायों के बीच आय में असमानता को जन्म दिया और सामाजिक सद्भाव को नुकसान पहुंचाया।

इसी प्रकार यह जरूरी नहीं है कि आज राष्ट्र राज्यों के बीच संघर्ष स्थायी विश्व शांति के लिए सबसे बड़ी चुनौती हो। बल्कि यह घृणा एवं हिंसा के विचार पर आधारित हमारी मनोदशा, सोच की धारा, संस्थाओं, और उपकरणों में निहित है। हमारे क्षेत्र में आतंकवाद का खतरा इस विधवंसक भावनाओं की एक ठोस अभिव्यंजना है। दुर्भाग्य से हमारे क्षेत्र में नफरत की इन विचारधाराओं के समर्थक बातचीत के लिए खुले नहीं हैं और इसलिए वे केवल मौत और विनाश को पैदा कर रहे हैं। मुझे दृढ़ विश्वास है कि बौद्ध धर्म का संदेश दुनियाभर में बढ़ती हिंसा का जवाब है।

और यह संघर्ष की अनुपस्थिति से परिभाषित केवल शांति की एक नकारात्मक धारणा नहीं है। बल्कि यह एक सकारात्मक शांति है जहां हम सब करुणा और ज्ञान के आधार पर संवाद, सद्भाव और न्याय को बढ़ावा देने के लिए काम करते हैं। बुद्ध कहते हैं, 'नत्तीसंतिपरणसुखं' यानी शांति से बढ़कर कोई आनंद नहीं है। वैशाख के अवसर पर मैं उम्मीद करता हूँ कि भारत और श्रीलंका

भगवान बुद्ध के आदर्शों को बनाए रखने और हमारी सरकारों की नीतियों एवं आचरण में शांति, सहअस्तित्व, समावेशीकरण और करुणा जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए साथ मिलकर काम करेंगे। यह वास्तव में व्यक्तियों, परिवारों, समाजों, राष्ट्रों और दुनिया को लालच, घृणा और उपेक्षा के तीनों जहर से मुक्त करने का रास्ता है।

आदरणीय भिक्षुओं, महामहिम और मित्रों,
आइये वेसाक के इस पावन अवसर पर हम अंधकार से बाहर निकलने के लिए ज्ञान की दीप जलाएं, हम अपने भीतर झांकें और सत्य के अलावा किसी भी चीज को बरकरार न रहने दें। और, बुद्ध के उस मार्ग पर चलने की कोशिश करें जो दुनियाभर को प्रकाशित कर रहा है।

धम्मपद के 387 वें पद में कहा गया है:

दिवातपतिआदिच्चो, रत्तिंगओभातिचंदिमा।
सन्न्द्धोखत्तियोतपति, झायीतपति ब्राह्मणों।
अथसब्बमअहोरत्तिंग, बुद्धोतपतितेजसा।

अर्थ:

सूरज दिन में चमकता है,
चंद्रमा रात में प्रकाशित होता है,
योद्धा अपने कवच में चमकता है,
ब्राह्मण अपने ध्यन में चमता है,

लेकिन जागृत व्यक्ति अपनी कांति से पूरे दिन और रात को चमकाता है।

यहां आपके साथ होने के सम्मान के लिए एक बार फिर धन्यवाद्।

मैं आज दोपहर को केंडी के पवित्र दांत अवशेष मंदिर श्री दलदा मालीगावा में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उत्सुक हूँ। बुद्ध, धम्म और संघ के तीनों मणि हम सभी को आशीर्वाद दें।

धन्यवाद,

बहुत-बहुत धन्यवा।

*****

अंतर्राष्ट्रीय बुद्ध पूर्णिमा दिवस समारोह में प्रधानमंत्री का संबोधन
4 मई 2015

आज हम एक ऐसे पर्व पर इकट्ठे हुए हैं जो एक प्रकार से त्रिगुण है, त्रिवेणी है। आज ही का पवित्र दिवस बुद्ध पूर्णिमा का है, जब भगवान बुद्ध ने देह धारण किया था। आज ही का पवित्र दिवस है, जब भगवान बुद्ध ने संबोधि प्राप्त की थी और आज ही का दिवस जब भगवान ने देह मुक्ति कर दिव्यता की ओर परायण कर दिया था। लेकिन आज हम इस उमंग भरे पर्व पर कुछ बोझिल सा भी महसूस करते हैं, बोझिल सा इसलिए महसूस कर रहे हैं कि जिस धरती पर भगवान बुद्ध का जन्म हुआ, वो हमारा सबका प्यारा नेपाल एक बहुत बड़े संकट से गुजर रहा है। ये यातना कितनी भयंकर होगी उसकी कल्पना करना भी कठिन है और कितने लंबे समय तक नेपाल के इन पीड़ित बंधुओं को इन यातनाओं से जूझना पड़ेगा इसका भी अंदाज करना कठिन है। लेकिन भगवान बुद्ध ने जो करुणा का संदेश दिया है विश्व की मानव जाति के लिए उस करुणा को जीने का एक मौका भी है। उसी करुणा से प्रेरित होकर के नेपाल के बंधुओं के दुख-दर्द को हम बांटें, उनके आंसुओं को पोंछें और उन्हें भी एक नई शक्ति प्राप्त हो, इसके लिए आज हम भगवान बुद्ध के चरणों में प्रार्थना करते हैं।

जब भगवान बुद्ध की चर्चा होती है तब ये स्वाभाविक है कि आज के युग में उन्होंने जो कहा था, उन्होंने जो जिया था और उन्होंने जीने के लिए जो प्रेरणा दी थी क्या आज के मानव-जाति को, आज के विश्व को, वो उपकारक है क्या? और हम देखिए तो जीवन का कोई भी विषय ऐसा नहीं जिसमें आज भी बुद्ध प्रस्तुत न हो? अगर युद्ध से मुक्ति पानी है तो बुद्ध के मार्ग से ही मिलती है। कभी-कभार लोगों का भ्रम होता है कि सत्ता और वैभव, समस्याओं का समाधान करने के लिए पूर्ण होती है लेकिन भगवान बुद्ध का जीवन इस बात को नकारता है। भगवान बुद्ध को संबोधि प्राप्त करने का अवसर हम सबको विदित है लेकिन भगवान बुद्ध के एक-एक आचरण में ऐसा लग रहा है कि वो पहले से ही.. उनके मन की भूमि तैयार थी। बारिश आने के बाद, बीज बोने के बाद फसल होना, ये हमारे ध्यान में होता है लेकिन उस धरती की अपनी एक ताकत होती है, उसका अपना एक समार्थ्य होता है जो बाद में उर्वरा का रूप ले, तब हमारे ध्यान जाता है।

भगवान बुद्ध में लग रहा है कि जन्मकाल से ही एक प्रकार से वो संबोधि को प्राप्त होकर के आए थे और विधिवत रूप से संबोधि प्राप्त करने का अवसर जो दुनिया की नजर में कोई और था ..वरना क्या कारण था कि जो व्यक्ति स्वंय राज परिवार में पैदा हुआ हो, जो व्यक्ति स्वंय युद्ध-विद्या में पारंगत हो, जो व्यक्ति जिसके पास अपार सत्ता हो, अपार संपत्ति हो, उसके बाद भी मानव कल्याण के लिए ये पूर्ण नहीं है, कुछ और आवश्यक है, इससे भी परे कुछ ताकत है और उस ताकत की ओर जाना अनिवार्य है, ये जब दृढ़ विश्वास भीतर होता है.. कितना बड़ा conviction होगा, कितना बड़ी courage होगी कि पल भर में ये सब कुछ छोड़ देना, राज-वैभव, सत्ता, पैसे, सब कुछ छोड़ देना और निकल पड़ना। इन सबसे भी ऊपर कोई शक्ति है जो मानव के काम आएगी, मानव-कल्याण के काम आएगी। ये विचार छोटा नहीं है। जब भगवान बुद्ध की तरफ देखते हैं, एक सातत्य नजर आता है। भीतर की करुणा उनके रोम-रोम में प्रतिबिंबित होती थी, प्रवाहित होती थी। बुद्ध जो कभी सिद्धार्थ के रूप में पल रहे थे, राज-पाठ के बीच पल रहे थे।

सिद्धार्थ और देवव्रत दो भाई शिकार करने के लिए जाएं और बुद्ध के दर्शन वहीं हो जाते हैं कि जब शिकार करते समय देवव्रत के तीर से एक हंस मारा जाता है और सिद्धार्थ उसको बचाने के लिए अपना जीवन खपा देते हैं, उनके भाई शिकार करने के आनंद में मशगूल होना चाहते हैं.. और तब अपने सगे भाई के प्यार वगैरह सब छोड़ करके, अपने सिद्धांतों का रास्ता, बचपन में एक बच्चा पकड़ लेता है और कहता है कि नहीं! मारने नहीं दूंगा! अगर भीतर से करुणा प्रवाहित न हुई होती, अगर जीवन करुणा से प्रेरित न हुआ होता, प्रभावित न हुआ होता तो ये घटना संभव नहीं होती क्योंकि राजघराने में जिस प्रकार का लालन-पालन होता है, युद्ध की विभीषिकाओं के बीच जीने की जिनको तैयारी रखनी होती है, जिसको शस्त्र से सुसज्जित किया जाता है, वो व्यक्ति एक पंछी के लिए इतनी करुणा प्रकट करता हो और सगे भाई को छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है, तब उस करुणा की तीव्रता कितनी ऊंची होगी, इसका अंदाज आता है। ये भाव ही तो है, यही तो ताकत है जो उसको राज-पाट छोड़ने के लिए प्रेरित करती है.. और जीवन का अंतकाल देखिए, करुणा की तीव्रता देखिए कि वे बालयकाल में राजघराने के जीवन में जीने के बाद भी करुणा को प्रकट करते हैं और जीवन के अंतकाल में कोई व्यक्ति अज्ञानवश उनके कान के अंदर कीलें ठोक देता है तब भी.. स्वयं वेदना से पीड़ित थे, शरीर कराह रहा था.. कान में कीलें ठोक देना कितनी बड़ी दर्दनाक पीड़ा होगी, इसका अंदाज कर सकते हैं लेकिन तब भी वही करुणा प्रतिबिंबित होती है जो अपने सगे भाई के समय हुई थी। उस मारने वाले के प्रति भी वही करुणा प्रकट होती है। जीवन कितना एकसूत्र था, एकात्मता का वो आदेश देते थे। इस एकात्मता की अनुभूति जीवन के आखिर काल तक कैसे हुई इसका हम अंदाज कर सकते हैं।

आज पूरे विश्व में एक चर्चा है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है और इसमें कोई दुविधा नहीं दुनिया में, मतभेद नहीं। इस विषय में सभी मानते हैं कि 21वीं सदी एशिया की है। इसमें मतभेद हो सकता है कि किस देश की होगी किस देश की नहीं, लेकिन एशिया की होगी इसमें कोई मतभेद नहीं है। जिन लोगों ने '21वीं सदी एशिया की सदी' को विश्व में एक प्रेरणा का कारण बना सकते हैं और वो प्रेरणा क्या है? विश्व संकटों से जूझ रहा है, एक-दूसरे की मौत पर उतारू हैं, हिंसा अपनी चरम सीमा पर है। विश्व का भौतिक भू-भाग रक्तरंजित है, तब करुणा का संदेश कहां से आएंगा? मरने-मारने की इस मानसिकता के बीच प्रेम का संदेश कौन दे पाएंगा और वो कौन ताकत है, कौन सी शख्सियत है जिसकी बात को दुनिया स्वीकारने के लिए तैयार होगी, तो जगह एक ही दिखती है। किनारा एक ही जगह पर नज़र आता है, वो है- बुद्ध। मानव जाति जिन संकटों से गुजर रही है उसके लिए भी, विश्व को भी रास्ता दिखाने के लिए ये मार्ग है। अपने ही जीवनकाल में कोई विचार इतना प्रभावी हो सकता है क्या? नहीं हो सकता है। दुनिया के ढेर सारे विचार प्रवाहों को हम देख लें, उस विचार के जनक के कार्यकाल में.. वो विचार न इतना फैला है, न इतना प्रचारित हुआ है। बाद में उनके शिष्यों के द्वारा फैला होगा। शासकीय वयवस्थाओं के माध्यम से फैला होगा लेकिन किसी व्यक्ति के जीते-जी.. अगर वो कोई नाम है, तो एक ही नाम है पूरे विश्व में, वो है बुद्ध। विश्व के कितने बड़े भू-भाग पर ये विचार-प्रभाव पहुंच चुका है और जन-सामान्य की प्रेरणा का, श्रृद्धा का केंद्र बन चुका है। उस अर्थ में ये मानना होगा कि बुद्ध के साथ जितनी बातें जुड़ी हुई हैं.. कभी-कभार इस पहलू को देखते हैं तो लगता है कि बुद्ध ज्ञान-मार्गी भी थे। जब तक Conviction नहीं होता, जब तक विचारों के तराजू पर चीज़ें तौली नहीं जातीं, जब तक comparative study करके better decide नहीं होता है तब तक दुनिया अपने आप चीज़ों को स्वीकार नहीं करती है। बुद्ध की बातों में ज्ञान मार्ग की ताकत थी, तभी तो विश्व ने उनको स्वीकार किया होगा, विश्व ने तराजू पर तौल कर स्वीकार किया होगा।

उस समय सामाजिक जीवन में भी बुराइयां.. और बुराइयों को अतिरेक था। आशंकाओं का दौर चलता था। भू-विस्तार एक सहज राज्य प्रवृत्ति बन गई थी। ऐसे समय, यानी ऐसे विपरित समय में त्याग की चर्चा करना, मर्यादाओं की चर्चा करना, प्रेम और करुणा का संदेश देना और सामाजिक सुधार की बात करना.. जिन मुद्दों को लेकर आज भी हम हिन्दुस्तान में चर्चा करते हैं, ढाई हज़ार

साल पहले भगवान बुद्ध ने भी इन मुद्दों को स्पर्श किया था।

मैं अभी-अभी.. यहां जब मुझे किताब दी गई तो मैं पढ़ रहा था, एक चीज़ से मैं प्रभावित हुआ, मुझे लगता है कि मैं आपको बताऊं। एक स्थान पर लिखा है- ''पर कल्याण के बिना भविष्य और परलोक जैसे तो दूर की बात है, इसी जीवन की अर्थ-सिद्धि भी नहीं हो सकती।'' मरने के बाद के सुख की बात छोड़ो, इस जीवन में भी सुख नहीं मिल सकता। आगे कहा है- क्यों, कैसे- ''मज़दूरी के अनुसार, काम न करने वाला मज़दूर और काम के अनुसार या समय पर मज़दूरी न देने वाला स्वामी, दोनों अपने ऐहिक अर्थ भी सिद्ध नहीं कर सकते हैं।'' दुनिया में जो लोग एक मई मनाते हैं, पहली मई मनाते हैं, उन्होंने कभी कल्पना की होगी कि ढाई हज़ार वर्ष पहले मज़दूरों के संबंध में और मज़दूर के संबंध में भगवान बुद्ध क्या विचार रखते थे।

जाति प्रथा हो, ऊंच-नीच का भाव हो, अच्छे-बुरे की चर्चा हो, भगवान बुद्ध उस विषय में बड़े संवेदनशील थे। और क्या चाहते थे! एक जगह पर उन्होंने कहा है- ''दूसरों से अपमानित अल्प ओजस्वी लोग महान ओजस्वी बनें'' क्या इच्छा है! जो अपमानित होते है, अल्प ओजस्वी है वे लोग महान ओजस्वी बनें और ''धूप, हवा या परिश्रम से पीड़ित कुरुप लोग सुंदर बनें'' मज़दूरी करते-करते, पसीने से लथपथ रहते जिनका चेहरा-मोहरा मलिन हो गया है..वो चाहते हैं कि ये लोग सुधरें, यानी हर पल..दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित यहीं लोग उनके दिल के अंदर जगह बनाते रहें। आगे एक जगह पर कहते हैं..महिलाओं के गौरव की बात को किस ढंग से उन्होंने रखा है।आगे एक जगह पर कहते हैं.. महिलाओं के गौरव की बात को किस ढंग से उन्होंने रखा है, women empowerment की चर्चा कैसे की है, अपने तरीके से की है, युग-युग के अनुरूप कही है। उन्होंने कहा है- ''इस लोक में जितनी स्त्रियां हैं, वे अगले जन्म में पुरुष बनेंगी, जिनको आज नीच जन्म वाला माना जाता है, वो अगले जन्म में उच्च जन्म-धारण करेंगे'' और आगे बड़ा महत्वपूर्ण कहते हैं, ''ये सब होने के बाद भी वे कभी अभिमान को प्राप्त न करेंगे।''

आप देखिए, मैं तो ऐसे ही बैठे-बैठे देख रहा था लेकिन समाज का तरफ देखने का उनका रवैया क्या था? समाज में परिवर्तन चाहते थे, एक evolution चाहते थे, एक उत्क्रांति चाहते थे, व्यक्ति का जीवन भी उर्ध्वगामी पर जाए, समाज-व्यवस्था भी उर्ध्वगामी हो, ये उनका प्रयास था। बुद्ध का समयानुकूल संदेश ये ही था कि 'एकला चलो रे' ये परिणाम नहीं ला सकता है, वे संगठन के आग्रही थे और बाबा साहेब अंबेडकर से भी यही मंत्र दुनिया को मिला है, संगठित होने का.. और इसलिए जब भी बुद्ध की बात आती है तो- बुद्धम् शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संगम शरणं गच्छामि ये मंत्र बार-बार हमारे सामने आते हैं। संगठन की शक्ति को और इस रूप में जैसे वो ज्ञानमार्गी थे, वे एकात्ममार्गी भी थे। वे एकात्मता में विश्वास करते, जितने लोगों को जोड़ सकते हैं, जोड़ने में विश्वास रखते थे और उसी से एक संगठन की शक्ति को रूप देने का उनका प्रयास है।

भगवान बुद्ध ने व्यक्ति के विकास के लिए भी जो मंत्र दिया है, मैं समझता हूं कि इससे बड़ा कोई संदेश नहीं हो सकता है। आज दुनिया की कितनी ही management की किताबें पढ़ लीजिए, व्यक्ति विकास के लिए कितनी ही lecture, कितनी ही ग्रंथों को ऊपर-नीचे कर लीजिए, मैं समझता हूं कि बुद्ध का एक मंत्र इसके लिए काफी है। एक तराजू में व्यक्ति विकास के सारे विचार रख दीजिए, सारे ग्रंथ रख दीजिए और दूसरे तराजू में भगवान बुद्ध का एक तीन शब्द का मंत्र रख दीजिए, मैं समझता हूं तराजू बुद्ध की तरफ ही झुकेगा। वो क्या मंत्र था? व्यक्ति विकास का उत्तम मंत्र था 'अप्प दीपो भव' मैं समझता हूं 'अप्प दीपो भव' से ऊपर व्यक्ति के जीवन की उर्ध्वगामी यात्रा के लिए और कोई रास्ता नहीं हो सकता है और उस अर्थ में मैं कहूं कि स्वंय भगवान बुद्ध.. कुछ लोग कहते हैं कि वो पूर्व के प्रकाश थे, ज्यादा इस रूप से उनको वर्णित किया जाता है लेकिन मैं मानता हूं कि शायद उनको पूर्व के प्रकाश कहते समय हमारी कल्पना शक्ति की मर्यादा नजर आती है, हमारी कल्पनाशीलता की मर्यादा नजर आती है। लगता तो ऐसा है कि पूरे ब्राह्मांड के लिए वो तेज पुंज थे। जिस तेज पुंज में से, समय-समय पर जिसकी जैसी क्षमता प्रवाहित होने वाले प्रकाश

को वो प्राप्त करता था और इसलिए वो अपने-आप में एक तेज पुंज थे, उस तेज पुंज से प्रकाश पाकर के हम भी उस दिव्य मार्ग को कैसे प्राप्त करें, जिसमें करुणा हो, जिसमें साथ लेने का स्वभाव हो, जिसमें औरों के लिए जीने की इच्छाशक्ति हो और उसके लिए त्याग करने का मार्ग हो।

बुद्ध ने हमें ये जो रास्ते दिखाए हैं, उन रास्ता को लेकर के जब हम चलते हैं तब.. भगवान बुद्ध ने अष्टांग की चर्चा की है और मैं मानता हूँ कि अष्टांग के मार्ग को जाने बिना, पाए बिना बुद्ध को नहीं पा सकते हैं और उस अष्टांग मार्ग में भगवान बुद्ध ने जो कहा है एक सम्यक दृष्टि, दूसरा सम्यक संकल्प, तीसरा सम्यक वाणी, चौथा सम्यक आचरण, पांचवा सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयत्न, सम्यक चेतना, सम्यक ध्यान, ये अष्ट मार्ग.. right view, right thought, right speech, right conduct, right livelihood, right effort, right conciseness, right construction ..भगवान बुद्ध ने ये अष्ट मार्ग हमारे लिए सूचित किए हैं। आज भी United Nation अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस के लिए स्वीकृति देता है। दुनिया के 177 देश योगा दिवस को समर्थन करने के लिए और UN के इतिहास में इस प्रकार के resolution को इतना भारी समर्थन कभी पहले नहीं मिला है, इतने कम समय में कभी ऐसे विचार को स्वीकृति नहीं मिली है पूरे UN के इतिहास में, वो योग भी भोग से मुक्ति दिलाने का मार्ग है और योग, रोग से भी मुक्ति दिलाने का मार्ग है और वही एक कदम आगे बढ़ें तो ध्यान की ओर ले जाता है जिसकी और जाने के लिए भगवान बुद्ध हमें प्रेरित करते हैं और इस अर्थ में देखिए, आज के युग में जिन संकटों से हम जूझ रहे हैं, जिन समस्याओं से हम जूझ रहे हैं, उन समस्याओं का समाधान इन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पूरे एशिया में भी, मैं जहां भी इन दिनों जा रहा हू, वो राज्य सरकारें, वो राष्ट्र की सरकारें एक बार मेरा कार्यक्रम बनाते समय जरूर ध्यान रखती हैं और मुझे भी अच्छा लगता है, जब वो ये करते हैं.. कहीं पर भी भगवान बुद्ध का मंदिर है तो मुझे जरूर वहां ले जाते हैं।

मैं मुख्यमंत्री था तो चीन गया था तो कोई कल्पना नहीं कर सकता है चीन में, चीन सरकार ने मेरा जो कार्यक्रम बनाया, उसमें एक शाम मेरी भगवान बुद्ध के मंदिर में बिताने के लिए आयोजित किया था। मैं अभी जापान गया तो, क्योटो में तो स्वंय वहां के प्रधानमंत्री जी आए, वहां के इस भगवान बुद्ध के मंदिर के परिसर को मुझे साथ लेकर के गए थे। अभी श्रीलंका गया, सभी बौद्ध भिक्षुओं के साथ मिलने का मुझे अवसर मिला और मैं देखता हूं कि कितनी बड़ी आध्यात्मिक चेतना है लेकिन बिखरी पड़ी है। समय की मांग है कि संकट से अगर विश्व को बचाने के लिए, बुद्ध का करुणा प्रेम का संदेश काम आता है तो ये शक्तियां सक्रिय होनी चाहिए और भगवान बुद्ध ने कहा था, उसी रास्ते पर संगठित भी होना चाहिए और तभी जाकर के सामर्थ्य प्राप्त होगा और मैं, ये अच्छा हुआ कि हमारे कुछ लोगों का ध्यान नहीं गया अभी तक वरना कई चीजें हमारे देश में विवाद का कारण बनाने में देर नहीं लगती है।

मैं गांधी नगर में मुख्यमंत्री था तो हमारा एक सचिवालय का नया परिसर बना है, उस परिसर में मैंने बहुत बड़ी एक भगवान बुद्ध की मूर्ति लगाई है, प्रवेश होते ही सामने है और मैं जिस मुख्यमंत्री के निवास में रहता था वहां पर भी प्रवेश पर सामने ही भगवान बुद्ध विराजमान हैं। अभी तक शायद इन लोगों का ध्यान नहीं गया वरना तो अब तक मेरी चमड़ी उधेड़ दी गई होती। शायद एक कारण ये है.. वो मेरे ज्ञान या जानकारियों के कारण नहीं है, कुछ बातें होती हैं, जो हमें पता भी नहीं होती है। मेरा जन्म जिस गांव में हुआ, तो जब हम बचचे थे, पढ़ते थे तो यहां आए थे, यहां रहे थे.. थोड़े बड़े हुए तो पता चला कि ह्वेन सांग काफी समय मेरे गांव में रहे थे। क्यों रहे थे? तो फिर पता चला कि.. हमारी सामान्य Impression ये है कि भगवान बुद्ध पूर्वी क्षेत्र में थे लेकिन आपको यह जानकर आशचर्य होगा कि भारत के दूर, सुदूर पश्चिमी क्षेत्र में, मेरे गांव में बौद्ध भिक्षुओं के लिए एक बहुत बड़ा हॉसटल था और हजारों की तादात में बौद्ध भिक्षुओं की शिक्षा-दीक्षा का वहां काम होता था। तो ये सब ह्वेन सांग ने लिखा है।

मैं जब मुख्यमंत्री बना तो मुझे स्वाभिक इच्छा हुई कि भई ये लिखा गया है तो यहां कुछ तो होगा। मैंने मेरे यहां पुरातत्व विभाग को कहा कि

ज़रा खुदाई करो भई, देखों की क्या है। मुझे खुशी हुई कि वे सारी चीजें खुदाई में से मिल गईं। बुद्ध के स्तूप मिल गए, वहां के हॉस्टल भी मिल गए और ह्वेन सांग ने जो वर्णन किया था कि हज़ारों की तदात में लोग वहां शिक्षा-दीक्षा लेते थे। उसके बाद मैंने एक ग्लोबल Buddhist Conference की थी और बहुतेक बौद्ध भिक्षुओं को मैं उस जगह पर ले गया था। और मुझे ये भी खुशी थी कि हम एक जगह पर खुदाई कर रहे थे तो वहां से तो हमें भगवान बुद्ध के अवशेष मिले हैं। सोने की एक डिबिया मिली है जो अभी एमएस यूनिवर्सिटी में रखी गई है। भविष्य में सपना है कि भगवान बुद्ध के जो अवशेष हैं, वहां एक भव्य भगवान बुद्ध का एक मंदिर बने और विशवभर में भगवान बुद्ध से प्रेरणा पाने वाले सबके लिए ये प्रेरणा का केंद्र बने। तो मेरा नाता.. मैं हमेशा अनुभव करता हूं कि कुछ विशेष कारण से भगवान बुद्ध के साथ हैं, उन विचारों के साथ है, उस करुणा और प्रेम के रास्ते के साथ है। मुझे आज बुद्ध पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर भगवान बुद्ध के चरणों में आ करके बैठने का अवसर मिला, उनका स्मरण करने का अवसर मिला और आप सबके दर्शन करने का अवसर मिला, मैं अपने आप को धन्य मानता हूँ।

मैं फिर एक बार नेपाल के लोगों के लिए भगवान बुद्ध से प्रार्थना करता हूं कि मेरे पीड़ित भाईयों को बहुत शक्ति दें और बहुत ही जलद हमारा ये प्यारा भाई ताकतवर बनें और शक्तिशाली बन करके हिमालय की गोद में फले-फूले, यही प्रार्थना करते हुए मैं मेरी वाणी को विराम देता हूं।

महाबोधि सोसाइटी श्री लंका में संबोधन
13 मार्च 2015

मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आज महाबोधक सोसायटी के इस पवित्र स्थल पर आ करके सभी पूज्यों संतों के आशीर्वाद लेने का अवसर मिला और मैं इसके लिए विशेष रूप से महाबोधि सोसायटी के अध्यक्ष जी का हृदय से धनयवाद देता हूँ। मैं आपका विशेष रूप से आभारी हूँ कि आपने मुझे सांची relics के दर्शन करने का और पुण्य पाने का अवसर दिया।

बुद्धभिक्षुओं के आर्शीवाद मिले। उन्होंने मेरे लिए, भारत और श्रीलंका के लिए, हमारी एकता के लिए, हमारी प्रगति के लिए प्रार्थना की - यह बात अपने आप में हृदय को छूने वाली है और मैं फिर एक बार सबको प्रणाम करता हूँ।

श्रीलंका में सांस्कृतिक और राजनैतिक पुनर्जागरण में श्रीमद Anagarika Dharmapala की अहम भूमिका रही है। बौद्ध धर्म के पुनरूथान के लिए महाबोधि के सोसायटी के गठन में उनकी अहम भूमिका रही है। बौद्ध धर्म के पुनरूथान के लिए महाबोधि के सोसायटी के गठन में उनकी अहम भूमिका

रही है। इस सोसायटी ने बौद्धगया में स्थित प्राचीन महाबोधी मंदिर की महिमा को बहाल करने में भी अहम योगदान दिया है।

कहा जाता है कि विश्व में सबसे पुराना बौद्ध धर्म पर चलने वाला कोई अगर देश है तो वो देश श्रीलंका है। आज विश्व के कई देशों में हम अगर जाएंगे तो हमें श्रीलंका के बोधभिक्षु वहां पर इस पवित्र काम को करते हुए नजर आते हैं।

बुद्ध हम सबको जोड़ते हैं, और मेरा तो यह सौभाग्य रहा जैसे स्वामी जी ने बताया कि जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था तो मैंने एक अंतर्राष्ट्रीय बुद्ध सभा का आयोजन किया था। दुनिया के 20 अधिक देशों से अधिक देशों से सभी महानुभव आये थे, आप भी पधारे थे, क्योंकि सामान्य ऐसी छवि है कि बुद्ध भारत के पूर्वी हिस्से में ही प्रभावित थे लेकिन मैं तो गुजरात से, भारत के पश्चिमी छोर से आता हूँ, लेकिन वहां पर भी बुद्ध का उतना ही प्रभाव था।

मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मेरा जन्म जिस गांव में हुआ वर्णगढ़ Chinese Philosopher Hiuen Tsang करीब आठ सौ साल पहले हिंदुस्तान आए थे और उनहोंने आठ सौ साल पहले भारत का जो वर्णन लिखा है, उसमें वो लमबे अरसे तक मेरे गांव में रहे थे। और उन्होंने लिखा है कि मेरे गांव में जहां मैं पैदा हुआ, वहां पर बुद्ध भिक्षुओं की Training का एक बहुत बड़ा Centre था। 10 हजार से ज्यादा बुद्धभिक्षु वहां रह सके, इतना बड़ा Hostel था।
तो Hiuen Tsang की इस बात को लेकर के जब मैं मुख्यमंत्री बना, तो मैंने मेरे गांव में excavation करवाया। और आप सबको जानकार के खुशी होगी कि जब excavation किया तो सारी चीजें मिल आई - वो बड़ी-बड़ी Hostel, वो बुद्ध भिक्षुओं का Training का Centre. और इतना ही नहीं, हमारे यहां एक जगह है गुजरात में देव की मोरी, उस जगह पर excavation किया तो भगवान बुद्ध के relics हमें एक Golden Box में मिले।

और मैं थेरो जी को ले गया था, वो सारी चीजें दिखाने के लिए, उनको दर्शन कराने के लिए ले

गया था।

और मेरा एक मन का Dream रहा, जब मैं मुख्यमंत्री था कि जहां से हमें भगवान बुद्ध के relics मिले हैं, वहां पर मेरा सपना है एक भव्य भगवान बुद्ध का मंदिर बनाना। मैं हमेशा अनुभव करता हूँ कि आज विश्व जिस संकटों से गुजर रहा है। जो आतंकवाद के साए में दुनिया भयभीत होकर के जी रही है, बुद्ध का रास्ता यही है जो युद्ध से मुक्ति दिलाता है।

और मैं फिर एक बार इस पवित्र स्थल पर सब संतों का आशीर्वाद लेने का मुझे सौभाग्य भी मिला... मैं फिर एक बार सबको प्रणाम करता हूँ। स्वागत सम्मान के लिए प्रणाम करता हूँ, और आप सबका धन्यवाद करता हूँ।

*****

संघर्ष निषेध और पर्यावरण चेतना के लिए विश्व हिन्दू-बौद्ध पहल : ‘संवाद’ में प्रधानमंत्री का संबोधन 3 सितम्बर 2015

संघर्ष निषेध और पर्यावरण चेतना के लिए विश्व हिन्दू-बौद्ध पहल, संवाद के उद्घाटन पर मुझे उपस्थित होने में अत्यंत हर्ष हो रहा है। दुनिया के जिन देशों में बौद्ध धर्म जीवन पद्धति है, वहां से जो अध्यात्मिक अधिष्ठातागण, विद्वान और नेता यहां एकत्र हुए हैं, वह निश्चित रूप से एक अत्यंत उच्च सभा है।

यह बहुत हर्ष का विषय है कि यह सम्मेलन भारत के बोधगया में आयोजित हो रहा है। भारत इस प्रकार के सम्मेलन की मेजबानी करने के लिए एक आदर्श स्थान है। हम भारतीयों को इस बात पर बहुत गर्व है कि इसी भूमि से गौतम बुद्ध ने पूरी दुनिया को बौद्ध सिद्धांतों से परिचित कराया।

गौतम बुद्ध का जीवन सेवा, करूणा और सबसे महत्वपूर्ण त्याग की भावना को परिलक्षित करता है। वे बहुत सम्पन्न परिवार में पैदा हुए। उन्हें बहुत कम कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद वर्ष गुजरने के साथ-साथ उनमें मानवीय पीड़ा, रुग्णता, बुढापा और मृत्यु के बारे में विशेष चेतना पैदा हुई। वे इस बात पर दृढ़ थे कि भौतिक संपदा जीवन का उद्देश्य नहीं होती। मानवीय संघर्ष से उन्हें अरूचि थी। और, उसके बाद वे एक शांत और करूणामय समाज की रचना के लिए निकल पड़े। अपने समय में समाज को दर्पण दिखाने का साहस और दृढ़ता उन्होंने दिखाई। उन्होंने नकारात्मक गतिविधियों और तौर-तरीकों से मुक्त होने का रास्ता दिखाया।

गौतम बुद्ध क्रांतिवीर थे। उन्होंने ऐसे विश्वास का पोषण किया जिसके मूल में मानव ही है और कोई नहीं। मनुष्य के अंतर में ईश्वरता होता है। इस तरह उन्होंने ईशवरविहीन विश्वास की रचना की। उन्होंने ऐसे विश्वास की रचना की, जहां अलौकिकता बाहरी दुनिया में नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतर में निहित है। अपने सिद्धांत के तीन शब्द ‘अपप दीपो भव’ यानी ‘अपना दीप स्वयं बनो’ के आधार पर गौतम बुद्ध ने मानवता को महान प्रबंधन सीख प्रदान की। उन्हें मानव पीड़ा को पैदा करने वाले विचारहीन संघर्षों से बहुत दु:ख होता था। उनके विश्व दृष्टिकोण में अहिंसा मूल सिद्धांत है।

गौतम बुद्ध का संदेश और उनकी सीख इस सम्मेलन की विषय वास्तु में स्पष्टता से व्यक्त हो रही है – संघर्ष निषेध, पर्यावरण चेतना और मुक्त तथा सपष्ट संवाद की अवधारणा की विषय वस्तु। ये तीनों विषय वसतुएं एक-दूसरे से अलग प्रतीत होती हैं, लेकिन ये आपस में समावेशी हैं। वास्तव में ये आपस में एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे का समर्थन करती हैं।

पहली विषय वस्तु संघर्ष है, जो मनुष्यों, धर्मों, समुदायों और देशों- राज्यों तथा अराजक तत्वों और यहां तक कि पूरी दुनिया में व्यापत है। असहिष्णु अराजक तत्व आज लम्बे भूभाग पर कब्जा कर चुके हैं और मासूम लोगों पर बर्बर हिंसा कर रहे हैं। दूसरा संघर्ष प्रकृति और मनुष्य, प्रकृति और विकास और प्रकृति और विज्ञान के बीच चल रहा है। इन संघर्षों के हल के लिए आज ‘एक हाथ दे, एक हाथ ले’ का आधार ही काफी नहीं है, बल्कि इसके लिए संवाद की आवश्यकता है, ताकि उसे टाला जा सके।

खपत को निजी तौर पर कम करना और पर्यावरण चेतना संबंधी नैतिक मूल्य एशिया की दार्शनिक परम्पराओं, खासतौर से हिंदुत्व और बौद्ध धर्म में बहुत गहराई में स्थित हैं। बौद्ध धर्म ने, कनफ्यूशियसवाद, ताओवाद और शिन्टोवाद जैसे विश्वासों के साथ मिलकर पर्यावरण को सुरक्षित करने का महान दायित्व वहन किया है।हिंदुत्वऔर बौद्ध धर्म धरतीमाता के अपने महान सिद्धांतों के आधार पर दृष्टिकोणों में बदलाव ला सकते हैं।

दुनिया के सामने जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती है। इसके लिए सामुहिक मानव प्रयास और समेकित प्रत्युत्तर की आवश्यकता है। भारत में प्राचीनकाल से ही विश्वास और प्रकृति के बीच गहरा संबंध रहा है। बौद्ध धर्म और पर्यावरण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

बौद्ध परम्परा अपने समस्त ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों सहित प्राकृतिक विश्व के साथ अपने अंतर को जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है, क्योंकि बौद्ध दृष्टिकोण से किसी भी वस्तु का भिन्न अस्तित्व नहीं है। पर्यावरण की अशुद्धता मन को प्रभावित करती है, और मन की अशुद्धता पर्यावरण को दूषित करती है। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए हमें अपने मन को शुद्ध करना होगा। पारिस्थितकीय संकट वास्तव में मन के असंतुलन की प्रतीक्षाए है। इसलिए भगवान बुद्ध ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता को बहुत महत्व दिया। उन्होंने जल संरक्षण के उपाय किये और भिक्षुओं को जल संसाधनों को दूषित करने से रोका। भगवान बुद्ध के उपदेशों में प्रकृति, वन, वृक्ष और समस्त जीवों का कल्याण महान भूमिका निभाता है।

मैंने एक पुस्तक 'कन्वीनियंट एक्शन' लिखी थी, जिसे भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने विमोचित किया था। अपनी पुस्तक में मैंने मुख्यमंत्री के रूप में जलवायु परिवर्तन से निपटने के विषय में अपने अनुभवों को साझा किया है।

वयक्तिगत रूप से वैदिक वांगमय के अपने अध्ययन के आधार पर मुझे यह शिक्षा मिली कि मनुष्यों और प्रकृति-माता के बीच मजबूत बंधन होता है। हम सभी महात्मा गांधी के न्यास प्रणाली सिद्धांत के बारे में जानते हैं।

इस संदर्भ में मैं यह कहना चाहूँगा कि हमारी मौजूदा पीढ़ी का यह दायित्व है कि वह भावी पीढ़ी के लिए समृद्ध प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखने का प्रयास करे। विषय केवल जलवायु परिवर्तन का नहीं है, बल्कि जलवायु न्याय का है। मैं फिर दोहराता हूँ कि विषय केवल जलवायु परिवर्तन का नहीं है, बल्कि जलवायु न्याय का है।

मेरा मानना है कि जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव सबसे अधिक निर्धन और वंचित लोगों पर होता है। जब प्राकृतिक आपदा आती है, तो सबसे जयादा मुसीबत इन्हीं पर टूटती है। जब बाढ़ आती है, ये बेघर हो जाते हैं। जब भूकंप आता है, तो इनके घर तबाह हो जाते हैं। जब सूखा पड़ता है, सबसे जयादा प्रभाव इन पर पड़ता है और जब कड़के की ठंड पड़ती है, तब भी बे-घरबार लोग सबसे जयादा मुसीबतें झेलते हैं। हम जलवायु परिवर्तन को इस तरह लोगों को प्रभावित करने नहीं दे सकते। इसलिए मैं मानता हूँ कि चर्चा जलवायु परिवर्तन की बजाय जलवायु न्याय पर हो। तीसरी विषयवस्तु – संवाद को प्रोत्साहन – के मद्देनजर वैचारिक दृष्टिकोण के बजाय दार्शनिक दृष्टिकोण होना चाहिए। बिना उचित संवाद के संघर्ष निषेध की ये दोनों विषयवस्तुएँ न तो संभव हैं और न कारगर।

हमारे संघर्ष के संकल्प तंत्रों में गंभीर सीमाएं अधिक से अधिक रूप में स्पष्ट होती जा रही हैं। हमें रक्तपात और हिंसा को रोकने के लिए महत्वपूर्ण, सामूहिक और रणनीतिक प्रयास करने की जरूरत है। इस प्रकार यह आश्चर्यजनक नहीं है कि विश्व बौद्ध धर्म का संज्ञान ले रहा है। यह ऐतिहासिक एशियाई परंपराओं और मूल्यों की पहचान भी है जिसे संघर्ष को रोकने तथा विचारधारा के रास्ते से दर्शन शास्त्र की ओर बढ़ने के लिए एक प्रतिमान के बदलाव के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इस सम्मेलन की पूरी अवधारणा का सार, जिसमें पहले दो विषय संघर्ष को टालना और पर्यावरण चेतना शामिल हैं, जिसमें परिचर्चा के ये भाग

निहित हैं। ये हमारा "उनहें बनाम हमें'' के विचारधारा दृष्टिकोण से दार्शनिक विचारधारा की ओर बदलाव लाने का आह्वान करते हैं। विश्व की विचारधारा चाहे वह धार्मिक या धर्मनिरपेक्षता से दर्शन की ओर परिवर्तन करने की हो, उसके बारे में जानकारी दिए जाने की जरूरत है। पिछले साल जब मैंने संयुक्त राष्ट्र में संबोधन किया था, तो मैंने संक्षेप में यह उल्लेख किया था कि विशव को वैचारिक दृष्टिकोण से दार्शनिक दृष्टिकोण में बदलाव करने की जरूरत है। एक दिन बाद मैंने विदेशी संबंधों की परिषद को संबोधित करते हुए इस अवधारणा का कुछ और विसतार किया था। दर्शन का सार यह है कि वह सीमित विचारधारा नहीं है जबकि विचारधारा सीमित होती है इसलिए दर्शन न केवल परिचर्चा की अनुमति देता है बल्कि यह चर्चा के माध्यम से लगातार सत्य की खोज में रहता है। पूरा उपनिषद साहित्य चर्चाओं का ही संकलन है। विचारधारा केवल बिना रोके सत्य में विशवास करती है इसलिए विचारधाराएं जो चर्चा के दरवाजे बंद कर देती हैं उनका झुकाव हिंसा की ओर होता है जबकि दर्शन हिंसा को बातचीत के द्वारा रोकने का प्रयत्न करता है।

इस प्रकार हिंदू और बौद्ध धर्म इस बारे में अधिक दार्शनिक चिंतन वाले हैं और वे केवल विश्वास के तंत्र ही नहीं हैं।

यह मेरा दृढ़ विशवास है कि सभी समस्याओं का समाधान बातचीत से किया जा सकता है। पहले यह विशवास था कि बल, शक्ति का सूचक है। अब, शक्ति को विचारधारा की सामर्थय और प्रभावी संवाद के माध्यम से ही प्राप्त करना चाहिए। हमने युद्ध के विनाशकारी प्रभावों को देखा है। 20 वीं शताब्दी के पहले 50 सालों में दुनिया में दो विशव युद्धों की भयानकता देखी थी।

अब, युद्ध की प्रकृति बदल रही है और खतरे बढ़ रहे हैं। अब एक बटन के दबाने से कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों की जान जा सकती है या लंबा युद्ध छिड़ सकता है। हम सब यहाँ यह महत्वपूर्ण कर्तव्य निभाने के लिए एकत्रित हुए हैं ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि हमारी भावी पीढ़ियां शांति, गरिमा और आपसी सम्मान का जीवन व्यतीत कर सकें। हमें संघर्ष मुक्त विशव के बीज बोने की जरूरत है और इस प्रयास में बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म का महान योगदान है।

जब हम बातचीत के बारे में बात करते हैं तो महत्वपूर्ण यह है कि बातचीत किस तरह की होनी चाहिए? यह वार्ता ऐसी होनी चाहिए जो क्रोध या प्रतिकार पैदा न करे। ऐसी वार्ता का सबसे बड़ा उदाहरण आदि शंकर और मंडण मिश्रा के बीच हुआ शास्त्रार्थ था।

आधुनिक समय के लिए भी यह प्राचीन उदाहरण समरणीय और वर्णन योगय है। आदि शंकर एक युवा जन थे जो धार्मिक कर्मकांडों को अधिक महत्व नहीं देते थे जबकि मंडण मिश्रा एक बुजुर्ग विद्वान थे जो अनुष्ठानों के अनुयायी थे और पशु बलि में भी विश्वास करते थे।

आदि शंकराचार्य कर्मकांडों के ऊपर चर्चा और बहस के माध्यम से यह सथापित करना चाहते थे कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए ये कर्मकांड आवशयक नहीं हैं जबकि मंडण मिश्रा यह सिद्ध करना चाहते थे कि कर्मकांडों को नकारने में शंकर गलत हैं। प्राचीन भारत में विद्वानों के दरम्यान संवेदनशील मुद्दों को वार्ता के द्वारा सुलटा लिया जाता था और ऐसे मुद्दे सड़कों पर तय नहीं होते थे। आदि शंकर और मंडण मिश्रा ने शास्त्रार्थ में भाग लिया और जिसमें शंकर विजयी हुए। लेकिन महत्वपूर्ण मुद्दा बहस का नहीं है बल्कि यह है कि वह बहस कैसे आयोजित की गई। यह एक ऐसी दिलचस्प कहानी है जो मानवता के लिए सर्वकाल में परिचर्चा का उच्चतम रूप प्रस्तुत करती रहेगी।

यह सहमति थी कि अगर मंडण मिश्रा हार जाएंगे तो वह गृहसथ छोड़ देंगे और सनयास अपना लेंगे। अगर आदि शंकर पराजित हो जाएंगे तो वह सन्यास छोड़ देंगे और विवाह करके गृहसथ जीवन अपना लेंगे। मंडण मिश्रा, जो उच्च कोटि के विद्वान थे, उनहोंने आदि शंकर को जो एक युवा थे, उनहें कहा कि मंडण मिश्रा से उनकी समानता नहीं है इसलिए वे अपनी पंसद के किसी वयक्ति को पंच चुन लें।

आदि शंकर ने मंडण मिश्रा की पत्नी जो स्वंय विदुषी थी, उसे पंच के रूप में चुन लिया। अगर मंडण मिश्रा हार जाएंगे तो वह अपने पति को खो देगी। लेकिन देखिए, उसने क्या किया? उसने मंडणा मिश्रा और शंकर, दोनों से ताजे फूलों के हार पहनने के लिए कहा और कहा कि उसके बाद ही शास्त्रार्थ शुरू होगा। उसने कहा कि जिसके फूलों के हार की ताजगी समाप्त हो जाएगी उसे ही पराजित घोषित किया जाएगा। ऐसा क्यों? क्योंकि आप दोनों में जिसे क्रोध आ जाएगा उसका शरीर गर्म हो जाएगा जिसके कारण माला के फूलों की ताजगी समाप्त हो जाएगी। क्रोध स्वयं ही पराजय का संकेत है। इस तर्क पर मंडण मिश्रा को शास्त्रार्थ में पराजित घोषित किया गया। उन्होंने सन्यास अपना लिया और शंकर के शिष्य बन गए। यह बातचीत की महत्ता को दर्शाता है कि बातचीत बिना क्रोध और संघर्ष के होनी चाहिए।

आज, इस शानदार सभा में, हम अलग अलग जीवन शैली के साथ विभिन्न देशों के लोग शामिल हैं लेकिन जो बंधन हमें आपस में बांधता है वह यह तथ्य है कि हमारी सभ्यताओं की जड़ें साझा दर्शन, इतिहास और विरासत में हैं। बौद्ध धर्म और बौद्ध विरासत सबको एकजुट रखने वाला अनिवार्य कारक है।

वे कहते हैं कि यह सदी, एशियाई सदी होने जा रही है। मैं स्पष्ट कह रहा हूँ कि गौतम बुद्ध द्वारा दिखाए गए मार्ग और आदर्शों को अपनाए बिना यह सदी एशियाई सदी नहीं बन सकती है।

मैं भगवान बुद्ध को वैसी ही सामूहिक आध्यात्मिक भलाई करते हुए देख रहा हूँ जैसा वैश्विक व्यापार ने हमारी सामूहिक आर्थिक भलाई के लिए तथा डिजिटल इंटरनेट ने हमारी सामूहिक बौद्धिक भलाई के लिए क्या किया है। मैंने भगवान बुद्ध को 21वीं शताब्दी में राष्ट्रीय सीमाओं के पार विभिन्न विश्वास तंत्रों के परे राजनीतिक विचारधाराओं से अलग धैर्य की भावना के लिए समझ को प्रोत्साहित करने वाले पुल की भूमिका निभाते और हमें सहनशीलता और सहानुभूति से प्रकाशित करते हुए देखा है।

आप उस राष्ट्र का भ्रमण कर रहे हैं जिसे अपनी बौद्धिक विरासत पर बहुत गर्व है। मेरा गृह नगर गुजरात में बड़नगर है जहां ऐसे अनेक स्थल हैं जहां बुद्ध अवशेष पाए जाते हैं और कई स्थान तो ऐसे हैं जिनका चीनी यात्री और इतिहासकार ह्वेन त्सांग ने दौरा किया था।

सार्क क्षेत्र बौद्ध धर्म के पवित्र स्थानों- लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर का घर है। इन स्थलों पर आसियान देशों और चीन, कोरिया, जापान, मंगोलिया और रूस से अनेक तीर्थयात्री आते हैं। मेरी सरकार भारत भर में इस बौद्ध विरासत को प्रोत्साहन देने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है और भारत पूरे एशिया में बौद्धिक विरासत को बढ़ाने में शीर्ष भूमिका निभा रहा है। यह तीन दिवसीय बैठक ऐसा ही एक प्रयास है।

*****

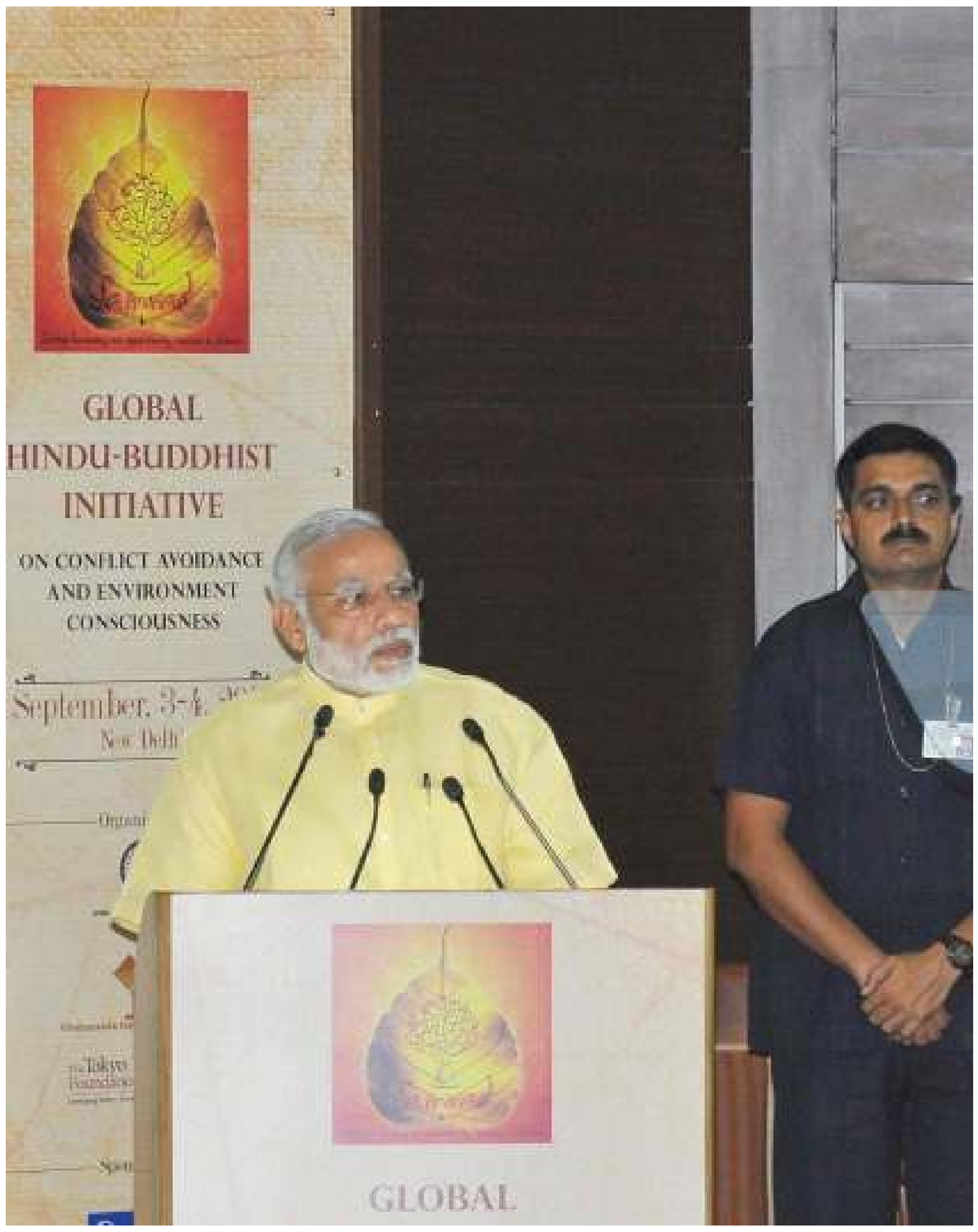

प्रधानमंत्री के बोध गया में महाबोधि मंदिर में संबोधन
5 सितम्बर, 2015

बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविन्द

मंगोलिया के आदरणीय खम्बा लामा डेम्बरेल
ताइवान के आदरणीय मिंग क्वांग शी

वियतनाम के आदरणीय थिक थिन टैम

रूस के आदरणीय तेलो तुल्कु रिन्पोचे

श्रीलंका के आदरणीय बनागला उपातिस्सा

आदरणीय लामा लोबज़ेंग

मेरी साथी मंत्रिगण, श्री किरेन रिजिजु
भूटान के मंत्री लियोनपो नाम्गे दोरजी

मंगोलिया के मंत्री ब्यारसैखान

महासंघ के आदरणीय सदस्यगण, विदेशों से आए मंत्री और राजनयिक,

आप सब के बीच आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। बोध गया आकर मैं अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूँ। पंडित जवाहर लाल नेहरू और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के बाद मुझे इस पवित्र स्थान पर आने का मौका मिला है।

मैं आप सब लोगों से एक अत्यंत विशेष दिन पर मिल रहा हूँ। आज हम देश में हमारे दूसरे राष्ट्रपति महान विद्वान और शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर शिक्षक दिवस मना रहे हैं।

इस विचार गोष्ठी में हमने विश्व के इतिहास में सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक गौतम बुद्ध के बारे में बात की है। सदियों से करोड़ों लोग उनकी शिक्षा से प्रेरणा लेते हैं।
आज हम जन्माष्टमी भी मना रहे हैं, जो भगवान कृष्ण का जन्म दिवस है। विश्व को भगवान कृष्ण से बहुत कुछ सीखना चाहिए। जब हम भगवान कृष्ण के बारे में बात करते हैं तो हम कहते हैं श्री कृष्णम वंदे जगतगुरुम- श्री कृष्ण सभी गुरूओं के गुरू हैं।

गौतम बुद्ध और भगवान कृष्ण दोनों ने ही विश्व को बहुत कुछ सिखाया है। इस सम्मेलन का विषय एक प्रकार से इन दो महान व्यक्तित्वों के आदर्श और सिद्धांतों से प्रेरित हैं।

महाभारत का युद्ध शुरू होने से पहले श्रीकृष्ण ने अपना संदेश दिया और भगदान बुद्ध ने बार-बार युद्ध से ऊपर उठने पर जोर दिया। उन दोनों के द्वारा दिया गया संदेश धर्म संस्थापना के बारे में था।

दोनों ने सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को अधिक महत्व दिया था। गौतम बुद्ध ने अष्टांग मार्ग और पंचशील दिए थे, जबकि श्रीकृष्ण ने कर्मयोग के रूप में जीवन का अमूल्य पाठ पढ़ाया। इन दो पवित्र

आत्माओं में मतभेद से ऊपर उठाकर लोगों को साथ में लाने की शक्ति थी। इस समय में उनकी शिक्षा व्यावहारिक और शास्वत सबसे अधिक उपयुक्त है। जिस स्थान पर हम यह सम्मेलन कर रहे हैं, यह और विशेष हो गया है। हम बोध गया में सम्मेलन कर रहे हैं, जो मानवता के इतिहास में एक विशेष महत्व की भूमि है।

यह ज्ञानोदय की भूमि है। वर्षों पहले बोध गया को सिद्धार्थ मिला था, लेकिन बोध गया ने विश्व का भगवान बुद्ध दिया, जो ज्ञान, शांति और संवेदना के प्रतीक हैं।

इसीलिए जन्माष्टमी के पवित्र अवसर पर यह स्थान बातचीत और सम्मेलन के लिए आदर्श स्थान है और शिक्षक दिवस के अवसर पर ये स्थान अनूठा हो गया है।

परसो मुझे दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ के सहयोग से विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय फाउंडेशन और टोक्यो फाउंडेशन द्वारा आयोजित "संघर्ष परिहार एवं पर्यावरण चेतना" पर पहले अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू बौद्ध कदम के उद्घाटन समारोह में भाग लेने का मौका मिला था।

सम्मेलन का परिपेक्ष्य संघर्ष समाधान से बदलकर संघर्ष परिहार और पर्यावरण नियमन से हटाकर पर्यावरण जागरूकता के बारे में था।

मैंने अपने विचार दो गंभीर विषयों पर साझा किए, जो आज सबसे अधिक मानवता के लिए चुनौती बन गए हैं। मैंने स्मरण किया कि किस तरह से विश्व आज संघर्ष समाधान प्रक्रियाओं और पर्यावरण नियमन के रूप में बुद्ध की ओर देख रहा है।

आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं तथा अधिकतर बौद्ध समुदाय के विद्वानों ने दो दिवसीय सम्मेलन में इन दो मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए। दो दिवसीय सम्मेलन की समाप्ति पर टोक्यो फाउंडेशन ने घोषणा की कि उन्होंने इसी प्रकार का सम्मेलन जनवरी, 2016 में आयोजित करने का फैसला किया है और अन्य बौद्ध राष्ट्रों ने भी इसी तरह के सम्मेलन अपने देशों में आयोजित करने को भी कहा। यह एक विलक्षण प्रगति ऐसे समय पर हुई है, जब आर्थिक और सामुदायिक रूप में एशिया का उदय हो रहा है।

दो दिवसीय सम्मेलन में इन दोनों मुद्दों पर मोटे तौर पर सहमति बनी। संघर्ष के मुद्दे पर जो अधिकतर धार्मिक असहिष्णुता के कारण होती है, पर सभी प्रतिभागी सहमत थे कि जब किसी के धर्म को अपनाने की स्वतंत्रता कोई समस्या नहीं है तो कट्टरपंथी अपने सिद्धांतों को दूसरों पर थोपने की कोशिश करते हैं और जिससे संघर्ष पैदा होता है। पर्यावरण पर सम्मेलन में सभी इस बात से सहमत थे कि धर्मप्राकृतिक विरासत की संरक्षा पर जोर देता है, जो सतत विकास के लिए जोर देता है। यहां मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि संयुक्त राष्ट्र भी इस विचार से सहमत हैं कि स्थानीय लोगों की संस्कृति से जोड़कर सतत विकास हासिल किया जा सकता है।

मेरे विचार में यह विश्व विविधता के विकास मॉडल में एक सकारात्मक पहलु है। मैं कहना चाहता हूँ कि विश्व स्तर पर हिन्दू- बौद्ध समुदाय के लिए तैयार किया गया पारिस्थितिकी तंत्र विश्व के लिए अपने विचार आगे बढ़ाएगा।

भगवान बुद्ध की शिक्षा का सबसे अधिक लाभ हिन्दू दर्शन को मिला है। कई विद्वानों ने हिन्दुत्व पर बुद्ध के असर का विश्लेषण किया है। आमजन के लिए बुद्ध इतने श्रद्धेय थे कि जयदेव ने अपने गीत गोविंद में उनकी महाविष्णु के रूप में प्रशंसा की, जो अहिंसा का प्रचार करने के लिए भगवान के रूप में अवतरित हुए। इसलिए हिन्दुत्व बुद्ध के

आगमन के बाद बौद्ध हिन्दुत्व और हिन्दू बौद्ध बन गए। आज वे एक-दूसरे में पूरी तरह घुलमिल गए हैं।

स्वामी विवेकानंद ने बुद्ध की इस प्रकार प्रशंसा की।

उनके शब्दों मेः

जब बुद्ध का जन्म हुआ, उस समय भारत को एक महान आध्यात्मिक नेता, एक पैगम्बर की आवश्यकता थी। बुद्ध न वेद, न जाति, न पुजारी और न ही परम्परा कभी किसी के आगे नहीं झुके। उन्होंने निर्भय होकर कारण जाने। सच्चाई के लिए निर्भय खोज, विश्व में रहने वाले प्रत्येक जीवन के लिए इस तरह का प्रेम कभी नहीं देखा गया। बुद्ध किसी भी शिक्षक से अधिक साहसी और अनुशासित थे। बुद्ध पहले मानव थे, जिन्होंने अपनी दुनिया को आदर्शवाद का एक पूरा तंत्र दिया। वे अच्छे के लिए अच्छे थे और उन्हें प्रेम के लिए प्रेम किया गया।

बुद्ध समानता के बड़े समर्थक थे।

बोध गया में बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिससे हिन्दुत्व का भी ज्ञानोदय हुआ। मैं बौद्ध धार्मिक और आध्यात्मिक नेताओं की घोषणा को पढ़कर प्रसन्न हूँ। ये घोषणाएं कठिन, कड़े परिश्रम और व्यापक बातचीत का परिणाम है और इसलिए यह एक पथप्रदर्शक आलेख है, जो हमें आगे का रास्ता दिखाएगा। एक बार फिर मेरी ओर से आप सभी को बधाई और शुभकामनाएं। इस सम्मेलन से आशा है कि संघर्ष को टालकर सामुदायिक सौहार्द और विश्व शांति के लिए बातचीत का खाका तैयार होगा।

आप सब का धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद।

मुझे उम्मीद है कि अगले तीन दिनों में भरपूर जीवंत और बहुमूल्य चर्चाऐं होंगी और हम एक साथ बैठकर इस बारे में विचार करेंगे कि किस तरह विश्व को शांति, संघर्ष के संकल्प, स्वच्छ और हरित विश्व की ओर ले जाएं।

मैं एक दिन बाद बोधगया में आपसे मिलने के लिए उत्सुक हूँ।

धन्यवाद।

*****

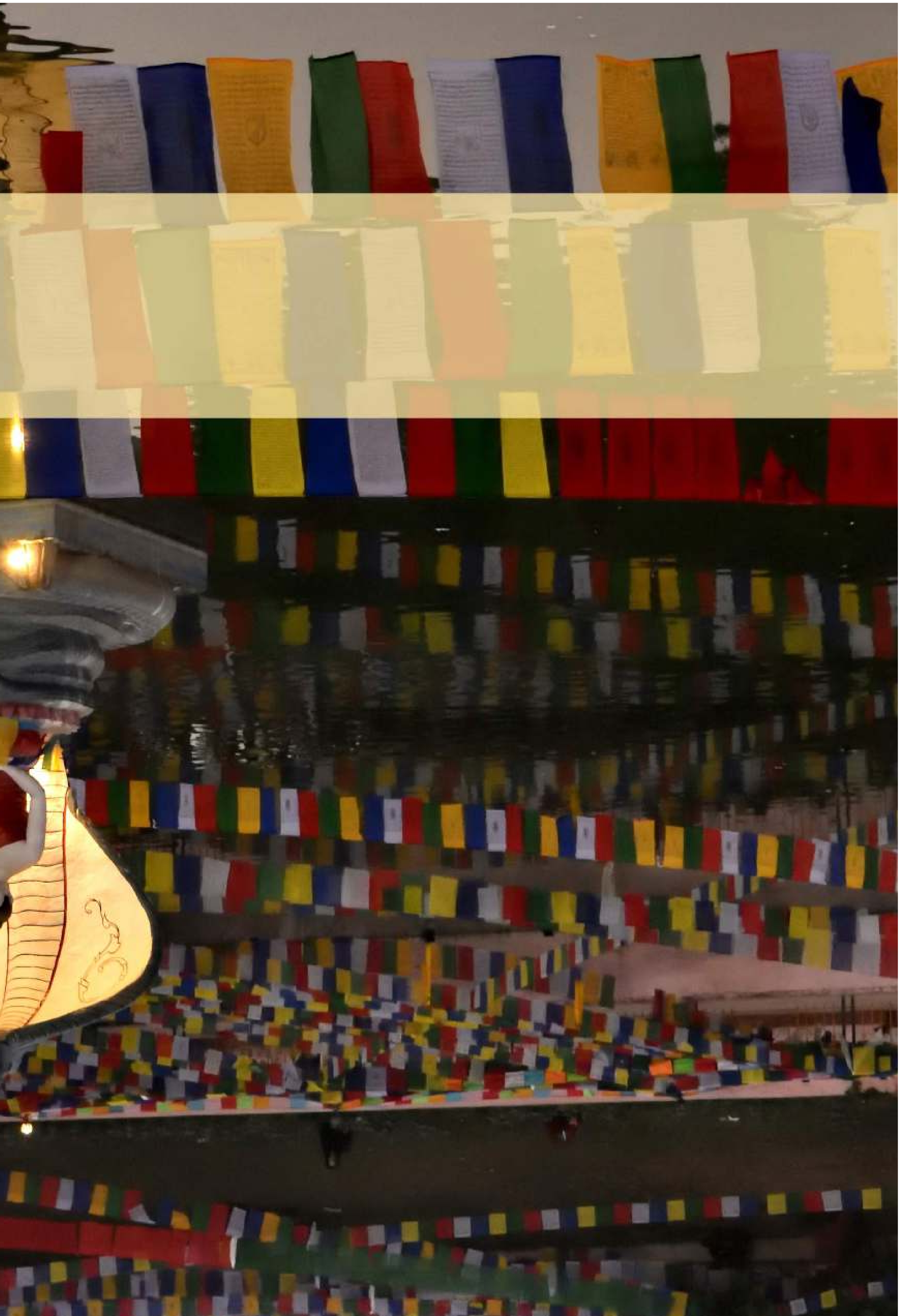

बुद्ध भगवान और बौद्ध विषयों के प्रमुख उल्लेख

अहमदाबाद में ज़ेन गार्डेन और काईजेन अकैडमी के लोकार्पण के अवसर पर प्रधानमंत्री का सम्बोधन, 27 जून 2021

नमस्कार!
कोन्नीचीवा।

केम छो

ज़ेन गार्डेन और काईज़ेन अकैडमी के लोकार्पण का ये अवसर भारत जापान के सम्बन्धों की सहजता और आधुनिकता का प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि Japanese ज़ेन गार्डन और काईज़ेन Academy की ये स्थापना, भारत और जापान के रिश्तों को और मजबूत करेगी, हमारे नागरिकों को और करीब लाएगी।

विशेष रूप से, मैं ह्योगो प्री-फेक्चर के लीडर्स का, मेरे अभिन्न मित्र गवर्नर श्रीमान ईदो तोशीजो को विशेष रूप से इस समय अभिनन्दन करता हूँ। गवर्नर ईदो 2017 में स्वयं अहमदाबाद आए थे।

अहमदाबाद में ज़ेन गार्डन और काईज़ेन Academy की स्थापना में उनका और ह्योगो International Association का बहुमूल्य योगदान रहा है। मैं Indo-Japan Friendship Association of Gujarat के साथियों को भी बधाई देता हूँ। उन्होंने भारत जापान संबंधों को ऊर्जा देने के लिए निरंतर उल्लेखनीय कार्य किया है। Japan Information and Study Centre भी इसकी एक मिसाल है।

साथियों,
भारत और जापान जितना बाहरी प्रगति और उन्नति के लिए समर्पित रहे हैं, उतना ही आंतरिक शांति और प्रगति को भी हमने महत्व दिया है। जापानीज़ ज़ेन गार्डेन, शांति की इसी खोज की, इसी सादगी की एक सुंदर अभिव्यक्ति है। भारत के लोगों ने सदियों से जिस शांति, सहजता और सरलता को योग और आध्यात्म के जरिए सीखा समझा है, उसी की एक झलक उन्हें यहाँ दिखेगी। और वैसे भी, जापान में जो 'ज़ेन' है, वही तो भारत में 'ध्यान' है। बुद्ध ने यही ध्यान, यही बुद्धत्व संसार को दिया था। और जहाँ तक 'काईज़ेन' की संकल्पना है, ये वर्तमान में हमारे इरादों को मजबूती की , निरंतर आगे बढ़ने की हमारी इच्छाशक्ति का जीता जागता सबूत है।

आप में से बहुत से लोग जानते हैं कि काईज़ेन का literal meaning होता है 'improvement', लेकिन इसका आंतरिक अर्थ और भी ज्यादा व्यापक है। ये सिर्फ improvement नहीं, continuous improvement पर बल देता है।

साथियों,
जब मैं मुख्यमंत्री बना, तो उसके कुछ समय बाद काईजेन को लेकर गुजरात में पहली बार गंभीर प्रयास शुरू हुए थे। हमने काईजेन का बाकायदा अध्ययन करवाया था, उसे लागू करवाया था और 2004 का समय था जब पहली बार administrative training के दौरान काईजेन पर इतना जोर

दिया गया था। फिर अगले साल 2005 में गुजरात के टॉप सिविल सर्वेन्ट्स के साथ चिंतन शिबिर हुआ, तो सभी को हमने काईजेन की ट्रेनिंग दी। फिर हम इसे गुजरात की शिक्षा व्यवस्था तक ले गए, अनेक सरकारी कार्यालयों तक ले गए। जिस continuous improvement की बात मैं यहां कह रहा था, वो भी लगातार जारी रहा। हमने सरकारी दफ्तरों से ट्रक भर-भर के बेवजह का सामान बाहर किया, प्रक्रियाओं में सुधार किया, उन्हें और आसान बनाया।

इसी तरह हेल्थ डिपार्टमेंट में भी काईजेन की प्रेरणा से बहुत बड़े-बड़े सुधार किए गए। हजारों डॉक्टरों, नर्सों, हॉस्पिटल स्टाफ को इस काइजेन के model की ट्रेनिंग दी गई। हमने अलग-अलग डिपार्टमेंट में Physical Workshop पर काम किया, Process पर काम किया, लोगों को engage किया, उन्हें इससे जोड़ा। इन सबका बहुत बड़ा सकारात्मक प्रभाव गवर्नेंस पर पड़ा।

साथियों,

हम सब जानते है कि प्रगति के अंदर गवर्नेंस बहुत महत्वपूर्ण होता है। चाहे व्यक्ति के विकास की बात हो, संस्था का विकास हो, समाज या देश का विकास हो, गवर्नेंस बहुत Important Factor है। और इसलिए, मैं जब गुजरात से यहां दिल्ली आया, तो काईजेन से मिले अनुभवों को भी अपने साथ लाया। हमने PMO और केंद्र सरकार के अन्य डिपार्टमेन्ट्स में इसका प्रारंभ भी किया।इस वजह से कितने ही प्रोसेस और आसान बने, ऑफिस में बहुत सारी जगह को हमने ऑप्टिमाइज किया। आज भी केंद्र सरकार के कई नए विभागों में, संस्थाओं में, योजनाओं में काईजेन को अपनाया जा रहा है।

साथियों,
इस कार्यक्रम से जुड़े जापान के हमारे अतिथि जानते हैं कि मेरा व्यक्तिगत तौर पर जापान के साथ कितना जुड़ाव रहा है। जापान के लोगों का स्नेह, जापान के लोगों की कार्यशैली, उनका कौशल, उनका अनुशासन, हमेशा से प्रभावित करने वाला रहा है। और इसलिए मैंने जब भी कहा है- I wanted to create Mini-Japan in Gujarat, तो उसके पीछे मुख्य भाव रहा है कि जब भी जापान के लोग गुजरात आएं, तो उन्हें वैसी ही गर्मजोशी दिखे, वैसा ही अपनापन मिले। मुझे याद है वाइब्रेंट गुजरात समिट के प्रारंभ से ही जापान एक पार्टनर कंट्री के तौर पर इससे जुड़ गया था। आज भी वाइब्रेंट गुजरात समिट में सबसे बड़े जो डेलीगेशन आते है , उसमे एक जापान का ही होता है। और जापान ने गुजरात की धरती पर, यहां के लोगों के सामर्थ्य पर जो विश्वास जताया है, ये देखकर हम सबको संतोष होता है।

जापान की एक से बढ़कर एक कंपनियां आज गुजरात में काम कर रही हैं। मुझे बताया गया है कि इनकी संख्या करीब करीब 135 से भी ज्यादा है। ऑटोमोबिल से लेकर बैंकिंग तक, कंस्ट्रक्शन से लेकर फार्मा तक, हर सेक्टर की जापानी कंपनी ने गुजरात में अपना बेस बनाया हुआ है। सुजुकी मोटर्स हो, होन्डा मोटरसायकिल हो, मित्शुबिशी हो, टोयोटा हो, हिटाची हो, ऐसी अनेकों कंपनियां गुजरात में मैन्यूफैक्चरिंग कर रही हैं। और एक अच्छी बात ये है कि ये कंपनियां गुजरात के युवाओं का स्किल डवलपमेंट करने में भी बहुत मदद कर रही हैं। गुजरात में तीन, Japan-India Institute for Manufacturing, हर साल सैकड़ों युवाओं को स्किल ट्रेनिंग दे रहे हैं। कई कंपनियों का गुजरात की टेक्नीकल यूनिवर्सिटीज और ITI's से भी टाई-अप है।

साथियों,

जापान और गुजरात के संबंधों को लेकर कहने के लिए इतना कुछ है, कि समय कम पड़ जाएगा।

ये संबंध आत्मीयता, स्नेह और एक दूसरे की भावनाओं को, एक दूसरे की जरूरतों को समझने में और मजबूत हुए हैं। गुजरात ने हमेशा जापान को विशेष महत्व दिया है। अब जैसे JETRO ने ये जो Ahmedabad Business Support Centre खोला है, उसमें एक साथ पांच कंपनियों को plug and play work-space facility देने की सुविधा है। जापान की बहुत सारी कंपनियों ने इसका लाभ उठाया है। मैं कई बार जब पुराने दिनों के बारे में सोचता हूँ तो लगता है कि गुजरात के लोगों ने भी कितनी छोटी-छोटी बारीकियों पर ध्यान दिया है। मुझे याद है मुख्यमंत्री के तौर पर एक बार मैं जापान के डेलीगेशन के साथ बातचीत कर रहा था तो Informally एक विषय उठा। ये विषय बड़ा ही दिलचस्प था। जापान के लोगों को गॉल्फ खेलना बहुत पसंद है लेकिन गुजरात में golf courses का उतना प्रचलन ही नहीं था। इस बैठक के बाद विशेष प्रयास किया गया की गुजरात में golf courses का भी विस्तार हो। मुझे खुशी है कि आज गुजरात में कई golf courses हैं। कई रेस्टोरेन्ट्स भी ऐसे हैं जिनकी विशेषता जापानीज फूड है। यानि एक प्रयास रहा है कि जापान के लोगों को गुजरात में, Feel at Home कराया जा सके। हम लोगों ने इस बात पर भी बहुत काम किया कि गुजरात में जापानी भाषा बोलने वालों की संख्या भी बढ़े। आज गुजरात के प्रोफेशनल वर्ल्ड में बहुत से लोग ऐसे हैं जो आसानी से जापानी बोलते हैं। मुझे बताया गया है कि राज्य की एक यूनिवर्सिटी, जापानी भाषा सिखाने के लिए एक कोर्स भी शुरू करने जा रही है। एक अच्छी शुरुआत होगी।

मैं तो चाहूँगा कि गुजरात में, जापान के स्कूल सिस्टम का भी एक मॉडल बने। जापान के स्कूल सिस्टम का, वहां जिस तरह आधुनिकता और नैतिक मूल्यों पर साथ जोर दिया जाता है, उसका मैं बहुत प्रशंसक रहा हूँ। जापान के ताईमेई स्कूल में मुझे जाने का अवसर मिला था और वहां बिताए कुल पल मेरे लिए एक प्रकार से यादगार हैं।

उस स्कूल के बच्चों से बात करना, मेरे लिए आज भी एक अनमोल अवसर मैं कह सकता हूँ।

साथियों,
हमारे पास सदियों पुराने सांस्कृतिक सम्बन्धों का मजबूत विश्वास भी है, और भविष्य के लिए एक कॉमन विज़न भी! इसी आधार पर, पिछले कई वर्षों से हम अपनी Special Strategic and Global Partnership को लगातार मजबूत कर रहे हैं। इसके लिए PMO में हमने जापान-प्लस की एक विशेष व्यवस्था भी की है। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री और मेरे मित्र श्रीमान शिंजो अबे जब गुजरात आए थे, तो भारत-जापान रिश्तों को नई गति मिली थी। बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट का काम शुरू होने पर वो बहुत उत्साहित थे। आज भी उनसे बात होती है, तो वो अपने गुजरात दौरे को जरूर याद करते हैं। जापान के वर्तमान प्रधानमंत्री श्रीमान योशिहिदे सुगा भी बहुत सुलझे हुए व्यक्ति हैं। PM सुगा और मेरा ये विश्वास है कि Covid pandemic के इस दौर में, भारत और जापान की दोस्ती, हमारी पार्टनरशिप, global stability और prosperity के लिए और ज्यादा प्रासंगिक हो गई है। आज जब कई वैश्विक चुनौतियां हमारे सामने खड़ी हैं, तो हमारी ये मित्रता, हमारे ये रिश्ते, दिनोंदिन और मजबूत हों, ये समय की मांग है। और निश्चित तौर पर काईजेन academy जैसे प्रयास, इसका बहुत सुंदर प्रतिबिंब हैं।

मैं चाहूँगा कि काईज़ेन Academy जापान के वर्क-कल्चर का भारत में प्रचार-प्रसार करे, जापान और भारत के बीच business interactions बढाए। इस दिशा में पहले से जो प्रयास चल रहे हैं, हमें उन्हें भी नई ऊर्जा देनी है।जैसे गुजरात यूनिवर्सिटी और ओसाका के ओतेमोन गाकुइन University के बीच Indo-Japan Student Exchange Program है। ये प्रोग्राम पांच दशकों से हमारे रिश्तों को मजबूती दे रहा है। इसका और विस्तार किया जा सकता है। दोनों देशों के और संस्थानों के बीच में भी इस तरह की partnerships की जा सकती है।

मुझे विश्वास है, हमारे ये प्रयास इसी तरह निरंतरता से आगे बढ़ेंगे, और भारत-जापान मिलकर विकास की नई ऊंचाईयां हासिल करेंगे। मैं आज इस कार्यक्रम के माध्यम से, जापान को, जापान के लोगों को, टोक्यो ओलंपिक के आयोजन के लिए भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

उत्तर प्रदेश में कुशीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री का संबोधन, 20 अक्टूबर 2021

भारत, विश्व भर के बौद्ध समाज की श्रद्धा का, आस्था का, प्रेरणा का केंद्र है। आज कुशीनगर इंटरनेशनल एयरपोर्ट की ये सुविधा, एक प्रकार से उनकी श्रद्धा को अर्पित पुष्पांजलि है। भगवान बुद्ध के ज्ञान से लेकर महापरिनिर्वाण तक की संपूर्ण यात्रा का साक्षी ये क्षेत्र आज सीधे दुनिया से जुड़ गया है। श्रीलंकन एयरलाइंस की फ्लाइट का कुशीनगर में उतरना, इस पुण्य भूमि को नमन करने की तरह है। इस फ्लाइट से श्रीलंका से आए अतिपूजनीय महासंघ और अन्य महानुभाव, आज कुशीनगर बडे गर्व के साथ आपका स्वागत करता है । आज एक सुखद संयोग ये भी है कि आज महर्षि वाल्मिकी जी की जयंती है। भगवान महर्षि वाल्मीकि जी की प्रेरणा से आज देश सबका साथ लेकर, सबके प्रयास से सबका विकास कर रहा है।

साथियों,
कुशीनगर का ये इंटरनेशनल एयरपोर्ट दशकों की आशाओं और अपेक्षाओं का परिणाम है। मेरी खुशी आज दोहरी है। आध्यात्मिक यात्रा के जिज्ञासु के रूप में मन में संतोष का भाव है और पूर्वांचल क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में भी ये एक कमिटमेंट के पूरा होने की घड़ी भी है। कुशीनगर के लोगों को, यूपी के लोगों को, पूर्वांचल-पूर्वी भारत के लोगों को, दुनियाभर में भगवान बुद्ध के अनुयायियों को, कुशीनगर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए बहुत-बहुत बधाई।

साथियों,

भगवान बुद्ध से जुड़े स्थानों को विकसित करने के लिए, बेहतर कनेक्टिविटी के लिए, श्रद्धालुओं की सुविधाओं के निर्माण पर भारत द्वारा आज विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कुशीनगर का विकास, यूपी सरकार और केंद्र सरकार की प्राथमिकताओं में है। भगवान बुद्ध की जन्म स्थली लुंबिनी यहां से बहुत दूर नहीं है। अभी ज्योतिरादित्य जी ने इसका काफी वर्णन किया है, लेकिन फिर भी मैं उसका पुनरावर्तन इसलिये करना चाहता हूँ कि देश के हर कोने में इस क्षेत्र का यह सेंटर प्वाइंट कैसे है यह हम आसानी से समझ पाए. कपिलवस्तु भी पास में ही है। भगवान बुद्ध ने जहां पहला उपदेश दिया, वो सारनाथ की भूमि भी सौ-ढाई सौ किलोमीटर के दायरे में है।

जहां बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, वो बोधगया भी कुछ ही घंटों की दूरी पर है। ऐसे में ये क्षेत्र सिर्फ भारत के ही बौद्ध अनुयायियों के लिए ही नहीं बल्कि श्रीलंका, थाइलैंड, सिंगापुर, लाओस, कम्बोडिया, जापान, कोरिया जैसे अनेक देशों के नागरिकों के लिए भी एक बहुत बड़ा श्रद्धा का और आकर्षण केंद्र बनने जा रहा है।

*****

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में देव दीपावली महोत्सव में प्रधानमंत्री का संबोधन
30 नवंबर 2020

अभी यहाँ से मैं भगवान बुद्ध की स्थली सारनाथ जाऊंगा। सारनाथ में शाम के समय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए और लोक शिक्षा के लिए भी आप सबकी जो लंबे समय से मांग थी वो अब पूरी हो गई है। लेजर शो में अब भगवान बुद्ध के करुणा, दया और अहिंसा के संदेश साकार होंगे। ये संदेश आज और भी प्रासंगिक हो जाते हैं जब दुनिया हिंसा, अशांति और आतंक के खतरे देखकर चिंतित है। भगवान बुद्ध कहते थे- न हि वेरेन वेरानि सम्मन्ती ध कुदाचन अवेरेन हि सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो अर्थात वैर से वैर कभी शांत नहीं होता। अवैर से वैर शांत हो जाता है। देव दीपावली से देवत्व का परिचय कराती काशी से भी यही संदेश है कि हमारा मन इन्हीं दीपों की तरह जगमगा उठे। सब में सकारात्मकता का भाव हो। विकास का पथ प्रशस्त हो। समूची दुनिया करुणा, दया के भाव को स्वयं में समाहित करे। मुझे विश्वास है कि काशी से निकलते ये संदेश, प्रकाश की ये ऊर्जा पूरे देश के संकल्पों को सिद्ध करेगी। देश ने आत्मनिर्भर भारत की जो यात्रा शुरू की है, 130 करोड़ देशवासियों की ताकत से हम उसे पूरा करेंगे।

*****

प्रधानमंत्री द्वारा भूटान के रॉयल यूनिवर्सिटी, थिम्पू में संबोधन
18 अगस्त 2019

यह स्वाभाविक ही है कि भूटान और भारत के लोग एक-दूसरे से बहुत लगाव का अनुभव करते हैं। आखिरकार, हम केवल अपने भूगोल के कारण ही इतने करीब नहीं हैं। हमारे इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं ने हमारे लोगों और राष्ट्रों के बीच अनूठे और गहरे बंधन स्थापित किये हैं। भारत सौभाग्यशाली है कि उसकी भूमि पर राजकुमार सिद्धार्थ गौतम बुद्ध बने। और जहां से उनके आध्यात्मिक संदेश का प्रकाश, बौद्ध धर्म का प्रकाश, पूरी दुनिया में फैला। संन्यासियों,आध्यात्मिक गुरूओं,

विद्वानों और साधकों की पीढ़ियों ने भूटान में उस ज्योति को प्रज्ज्वलित किया है। उन्होंने भारत और भूटान के बीच विशेष बंधन का भी पोषण किया है।

इसके परिणामस्वरूप, हमारे साझा मूल्यों ने एक आम विश्व-दृष्टिकोण को आकार दिया है। यह वाराणसी और बोधगया में दृष्टिगोचर होता है और डीजोंग और चोर्टेनमें भी।

और नागरिकों के रूप में, हम इस महान विरासत के जीवित वाहक होने के लिए भाग्यशाली हैं। दुनिया के कोई भी अन्य दो देश एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह से नहीं समझते या इतने मूल्यों को साझा नहीं करते हैं। और कोई भी दो देश अपने लोगों के लिए समृद्धि लाने में ऐसे स्वाभाविक भागीदार नहीं हैं।

.... हर कोई स्कूल और कॉलेजों में परीक्षा का सामना करता है और जीवन से संबंधित बड़ी कक्षा में भी इस परीक्षा का सामना करता है। क्या मैं आपको कुछ बताऊँ? मैंने एग्जाम वारियर्स में जो कुछ लिखा है, वह भगवान बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित है। विशेष रूप से, सकारात्मकता का महत्व, भय से मुक्ति और एकात्मकता में रहना, चाहे यह वर्तमान क्षण के साथ हो या माँ प्रकृति के साथ। आप इस महान भूमि में पैदा हुए हैं।

..... सदियों से, शिक्षा और अध्ययन भारत और भूटान के बीच संबंधों के केंद्र रहे हैं। प्राचीन काल में, बौद्ध शिक्षकों और विद्वानों ने हमारे लोगों के बीच अध्ययन के सेतु का निर्माण किया था। यह एक अमूल्य विरासत है, जिसे हम संरक्षित करना और बढ़ावा देना चाहते हैं। इसलिए, हम भूटान से नालंदा विश्वविद्यालय –जो अध्ययन और बौद्ध परंपराओं का एक ऐतिहासिक वैश्विक स्थान है,जिसका उसी स्थान पर जीर्णोद्धार किया गया है, जहां यह पंद्रह सौ साल पहले अस्तित्व में था- जैसे संस्थानों मेंभूटान के बौद्ध धर्म के अधिक छात्रों का स्वागत करते हैं। हमारे बीच अध्ययन का बंधन उतना ही आधुनिक है जितना कि प्राचीन।

*****

22वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण
12 जनवरी 2018

साथियों, आप अभी जिस यूनिवर्सिटी के परिसर में हैं, उसका नाम गौतम बुद्ध पर है।

आप जिस शहर में हैं- ग्रेटर नोएडा- उसका नाम भी गौतम बुद्ध नगर है। इसलिए मैं आपको गौतम बुद्ध से ही जुड़ा एक किस्सा सुनाता हूँ। छोटा सा वाकया है, बहुत बड़ा नहीं।

एक बार भगवान बुद्ध से उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा कि क्या आपसे शिक्षा लेने वाले हर शिष्य को निर्वाण मिल जाएगा? भगवान बुद्ध ने जवाब दिया- नहीं, कुछ को मिलेगा, कुछ को नहीं मिलेगा। शिष्य ने पूछा- ऐसा क्यों? तब भगवान बोले कि जो मेरी शिक्षाओं को सही तरीके से समझ पाएंगे, उन्हें ही निर्वाण मिलेगा, बाकी भटकते रह जाएंगे।

साथियों, एक ही गुरु से आपको एक ही शिक्षा मिलेगी, लेकिन आप उसे कैसे ग्रहण करते हैं, आप खुद में क्या संकल्प लेते हैं, ये आपकी सफलता और असफलता तय करता है।
देखिए, जैसे कौरवों और पांडवों, दोनों के गुरु एक ही थे।

दोनों को एक ही तरह की शिक्षा मिली, लेकिन दोनों का ही व्यक्तित्व और कृतित्व कितना भिन्न था। ऐसा इसलिए क्योंकि कौरवों और पांडवों के संकल्प अलग-अलग थे। जीवनपथ में आपको भी शिक्षा देने वाले बहुत से लोग मिलेंगे, लेकिन शिक्षा ग्रहण करके किस रास्ते पर चलना है, किस तरह का संकल्प लेना है, ये सिर्फ आपको ही तय करना होगा।
यही तो गौतम बुद्ध के “अप्प दीपो भव:” का भी सार है। अपना दीपक, अपना प्रकाश स्वयं बनो। अपने संकल्प स्वयं लो। कोई आपको शपथ दिलाने के लिए नहीं आएगा,

कोई याद दिलाने के लिए भी नहीं आएगा। जो कुछ भी करना है, आपको खुद करना है।

मन की बात की 43वीं कड़ी में प्रधानमंत्री का संबोधन
29 अप्रैल 2018

मेरे प्यारे देशवासियो ! बुद्ध पूर्णिमा प्रत्येक भारतीय के लिए विशेष दिवस है। हमें गर्व होना चाहिए कि भारत करुणा, सेवा और त्याग की शक्ति दिखाने वाले महामानव भगवान बुद्ध की धरती है, जिन्होंने विश्वभर में लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया। यह बुद्ध पूर्णिमा भगवान बुद्ध को स्मरण करते हुए उनके रास्ते पर चलने का प्रयास करने का, संकल्प करने का और चलने का हम सबके दायित्व को पुन:स्मरण कराता है। भगवान बुद्ध समानता, शांति, सदभाव और भाईचारे की प्रेरणा शक्ति है। यह वैसे मानवीय मूल्य हैं, जिनकी आवश्यकता आज के विश्व में सर्वाधिक है। बाबा साहेब डॉ. आम्बेडकर जोर देकर कहते हैं कि उनकी social philosophy में भगवान बुद्ध की बड़ी प्रेरणा रही है। उन्होंने कहा था –

"My Social philosophy may be said to be enshrined in three words; liberty, equality and fraternity. My Philosophy has roots in religion and not in political science. I have derived them from the teaching of my master, The Buddha."

बाबा साहेब ने संविंधान के माध्यम से दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो हाशिये पर खड़े करोड़ों लोगों को सशक्त बनाया। करुणा का इससे बड़ा उदाहरण नहीं हो सकता। लोगों की पीड़ा के लिए यह करुणा भगवान बुद्ध के सबसे महान गुणों में से एक थी। ऐसा कहा जाता है कि बौद्ध भिक्षु विभिन्न देशों की यात्रा करते रहते थे। वह अपने साथ भगवान बुद्ध के समृद्ध विचारों को ले करके जाते थे और यह सभी काल में होता रहा है। समूचे एशिया में भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ हमें विरासत में मिली हैं। वह हमें अनेक एशियाई देशों; जैसे चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड, कम्बोडिया, म्यांमार कई अनेक देश वहाँ बुद्ध की इस परंपरा, बुद्ध की शिक्षा जड़ों में जुड़ी हुई हैं और यही कारण है कि हम Buddhist Tourism के लिए Infrastructure विकसित कर रहे हैं, जो दक्षिण-पूर्वी एशिया के महत्वपूर्ण स्थानों को, भारत के खास बौद्ध स्थलों के साथ जोड़ता है। मुझे इस बात की भी अत्यंत प्रसन्नता है कि भारत सरकार कई बौद्ध मंदिरों के पुनरुद्धार कार्यों में भागीदार है। इसमें म्यांमार में बागान में सदियों पुराना वैभवशाली आनंद मंदिर भी सम्मलित है। आज विश्व में हर जगह टकराव और मानवीय पीड़ा देखने को मिलती है। भगवान बुद्ध की शिक्षा घृणा को दया से मिटाने की राह दिखाती है। मैं दुनिया भर में फैले हुए भगवान बुद्ध के प्रति श्रद्धा रखने वाले, करुणा के सिद्धांतों में विश्वास करने वाले - सबको बुद्ध पूर्णिमा की मंगलमयी कामना करता हूँ। भगवान बुद्ध से पूरी दुनिया के लिए आशीर्वाद मांगता हूँ, ताकि हम उनकी शिक्षा पर आधारित एक शांतिपूर्ण और करुणा से भरे विश्व का निर्माण करने में अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकें। आज जब हम भगवान बुद्ध को याद कर रहे हैं।

आपने laughing Buddha की मूर्तियों के बारे में सुना होगा, जिसके बारे में कहा जाता है कि laughing Buddha good luck लाते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि smiling Buddha भारत के रक्षा इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना

से भी जुड़ी हुई है। अब आप सोचते रहे होंगे कि smiling Buddha और भारत की सैन्य-शक्ति के बीच क्या संबंध है? आपको याद होगा आज से 20 वर्ष पहले 11 मई, 1998 शाम को तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था और उनकी बातों ने पूरे देश को गौरव, पराक्रम और खुशी के पल से भर दिया था। विश्वभर में फैले हुए भारतीय समुदाय में नया आत्मविश्वास उजागर हुआ था। वह दिन था बुद्ध पूर्णिमा का। 11 मई, 1998, भारत के पश्चिमी छोर पर राजस्थान के पोखरण में परमाणु परीक्षण किया गया था। उसे 20 वर्ष हो रहे हैं और ये परीक्षण भगवान बुद्ध के आशीर्वाद के साथ बुद्ध पूर्णिमा के दिन किया गया था। भारत का परीक्षण सफल रहा और एक तरह से कहें तो विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भारत ने अपनी ताक़त का प्रदर्शन किया था। हम कह सकते हैं कि वो दिन भारत के इतिहास में उसकी सैन्य-शक्ति के प्रदर्शन के रूप में अंकित है। भगवान बुद्ध ने दुनिया को दिखाया है- inner strength अंतर्मन की शक्ति शांति के लिए आवश्यक है। इसी तरह जब आप एक देश के रूप में मजबूत होते हैं तो आप सब के साथ शांतिपूर्ण रह भी सकते हैं।

*****

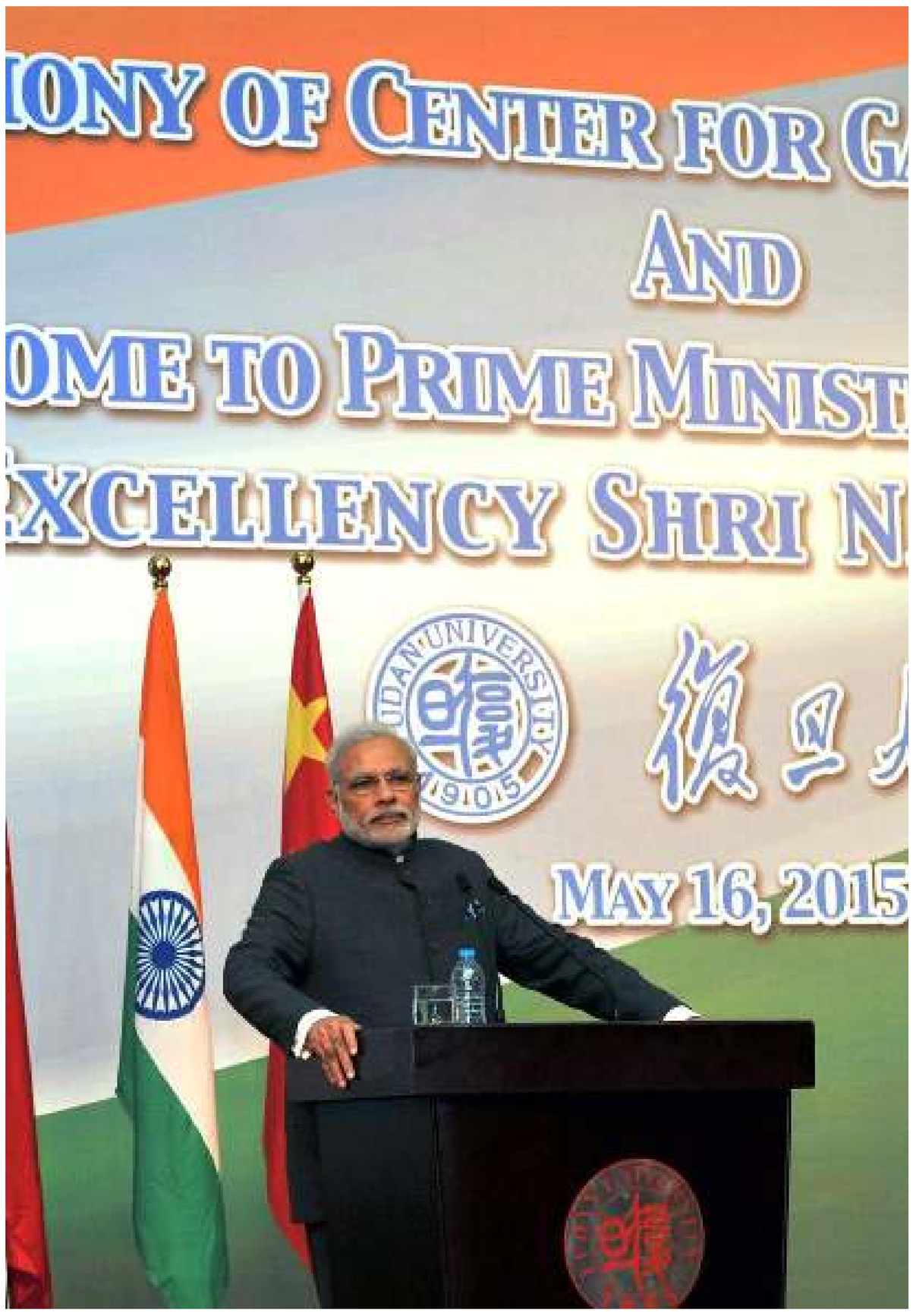

फूदान विश्वविद्यालय में गांधीवाद दर्शन केन्द्र के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री का संबोधन, 16 मई 2015

महात्मा गांधी का अध्ययन या भारत का अध्ययन, हमारा चीन और भारत का पुराना सांस्कृतिक विरासत का अगर पुराना इतिहास देखें, तो दोनों देश ज्ञान पिपासु थे, ज्ञान पाने के लिए साहस करते थे, कष्ट उठाते थे। 1400 साल पहले ह्वेन सांग भारत पहुंचे होंगे और भारत के विद्वत लोग चीन पहुंचे होंगे सिर्फ और सिर्फ ज्ञान के लिए, सांस्कृति को जानने के लिए, परंपराओं को जानने के लिए, कितना साहस किया जाता था। आर्थिक व्यापार के लिए दरवाजे खोलना सरल होता है। Tourism के लिए यात्रियों को निमंत्रित करना दुनिया के देशों से सरल होता है। लेकिन ज्ञान के लिए दरवाजा खोलना उसके लिए भीतर एक बहुत बड़ी ताकत लगती है। अगर भीतर बड़ी ताकत नहीं होती है, तो दूसरे विचारों का डर लगता है कहीं वो आकर हमें खा तो नहीं जाएंगे। हमारे ऊपर सवार तो नहीं हो जाएंगे? अपने आप में जब ताकत होती है तब व्यक्ति और विचारों को सुनने समझने की इच्छा करता है।

और आज चीन फिर से एक बार भगवान बुद्ध के कालखंड के बाद गांधी के माध्यम से उस महान सांस्कृतिक विरासत को जानने के लिए उत्सुक हुआ है, मैं अपने आप में एक बहुत बड़ी अहम घटना मानता हूँ।

*****

स्वतंत्रता दिवस 2014 के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण
15 अगस्त 2014

मैं पिछले दिनों नेपाल गया था। मैंने नेपाल में सार्वजनिक रूप से पूरे विश्व को आकर्षित करने वाली एक बात कही थी। एक ज़माना था, सम्राट अशोक जिन्होंने युद्ध का रास्ता लिया था, लेकिन हिंसा को देख करके युद्ध छोड़, बुद्ध के रास्ते पर चले गए। मैं देख रहा हूँ कि नेपाल में कोई एक समय था, जब नौजवान हिंसा के रास्ते पर चल पड़े थे, लेकिन आज वही नौजवान संविधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हीं के साथ जुड़े लोग संविधान के निर्माण में लगे हैं और मैंने कहा था, शस्त्र छोड़कर शास्त्र के रास्ते पर चलने का अगर नेपाल एक उत्तम उदाहरण देता है, तो विश्व में हिंसा के रास्ते पर गए हुए नौजवानों को वापस आने की प्रेरणा दे सकता है।

भाइयो बहनो,

बुद्ध की भूमि, नेपाल अगर संदेश दे सकती है, तो क्या भारत की भूमि दुनिया को संदेश नहीं दे सकती है? और इसलिए समय की मांग है, हम हिंसा का रास्ता छोड़ें, भाईचारे के रास्ते पर चलें।

.....क्यों न हम सार्क देशों के सभी साथी दोस्त मिल करके गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने की योजना बनाएं? हम मिल करके लड़ाई लड़ें, गरीबी को परास्त करें। एक बार देखें तो सही, मरने-मारने की दुनिया को छोड़ करके जीवित रहने का आनंद क्या होता है! यही तो भूमि है, जहां सिद्दार्थ के जीवन की घटना घटी थी। एक पंछी को एक भाई ने तीर मार दिया और एक दूसरे भाई ने तीर निकाल करके बचा लिया। मां के पास गए – पंछी किसका, हंस किसका? मां से पूछा, मारने वाले का या बचाने वाले का? मां ने कहा, बचाने वाले का। मारने वाले से बचाने वाले की ताकत ज्यादा होती है और वही तो आगे जा करके बुद्ध बन जाता है। वही तो आगे जा करके बुद्ध बन जाता है और इसलिए, मैं पड़ोस के देशों से मिल-जुल करके गरीबी के खिलाफ लड़ाई को लड़ने के लिए सहयोग चाहता हूँ, सहयोग करना चाहता हूँ और हम मिल करके, सार्क देश मिल करके, हम दुनिया में अपनी अहमियत खड़ी कर सकते हैं, हम दुनिया में एक ताकत बनकर उभर सकते हैं।

*****

बुद्ध भगवान् और बौद्ध धर्म के मुख्य उल्लेख

नेपाल की संविधान सभा को सम्बोधन, 3 अगस्त 2014

आपका संविधान जो बनेगा वो सिर्फ नेपाल के लिए नहीं विश्व के लिए एक स्वर्णिम पृष्ठ बनेगा क्योंकि इतिहास की धरोहर में देखें तो एक सम्राट अशोक हुआ करते थे, युद्ध के बाद शांति की तलाश में निकले, युद्ध छोड़ बुद्ध की शरण गए और एक नया स्वर्णिम पृष्ठ लिखा गया। मैं उन सबको बधाई देता हूँ जिन्होंने बुलेट का रास्ता छोड़कर के बैलेट के रास्ते पर जाने का संकल्प किया नेपाल की धरती पर। मैं उन सबका अभिनंदन करता हूँ जो युद्ध से बुद्ध की ओर प्रयाण किया है और इस सदन में आपकी मौजूदगी युद्ध से बुद्ध की तरफ की आपकी यात्रा का अनुमोदन करती है और इसलिए मैं आपको बधाई देने आया हूँ।

..... संविधान की सीमा में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के द्वारा इच्छित परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है। और ऐसा उम्दा काम आपने शुरू किया है और उन लोगों ने इसमें हिस्सेदारी की है, जिन्होंने कभी शस्त्रों में भरोसा किया था। शस्त्रों को छोड़कर के, युद्ध को छोड़कर के बुद्ध के मार्ग पर जाने का रास्ता अपनाया और इसलिए एक ऐसा पवित्र काम आपके माध्यम से हो रहा है इस संविधान सभा के माध्यम से जो इस विश्व के हिंसा में विश्वास करने वाले लोगों को पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करेगा। और आपका प्रयोग अगर सफल रहा तो विश्व को हिंसा की मुक्ति का एक नया मार्ग बुद्ध की इस भूमि से मिलेगा।

..... नेपाल जहाँ से जन्मे हुए बुद्ध ने मन के अंधेरे को दूर किया था, विचारों का प्रकाश दिया और मानव जाति को एक नई चेतना मिली।

स्वतंत्रता दिवस भाषण, 15 अगस्त, 2014,

मैं पिछले दिनों नेपाल गया था। मैंने नेपाल में सार्वजनिक रूप से पूरे विश्व को आकर्षित करने वाली एक बात कही थी। एक ज़माना था, सम्राट अशोक जिन्होंने युद्ध का रास्ता लिया था, लेकिन हिंसा को देख करके युद्ध छोड़, बुद्ध के रास्ते पर चले गए। मैं देख रहा हूँ कि नेपाल में कोई एक समय था, जब नौजवान हिंसा के रास्ते पर चल पड़े थे, लेकिन आज वही नौजवान संविधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हीं के साथ जुड़े लोग संविधान के निर्माण में लगे हैं और मैंने कहा था, शस्त्र छोड़कर शास्त्र के रास्ते पर चलने का अगर नेपाल एक उत्तम उदाहरण देता है, तो विश्व में हिंसा के रास्ते पर गए हुए नौजवानों को वापस आने की प्रेरणा दे सकती है। बुद्ध की भूमि, नेपाल अगर संदेश दे सकती है, तो क्या भारत की भूमि दुनिया को संदेश नहीं दे सकती है? और इसलिए समय की मांग है, हम हिंसा का रास्ता छोड़ें, भाईचारे के रास्ते पर चलें।

यही तो भूमि है, जहां सिद्धार्थ के जीवन की घटना घटी थी। एक पंछी को एक भाई ने तीर मार दिया और एक दूसरे भाई ने तीर निकाल करके बचा लिया। माँ के पास गए – पंछी किसका, हंस किसका? मां से पूछा, मारने वाले का या बचाने वाले का? मां ने कहा, बचाने वाले का। मारने वाले से बचाने वाले की ताकत ज्यादा होती है और वही तो आगे जा करके बुद्ध बन जाता है। वही तो आगे जा करके बुद्ध बन जाता है और इसलिए, मैं पड़ोस के देशों से मिल-जुल करके गरीबी के खिलाफ लड़ाई को लड़ने के लिए सहयोग चाहता हूँ, सहयोग करना चाहता हूँ और हम मिल करके, सार्क देश मिल करके, हम दुनिया में अपनी अहमियत खड़ी कर सकते हैं, हम दुनिया में एक ताकत बनकर उभर सकते हैं। आवश्यकता है, हम मिल-जुल करके चलें, गरीबी से लड़ाई जीतने का सपना ले करके चलें, कंधे से कंधा मिला करके चलें।

जापान चैमबर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री (निप्पॉन किडनरेन) तथा जापान-भारत व्यापारिक सहयोग समिति में सम्बोधन, 1 सितम्बर 2014

दुनिया दो धाराओं में बंटी हुई है। एक, विस्तारवाद की धारा है और दूसरी विकासवाद की धारा है। हमें तय करना है विश्व को विस्तारवाद के चंगुल में फंसने देना है या विश्व को विकासवाद के मार्ग पर जा करके, नई ऊंचाइयों पर जा करके नई ऊंचाइयों को पाने के अवसर पैदा करना है। जो बुद्ध के रास्ते पर चलते हैं जो विकासवाद में विश्वास करते हैं, वह शांति और प्रगति की गारंटी लेकर के आते हैं। लेकिन आज हम चारों तरफ देख रहे हैं कि 18वीं सदी की जो स्थिति थी, वो विस्तारवाद नजर आ रहा है। किसी देश में एनक्रोचमेंन्ट करना, कहीं समुद्र में घुस जाना, कभी किसी देश के अंदर जाकर कब्जा करना। ये विस्तारवाद कभी भी मानव जाति का कल्याण 21वीं सदी में नहीं कर सकता है। विकासवाद ही अनिवार्य है और मैं मानता हूँ कि 21वीं सदी में विश्व का नेतृत्व यदि एशिया को करना है तो भारत और जापान ने मिलकर विकासवाद की गरिमा को और ऊंचाई पर ले जाना पड़ेगा।

जापान के प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के साथ टोक्यो में हुए संयुक्त प्रेस संबोधन के दौरान दी गयीं टिप्पणी, 1 सितम्बर 2014

पूरा विश्व एक बात को मानता है भलीभांति और कनविंस है कि 21वीं सदी एशिया की सदी और पूरे विश्व में 21वीं सदी एशिया की सदी है, इसमें कोई कनफ्यूजन नहीं है। लेकिन 21वीं सदी कैसे हो, यह उस बात पर निर्भर करता है कि भारत और जापान मिल करके किस प्रकार की व्यूह रचना को अपनाते है, किस प्रकार की रणनीति आगे बढ़ते हैं, और कितनी घनिष्टता के साथ आगे बढ़ते हैं। यह काम हम भगवान बुद्ध के शांति और संवाद के रास्ते पर चलकर इस क्षेत्र में सभी देशों के साथ मिलकर इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

चीन के मीडिया संगठनों से बातचीत, 16 सितम्बर, 2014

प्रधानमंत्री बनने के बाद गुजरात में यह मेरी पहली बैठक होगी। चीन के माननीय राष्ट्रपति कल वहां पहुंच रहे हैं। यह बेहद प्रसन्नता का विषय है कि हम चीन के राष्ट्रपति का स्वागत गुजरात में करेंगे। मेरा मानना है कि चीन के राष्ट्रपति का अपनी भारत यात्रा में गुजरात को शामिल करने का फैसला अच्छी बात है, न सिर्फ इसलिए कि गुजरात प्रधानमंत्री मोदी का गृह राज्य है बल्कि इसलिए भी कि भारत-चीन और गुजरात-चीन के संबंधों की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रासंगिकता भी है। चीन का वो प्रांत जहां से माननीय राष्ट्रपति आते हैं, उस प्रांत में एक छोटा सा कस्बा है जिसका गुजरात के लोगों से पुराना रिश्ता-नाता है। वहां सबसे पहले पहुंचने और कारोबार स्थापित करने वालों में गुजरात के कुछ एक लोग शामिल हैं। 600 ईस्वी में भारत आए संत जुआन जंग गुजरात भी गए थे और वह जिस गांव में ठहरे थे उसी गांव से मैं आता हूँ। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत और चीन में, विशेष रूप से चीन और गुजरात के बीच बहुत ही घनिष्ठ संबंध विकसित हुए। इस नजरिये से देखे तो उनका गुजरात आगमन विशेष ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के एक रिश्ते की याद दिलाता है।

म्यांमार में प्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए, 13 नवम्बर 2014

भारत का और यहां का इतिहास बहुत जुड़ा हुआ है. आज़ादी का संघर्ष साथ साथ किया है। हम सुख-दुख के साथी रहे हैं और आज भी यहां के लोग भारत को, एक पुण्य भूमि के रूप में, और भगवान बुद्ध के कारण बहुत आदर और सत्कार के भाव से देखते हैं। हमारी कोशिश है, खास करके, हमारे पड़ोस के जो देश हैं, भारत उनको काम कैसे आए? उनके लिए भारत क्या कर सकता है? और मैं मानता हूँ ये भारत की जिम्मेवारी भी है।

राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा के साथ संयुक्त प्रेस संवाद के दौरान वक्तव्य 25 जनवरी 2015

आज हमारे संबंध एक नए स्तर पर हैं। हमने अपनी मित्रता और सहयोग के लिए एक व्यापक vision तय किया है, जो इस शताब्दी के अवसरों और चुनौतियों पर आधारित है।

जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा था, उत्तम मित्र और साथी हो तो जीवन पवित्र और सार हो जाता है।

'मन की बात', 22 फरवरी 2015

कभी आपने भी कल्पना नहीं की होगी की इतने अच्छे अच्छे काम कर दिए होंगें। जरा उसको याद करो, अपने आप विश्वास पैदा हो जाएगा। अरे वाह! आपने वो भी किया था, ये भी किया था? पिछले साल बीमार थी तब भी इतने अच्छे मार्क्स लाये थे। पिछली बार मामा के घर में शादी थी, वहां सप्ताह भर ख़राब हो गया था, तब भी इतने अच्छे मार्क्स लाये थे। अरे पहले तो आप छः घंटे सोते थे और पिछली साल आपने तय किया था कि नहीं नहीं अब की बार पांच घंटे सोऊंगा और आपने कर के दिखाया था। अरे यही तो है मोदी आपको क्या उपदेश देगा। आप अपने मार्गदर्शक बन जाइए। और भगवान् बुद्ध तो कहते थे अंतःदीपो भवः।

पहले अंतर्राष्ट्रीय रामायण मेले में संबोधन, 23 फरवरी 2015

विश्व में जहां जहां भगवान बुद्ध की presence है, सामूहिक रूप से वे देश हमसे जुड़े रहें तो हमारी कितनी बड़ी ताकत बन सकती है। विश्व में जहां जहां राम और रामायण से संपर्क रहा है, जो लोग गर्व करते हैं, उसी एक तंतु के साथ जोड़ करके आज उसको अगर संबंधों को विकसित किया जाए, तो संबंध अपनेपन वाले बन जाते हैं। वे Diplomatic Relation से भी अधिक ताकतवर बन जाते हैं, एक next level उसका प्राप्त होता है। उस अर्थ में यह प्रयास वैश्विक संबंधों को और अधिक गहरे करने के लिए, वैश्विक संबंधों को और अधिक व्यापक करने के लिए और वैश्विक संबंधों में एक अपनेपन के commitment के element को जोड़ने के लिए बहुत ही उपकारक होंगे, ऐसा मैं मानता हूँ। इसको हमें अलग अलग तरीके से बढ़ाना भी चाहिए। ये जो पहलू है, उसमें भारत की एक विशिष्ट शक्ति है, उसकी भी दुनिया को पहचान होती है, कि हमारे पास विश्व को देने के लिए क्या कुछ नहीं है।

पेरिस के carrousel du Louvre में सामुदायिक समारोह में वक्तव्य, 11 अप्रैल, 2015

दुनिया से मैं आग्रह करूंगा कि आज जब विश्व प्रथम विश्व युद्ध की शताब्दी में गुजर रहा है तब ये अवसर है, शांतिदूतों के सम्मान का। ये अवसर है, गांधी और बुद्ध की भूमि को उसका हक देने का। वो दिन चले गए, जब हिंदुस्तान भीख मांगेगा। ये देश अपना हक मांगता है, और हक, विश्व में शांति का संदेश बुद्ध और गांधी की भूमि जिस प्रकार से दे सकती है, शायद ही और कोई इतनी Moral Authority है, जो दुनिया को ये ताकत दे सके, संदेश दे सके। मैं आशा करता हूँ कि यूएन अपनी 70वीं शताब्दी जब मनाएगा तो इन विषयों पर पुर्नविचार करेगा। इसलिए मैं आज विशेष रूप से उन वीर शहीदों को प्रणाम करने गया था, ताकि शांति के लिए हम सर कटा सकते हैं, ये दुनिया को पता चलना चाहिए और ये संदेश हम दुनिया को दें।

बर्लिन में जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल के साथ संयुक्त प्रेस वक्तव्य के दौरान, 14 अप्रैल 2015

वो देश जहां अहिंसा के दूत महात्मा गांधी पैदा हुए थे, वो देश जहां गौतम बुद्ध पैदा हुए थे, जहां की संस्कृति, परंपरा, शांति को समर्पित है, उस देश को अगर United Nation में permanent membership security council न मिले, उसके लिए 70 साल तक उसको इंतजार करना पड़े, तब सवाल उठता है कि शांति पर भरोसा करने वाले, शांति के लिए जीने वाले, शांति जिनके DNA में है, ऐसे देश के प्रति अब न्याय होना चाहिए, समय बहुत चला गया है।

मंगोलियाई संसद में टिप्पणियां, 17 मई, 2015

हम अपने लोगों का जीवन बदल रहे हैं तो हमने दुनिया के लिए भी अवसर पैदा किए हैं। हम अपने दोस्तों की मदद के लिए भी अपनी क्षमता बढ़ाते हैं। यह बुद्ध और गांधी की भूमि है। तभी तो हम दुनिया को प्राचीन काल से ही एक परिवार मानते रहे हैं।

.....करीब दो हजार वर्ष पहले भारत से बौद्ध भिक्षुओं ने मुश्किल क्षेत्रों को पार किया और भगवान बुद्ध का संदेश देने के लिए इस महान महान भूमि तक पहुंचने के वास्ते लंबी दूरी तय की। यहां से भी बहुत से लोग आध्यात्मिक ज्ञान लेने के लिए भारत गए।

सदियों पहले जब हमारे पास आवागमन के साधन सीमित थे, तब महान मंगोलों ने एशिया और यूरोप को एक किया। उनकी कहानी साहस, हिम्मत और निर्भीकता की कहानी हैं जो दुनिया में आज भी सबको प्रेरित करती हैं। मानव इतिहास पर उनका बहुत प्रभाव पड़ा है।

सामुदायिक भोज, शंघाई, 16 मई, 2015

देखिए, शियान का जो मेरा कार्यक्रम बना, उसकी बड़ी एक विशेषता है। हम लोग सब बचपन में पढ़ते थे इतिहास कि ह्येन सांग नाम का एक Philosopher आया था हिंदुस्तान, China से और भारत भ्रमण किया था और उसने बहुत कुछ लिखा था, दार्शनिक थे। मेरा जन्म जिस गांव में हुआ है, महेसाना जिला में वडनगर में पैदा हुआ था, गुजरात में, तो ह्येन सांग ने जो लिखा है, उसमें उसने मेरे गांव का वर्णन लिखा है। और वो वहां जाकर के रहे थे और हम समान्य रूप से सोचते हैं कि भगवान बुद्ध Eastern part of India में थे। बिहार और उस क्षेत्र के पास। लेकिन ह्येन सांग ने लिखा है कि भगवान बुद्ध का प्रभाव Western India में भी उतना ही था। और उन्होंने लिखा था कि वडनगर में, जो कि मेरा जन्म स्थान है, वहां पर बौद्ध भिक्षुओं की शिक्षा-दीक्षा के लिए एक बड़ा educational institute था, हजारों बालकों के रहने का hostel था, वो उसने लिखा है कि मैंने देखा वहां, वो भी काफी समय वहां रहे थे। जब मैं मुख्यमंत्री बना तो मुझे मन में विचार आया कि भई ह्येन सांग लिखकर के गए हैं तो जरा देखें तो क्या है। तो मैंने सरकार को कहा कि जरा खुदाई करो भाई। अब कोई अपने यहां खुदाई करवाए, क्यों करेगा? लेकिन मैं ऐसा ही हूँ, मैंने खुदाई करवा दी और आश्चर्य है कि मेरे गांव में से वो सारी चीजें मिलीं खुदाई करने से, वो hostels मिले हैं, सारी चीजें ध्यान में आईं, ह्येन सांग ने जो लिखा है सब।

जब मैं चुनाव जीत के आया और राष्ट्रपति जी का जब मुझे टेलीफोन आया तो उन्होंने टेलीफोन के अंदर इस बात का उल्लेख किया है, उन्होंने बराबर अध्ययन करके रखा था कि मोदी आखिर चीज क्या है। और उन्होंने मुझे फोन पर मेरे जन्म स्थान का वर्णन किया। मुझे बड़ा आश्चर्य और आनंद भी हुआ। बाद में वो भारत आए तो उनकी इच्छा थी मेरे गांव जाने की लेकिन वो गुजरात आए, गांव तक तो नहीं जा पाए थे क्योंकि वो अहमदाबाद से 80-90 किलोमीटर दूर है, समय का आभाव था। लेकिन उन्होंने मुझे एक और बात बताई है। उन्होंने कहा, तुम्हें मालूम है? मैंने कहा क्या? बोले ह्येन सांग जो हिंदुस्तान में रहे, तुम्हारे गांव में रहे और वहां से जब वो वापिस आए तो वे मेरे गांव में आए थे, शियान में आए थे। और वहां पर एक बहुत बड़ा बुद्ध मंदिर बना हुआ है और कल वो मुझे वहां ले गए और ले जाकर के ह्येन सांग की जो लिखी हुई किताब थी, वो मुझे दिखाई और उसमें वो उन्होंने निकालकर के रखा था कि देखो ये तुम्हारे गांव का नाम है, चीनी भाषा में लिखा हुआ था और ये तुम्हारे गांव का वर्णन है।

फुदान विश्वविद्यालय में गांधी और भारतीय अध्ययन केंद्र के शुभारम्भ पर भाषण, शंघाई, 16 मई, 2015

21वीं सदी एशिया की सदी है। चीन और भारत मिलकर के दुनिया की एक तिहाई जनसंख्या है। अगर यह एक-तिहाई जनसंख्या का भला होता है, वो समस्याओं से मुक्त होती है, मतलब दुनिया का एक तिहाई हिस्सा संकटों से मुक्तत हो जाता है। और इसलिए चीन और भारत मिलकर के प्रगति के ऊंचाईयों को पार करें, जिसमें मानवीय संवेदना हो, मानवता हो, बुद्ध का चिंतन हो, गांधी के प्रयोग हों, ताकि हम विश्व को एक ऐसा जीवन जीने के लिए प्रेरित करें जो जीवन जनकल्याण से समर्पित हो।

बंग बंधु कन्वेन्शन सेंटर ढाका पर सम्बोधन , 7 जून, 2015

आपके Tourism Minister मिले थे, वो कह रहे थे, हम बुद्ध circuit शुरू करना चाहते हैं Tourism के लिए। भारत भी, बुद्ध के बिना भारत अधूरा है और जहां बुद्ध है, वहां युद्ध नहीं हो सकता है और इसलिए दुनिया जर्मन के लिए लड़ती हो, मरती हो लेकिन हम दो देश हैं जो जमीन को ही हमारे संबंधों का सेतु बनाकर के खड़ा कर देते हैं।

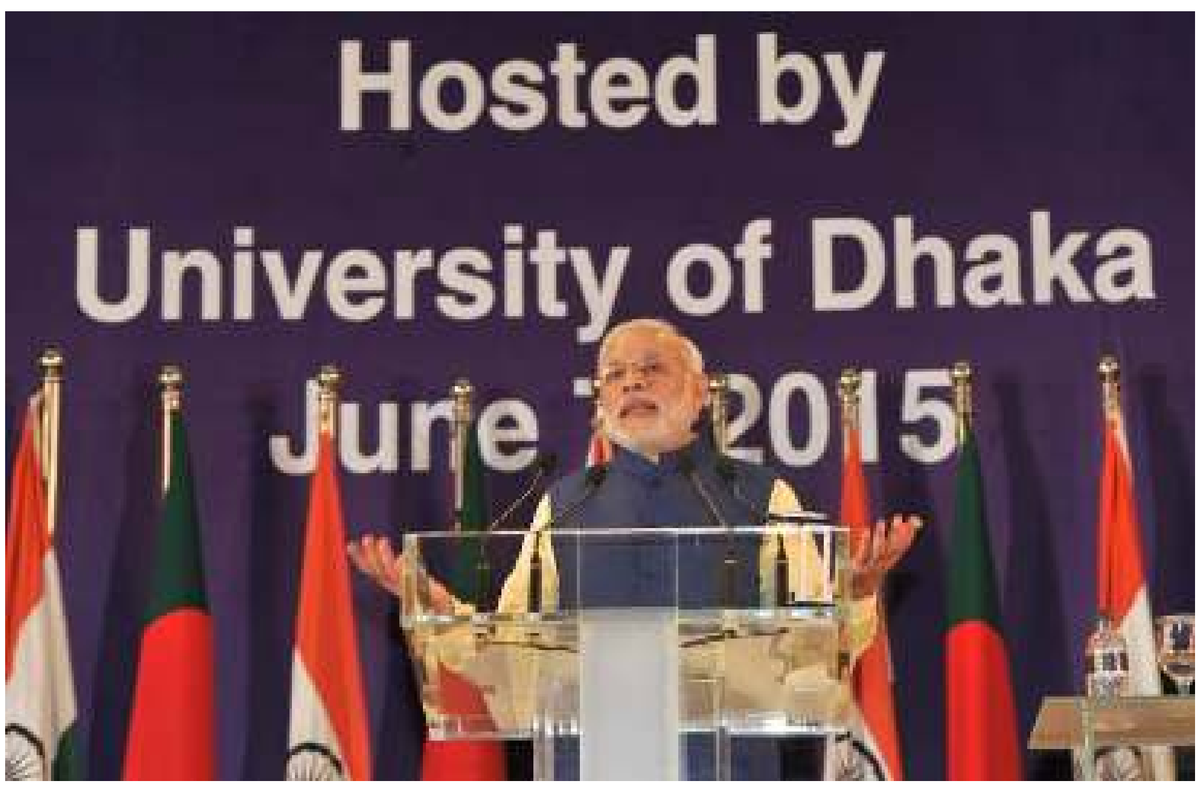

भारतीय समुदाय को सम्बोधन, सन होसे USA, 27 सितम्बर, 2015

हम तो उस धरती से आए हैं जहां गांधी और बुद्ध ने जनम लिया था। सिद्धार्थ ... सिद्धार्थ नेपाल की धरती पर पैदा हुए थे, लेकिन सिद्धार्थ बुद्ध बने थे बोधगया में आकर के। जिस धरती से अहिंसा का मंत्र निकला हो, वो विश्व को शांति के लिए आग्रहपूर्वक कह सकता है कि मानव जाति के लिए 21वीं सदी रक्तरंजित नहीं हो सकती है। निर्दोषों को मौत के घाट उतारने वाली 21वीं सदी को कलंकित होने से बचाना चाहिए। और उस बात को लेकर के मैंने ताल ठोक करके UN में अपनी बात बताई है, कल भी दोबारा जा रहा हूँ, कल दोबारा बताने वाला हूँ।

भारतीय समुदाय को सम्बोधन, क्वालालम्पुर मलेशिया, 22 नवम्बर, 2015

भिक्षुओं के पद चिन्हों में हमारे संबंध देखे जा सकते हैं, जिन्होंने बुद्ध की भूमि से शांति का संदेश दक्षिण-पूर्व एशिया पहुंचाया था। यह हमारी विरासत की समृद्धि है। यही हमारे आधुनिक संपर्क की प्राचीन बुनियाद है।

बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर पर स्मारक सिक्के के विमोचन पर सम्बोधन, 6 दिसम्बर, 2015

अब देखिए उस समय हवा कालमार्क्स की चल रही थी। समाजवादी चिंतन एवं भारत में भी करीब-करीब उसकी हवा चलती थी। उस समय ये महापुरूष भगवान बुद्ध के चिंतन को मूल आधार बना करके और 'बुद्ध एंड कालमार्क्स' नहीं लिखा है। 'बुद्ध और कालमार्क्स' लिखा है और उनका ये आग्रह रहा है कि सर्वसमावेशी, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय ।

बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के 6th दीक्षांत समारोह में सम्बोधन, लखनऊ, 22 जनवरी, 2016

बाबा साहेब अम्बेडकर भगवान बुद्ध की परंपरा से प्रेरित थे। भगवान बुद्ध का यही संदेश था अप्प दीपो भव:। अपने आप को शिक्षित करो। पर प्रकाशित जिन्दगी अंधेरे का साया लेकर के आती है और स्वप्रकाशित जिन्दगी अंधेरे को खत्म करने की गारंटी लेकर के आती है और इसलिए जीवन स्व प्रकाशित होना चाहिए, सवयं प्रकाशित होना चाहिए। और उसका मार्ग भी शिक्षा से ही गुजरता है।

टाइगर संरक्षण पर तीसरे एशिया मंत्री सम्मेलन, 12 अप्रैल, 2016

प्राणी साम्राज्य से जुड़ी प्रजातियां सामान्य तौर पर अपने अहित के लिए काम नहीं करती हैं। लेकिन मानव जाति अपवाद है। हमारी बाध्यता और इच्छाएं , हमारी आवश्यकताएं और लालच के कारण प्राकृतिक क्षेत्र में कमी आई है और पारिस्थितिकी प्रणाली का नुकसान हुआ है। यहां मैं आप सबको गौतम बुद्ध के शब्द याद दिलाना चाहूँगा। उनहोंने कहा था 'प्रकृति असीमित कृपा है यह सभी प्राणियों को सुरक्षा देती है और कुल्हाड़ी चलाने वाले को भी अपनी छाया देती है'।

ग्राम उदय से भारत उदय अभियान का शुभारम्भ, महो, 14,अप्रैल 2016

आज 14 अप्रैल बाबा साहेब अमबेडकर की जनम जयंती हो और मुझे हमारे अखिल भारतीय भिक्षुक संघ के संघ नायक डॉ. धम्मवीरयो जी का सममान करने का अवसर मिला। वो भी इस पवित्र धरती पर अवसर मिला। बहुत कम लोगों को पता होगा कि कैसी बड़ी विभूति आज हमारे बीच में है। कहते है 100 भाषाओं के वो जानकार है, 100 भाषाएं, Hundred Languag-es. और बर्मा में जनमे बाबा साहेब अमबेडकर उनहें बर्मा में मिले थे और बाबा साहेब के कहने पर उनहोंने भारत को अपनी कर्म भूमि बनाया और उनहोंने भारत में बुद्ध सतव से दुनिया को जोड़ने को प्रयास अविरत किया।

लाल क़िले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस भाषण , 15 अगस्त, 2016

जब मैं रामानुजाचार्य जी को याद करता हूँ तो एक बात मैं कहना चाहता हूँ, हजार साल पहले, आज जब सामाजिक तनाव देखते हैं तो रामानुजाचार्य जी संत पुरुष, उन्होंने देश को क्या संदेश दिया था। रामानुजाचार्य जी कहते थे भगवान के सभी भकतों को,भेदभाव और ऊंच-नीच का खयाल किए बिना सेवा करो। उमर-जाति के कारणों की वजह से किसी का भी अनादर मत करो, हर किसी का सममान करो। जो बात गांधी ने कही, जो बात अमबेडकर ने कही, जो बात रामानुजाचार्य ने कही, जो भगवान बुद्ध ने कही, जो हमारे शासत्रों ने कही, जो हमारे सभी आचार्य-महंतों, गुरूओं ने शिक्षको, ने कही वो है हमारी सामाजिक एकता की। समाज अगर टूटता है, साम्राज्य बिखर, ऊंच-नीच में बंट जाता है, सपृश-असपृश में बंट जाता है तो भाइयो-बहनों वो समाज कभी टिक नहीं सकता है। बुराइयां हैं, सदियों पुरानी बुराइयां हैं, लेकिन बुराइयां अगर पुरानी हैं तो उपचार भी जरा जयादा कठोरता से करने पड़ेंगे, जयादा संवेदनशीलता से करने पड़ेंगे। होती है, चलती है, से सामाजिक समसयाओं का समाधान नहीं हो पाएगा, और ये दायितव सवा सौ करोड़ देशवासियों का है। सरकारों ने समाज ने मिल करके समाज में जो टकराव की स्थितियां पैदा होती हैं, उसमें से हमें निकलना होगा।

Ex-Servicemen की जनसभा, भोपाल, 14 अक्तूबर, 2016

ये तयाग और बलिदान बार-बार दुनिया को समरण कराने की आवशयकता है। यहां गांधी ऐसे पैदा नहीं होते हैं, यहां बुद्ध ऐसे पैदा नहीं होते हैं, एक महान परमपरा है जिसमें से वीर सैनिक भी मानवता के लिए मरते हैं तो गांधी भी मानवता के लिए जीते हैं, ये इस धरती की विशेषता रही है। और उसी विशेषता को ली करके आज दुनिया में हमारी सेना पर गर्व कर सकते हैं।

CII-Keidanren Business Luncheon, 11, नवम्बर 2016

जापानी लोगों ने सतत विकास के क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व किया है। साथ ही यहां के लोगों में सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक व्यवहार की गहरी समझ भी है।
हम दुनिया के अन्य भागों खासकर एशिया और अफ्रीका की विकास प्रक्रिया में जापान के जबरदस्त योगदान से भी अवगत हैं।
भारत के बुनियादी मूल्य हमारे सभ्यतामूलक विरासत में निहित हैं। इसे गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी की सत्य की शिक्षाओं के माध्यम से प्रेरणा मिलती है।

चंपारन सत्याग्रह की शताब्दी सम्बन्धी प्रदर्शनी के उद्घाटन पर सम्बोधन, 10 अप्रैल , 1017

आज हम 20वीं सदी के एक महान घटनाक्रम का समारोह का शुभारंभ करने के लिए एकत्र हुए हैं। 100 वर्ष पहले आज का ही दिन था, जब गांधीजी पटना पहुंचे थे, और चंपारण के अपने सफर की शुरूआत की थी। चंपारण की जिस धरती को भगवान बुद्ध के प्रवचन का आशीर्वाद मिला था, जो धरती सीता माता के पिता, जनक के राज्य का हिस्सा रही थी; वहां के किसान कठोरतम स्थिति का सामना कर रहे थे। न सिर्फ चंपारण कि किसानों को, शोषितों को, पीड़ितों को गांधीजी ने एक रास्ता दिखाया, बल्कि पूरे देश को ये एहसास कराया कि शांतिपूर्ण सत्याग्रह की क्या शक्ति होती है।

मन की बात, 30 अप्रैल 2017

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन के बाद हम बुद्ध पूर्णिमा मनायेंगे। विश्वभर में भगवान बुद्ध से जुड़े हुए लोग उत्सव मनाते हैं। विश्व आज जिन समस्याओं से गुज़र रहा है हिंसा, युद्ध, विनाशलीला, शस्त्रों की स्पर्द्धा, जब येवातावरण देखते हैं तो तब, बुद्ध के विचार बहुत ही relevant लगते हैं। और भारत में तो अशोक का जीवन युद्ध से बुद्ध की यात्रा का उत्तम प्रतीक है। मेरा सौभाग्य है कि बुद्ध पूर्णिमा के इस महान पर्व पर United Nations के द्वारा vesak day मनाया जाता है। इस वर्ष ये श्रीलंका में हो रहा है। इस पवित्र पर्व पर मुझे श्रीलंका में भगवान बुद्ध को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का एक अवसर मिलेगा। उनकी यादों को ताज़ा करने का अवसर मिलेगा।

मन की बात, 28 मई, 2017

'माता भूमिः पुत्रो अहम् पृथिव्याः'। वेदों में कहा है हम में जो purity है वह हमारी पृथ्वी के कारण है। धरती हमारी माता है और हम उनके पुत्र हैं। अगर हम भगवान् बुद्ध को याद करें तो एक बात ज़रूर उजागर होती है कि महात्मा बुद्ध का जन्म, उन्हें ज्ञान की प्राप्ति और उनका महा-परिनिर्वाण, तीनों पेड़ के नीचे हुआ था। हमारे देश में भी अनेक ऐसे त्यौहार, अनेक ऐसी पूजा-पद्धति, पढ़े-लिखे लोग हों, अनपढ़ हो, शहरी हो, ग्रामीण हो, आदिवासी समाज हो, प्रकृति की पूजा, प्रकृति के प्रति प्रेम एक सहज समाज जीवन का हिस्सा है। लेकिन हमने उसे आधुनिक शब्दों में आधुनिक तर्कों के साथ संजोने की ज़रूरत है।

लाल क़िले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस भाषण, 15 अगस्त, 2017

मेरे पयारे देशवासियो, कभी-कभी आसथा के नाम पर धैर्य के अभाव में कुछ लोग ऐसी चीजें कर बैठते हैं, जो समाज के ताने-बाने को बिखेर देती हैं। देश शांति, सद्भावना और एकता से चलता है। जातिवाद का जहर, समप्रदायवाद का जहर, देश का कभी भला नहीं कर सकता है। ये तो गांधी की भूमि है, बुद्ध की भूमि है, सबको साथ ले करके चलना; ये इस देश की संसकृति और परमपरा का हिस्सा है। हमें इसको सफलता से आगे बढ़ाना है, और इसलिए आसथा के नाम पर हिंसा को बल नहीं दिया जा सकता है।

मन की बात, 27 अगस्त, 2017

मेरे प्यारे देशवासियो, सादर नमस्कार। एक तरफ देश उत्सवों में डूबा हुआ है और दूसरी तरफ से हिन्दुस्तान के किसी कोने से जब हिंसा की खबरें आती हैं तो देश को चिंता होना स्वाभाविक है। ये हमारा देश बुद्ध और गांधी का देश है, देश की एकता के लिए जी-जान लगा देने वाले सरदार पटेल का देश है। सदियों से हमारे पूर्वजों ने सार्वजनिक जीवन-मूल्यों को, अहिंसा को, समादर को स्वीकार किया हुआ है, हमारी ज़हन में भरा हुआ है। अहिंसा परमो धर्म:, ये हम बचपन से सुनते आये हैं, कहते आये हैं। मैंने लाल किले से भी कहा था कि आस्था के नाम पर हिंसा बर्दाश्त नहीं होगी, चाहे वो सांप्रदायिक आस्था हो, चाहे वो राजनैतिक विचार धाराओं के प्रति आस्था हो, चाहे वो व्यक्ति के प्रति आस्था हो, चाहे वो परम्पराओं के प्रति आस्था हो, आस्था के नाम पर, कानून हाथ में लेने का किसी को अधिकार नहीं है।

'भारतीय समुदाय को सम्बोधन, यंगोन, म्यांमार, 06 सितम्बर, 2017

हजारों वर्षों से भारत और मयांमार की सिर्फ सीमाएं ही नहीं, बल्कि भावनाएं भी एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। भारत में मयांमार को ब्रह्मदेश या भगवान ब्रह्मा की धरती भी कहा जाता है। साथियो, ये वो पवित्र धरती है ज़िसने बुद्ध को सहेजा है, उनकी शिक्षाओं को संवारा है। यहां के बौद्ध ग्रंथों और भिक्षुओं ने हिनदुसतान के कोने-कोने में, भारत के सभी राजयों के साथ सैंकड़ों साल से भी जयादा एक अटूट रिशते को पाला-पोसा है, जिसमें न केवल धर्म, बल्कि पाली भाषा, साहित्य और शिक्षा भी शामिल रहे हैं। भारत को और विशव को मयांमार की पुणय भूमि में सवर्गीय गोयनका जी के माधयम से विपासना का उपहार दिया है। और मुझे खुशी है कि उनके सुपुत्र आज हमारे बीच हैं।

भारतीय समुदाय को सम्बोधन, फ़िलीपींस, 13 नवम्बर, 2017

शायद ही यहां के कोई देश ऐसे होंगे जिनके विषय में रामायण अपरिचित हों, राम अपरिचित हों, शायद ही बहुत कम देश होंगे कि जिन्हें बुद्ध के प्रति श्रद्धा न हो। ये अपने आप में एक बहुत बड़ी विरासत है और इस विरासत को संवारने का, सजाने का काम भारतीय समुदाय जो यहां रहता है वो बहुत बखूबी कर सकता है। एक काम एक embassy करती है। उससे अनेक गुणा काम एक सामानय भारतीय कर सकता है। और मैंने अनुभव किया है कि दुनिया भर में आज हर भारतीय गौरव के साथ सर उठा करके आंख में आंख मिलाकर के गौरव के साथ भारतीय होने की बात करता है। किसी भी देश के लिए ये एक बहुत बड़ी पूंजी होती है। और विशव भर में फैला हुआ भारतीय समुदाय और भारत के लोग सदियों से देशाटन करने की वृत्ति प्रवृत्ति के रहे हैं।

राष्ट्रीय युवा उत्सव, नॉएडा, 12 जनवरी , 2018

साथियों, आप अभी जिस यूनिवर्सिटी के परिसर में हैं, उसका नाम गौतम बुद्ध पर है।
आप जिस शहर में हैं- ग्रेटर नोएडा- उसका नाम भी गौतम बुद्ध नगर है। इसलिए मैं आपको गौतम बुद्ध से ही जुड़ा एक किस्सा सुनाता हूँ। छोटा सा वाकया है, बहुत बड़ा नहीं।
एक बार भगवान बुद्ध से उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा कि क्या आपसे शिक्षा लेने वाले हर शिष्य को निर्वाण मिल जाएगा? भगवान बुद्ध ने जवाब दिया- नहीं, कुछ को मिलेगा,
कुछ को नहीं मिलेगा। शिष्य ने पूछा- ऐसा क्यों? तब भगवान बोले कि जो मेरी शिक्षाओं को सही यही तो गौतम बुद्ध के "अप्प दीपो भव:" का भी सार है। अपना दीपक, अपना प्रकाश स्वयं बनो। अपने संकल्प स्वयं लो। कोई आपको शपथ दिलाने के लिए नहीं आएगा, तरीके से समझ पाएंगे, उन्हें ही निर्वाण मिलेगा, बाकी भटकते रह जाएंगे।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में ''क्रिएटिंग अ शेयर्ड फ्यूचर इन अ फ्रैक्चर्ड वर्ड'' विषय पर वक्तव्य, 23 जनवरी, 2018

यानि संसार में रहते हुए उसका त्याग पूर्वक भोग करो, और किसी दूसरे की सम्पत्ति का लालच मत करो।ढाई हज़ार साल पहले भगवान् बुद्ध ने अपरिग्रह यानि आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल को अपने सिद्धांतों में प्रमुख स्थान दिया। भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का trusteeship का सिद्धांत भी आवश्यकता यानि need के अनुसार उपयोग और उपभोग करने के पक्ष में था; greed पर आधारित शोषण का उन्होंने सीधा विरोध किया था.सोचने का विषय है कि त्यागपूर्वक भोग से आवश्यकतानुसार उपयोग करते हुए अब हम लालच के वश प्रकृति के शोषणतक कैसे पहुँच गए? यह हमारा विकास हुआ है या पतन? हमारे दिमाग कीयेदुरावस्था, हमारे स्वार्थ की खौफनाक झलक, हमें क्यों आत्म-चिंतन पर मजबूर नहीं करती?

इस्लामी विरासत: सदभावना व उदारता संवर्धन के विषय पर वक्तव्य, 1 मार्च, 2018

चाहे वह ढाई हज़ार साल पहले भगवान बुद्ध हों या पिछली शताब्दी में महात्मा गांधी।
अमन और मुहब्बत के पैग़ाम की ख़ुशबू भारत के चमन से सारी दुनिया में फैली है। यहाँ के सन्देश की रौशनी ने सदियों से हमें सही रास्ता दिखाया है।
इस सन्देश की शीतलता ने घावों पर मरहम भी लगाया है। दर्शन और मज़हब की बात तो छोड़ें। भारत के जनमानस में भी यह अहसास भरा हुआ है कि सबमें एक ही रौशनी का नूर है। कि ज़र्रे-ज़र्रे में उसी एक की झलक है।

मन की बात, 29 अप्रैल, 2018

मेरे प्यारे देशवासियो ! बुद्ध पूर्णिमा प्रत्येक भारतीय के लिए विशेष दिवस है। हमें गर्व होना चाहिए कि भारत करुणा, सेवा और त्याग की शक्ति दिखाने वाले महामानव भगवान बुद्ध की धरती है, जिन्होंने विश्वभर में लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया। यह बुद्ध पूर्णिमा भगवान बुद्ध को स्मरण करते हुए उनके रास्ते पर चलने का प्रयास करने का, संकल्प करने का और चलने का हम सबके दायित्व को पुन:स्मरण कराता है। भगवान बुद्ध समानता, शांति, सदभाव और भाईचारे की प्रेरणा शक्ति है। यह वैसे मानवीय मूल्य हैं, जिनकी आवश्यकता आज के विश्व में सर्वाधिक है। बाबा साहेब डॉ. आम्बेडकर जोर देकर कहते हैं कि उनकी social philosophy में भगवान बुद्ध की बड़ी प्रेरणा रही है। उन्होंने कहा था – "My Social philosophy may be said to be enshrined in three words; liberty, equality and fraternity. My Philosophy has roots in religion and not in political science. I have derived them from the teaching of my master, The Buddha."
बाबा साहेब ने सविंधान के माध्यम से दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो हाशिये पर खड़े करोड़ों लोगों को सशक्त बनाया। करुणा का इससे बड़ा उदाहरण नहीं हो सकता। लोगों की पीड़ा के लिए यह करुणा भगवान बुद्ध के सबसे महान गुणों में से एक थी। ऐसा कहा जाता है कि बौद्ध भिक्षु विभिन्न देशों की यात्रा करते रहते थे। वह अपने साथ भगवान बुद्ध के समृद्ध विचारों को ले करके जाते थे और यह सभी काल में होता रहा है। समूचे एशिया में भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ हमें विरासत में मिली हैं। वह हमें अनेक एशियाई देशों; जैसे चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड, कम्बोडिया, म्यांमार कई अनेक देश वहाँ बुद्ध की इस परंपरा, बुद्ध की शिक्षा जड़ों में जुड़ी हुई है और यही कारण है कि हम Buddhist Tourism के लिए Infrastructure विकसित कर रहे हैं, जो दक्षिण-पूर्वी एशिया के महत्वपूर्ण स्थानों को, भारत के खास बौद्ध स्थलों के साथ जोड़ता है। मुझे इस बात की भी अत्यंत प्रसन्नता है कि भारत सरकार कई बौद्ध मंदिरों के पुनरुद्धार कार्यों में भागीदार है। इसमें म्यांमार में बागान में सदियों पुराना वैभवशाली आनंद मंदिर भी सम्मलित है। आज विश्व में हर जगह टकराव और मानवीय पीड़ा देखने को मिलती है। भगवान बुद्ध की शिक्षा घृणा को दया से मिटाने की राह दिखाती है। मैं दुनिया भर में फैले हुए भगवान बुद्ध के प्रति श्रद्धा रखने वाले, करुणा के सिद्धांतों में विश्वास करने वाले - सबको बुद्ध पूर्णिमा की मंगलमयी कामना करता हूँ। भगवान बुद्ध से पूरी दुनिया के लिए आशीर्वाद मांगता हूँ, ताकि हम उनकी शिक्षा पर आधारित एक शांतिपूर्ण और करुणा से भरे विश्व का निर्माण करने में अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकें। आज जब हम भगवान बुद्ध को याद कर रहे हैं। आपने laughing Buddha की मूर्तियों के बारे में सुना होगा, जिसके बारे में कहा जाता है कि laughing Buddha good luck लाते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि smiling Buddha भारत के रक्षा इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना से भी जुड़ी हुई है। अब आप सोचते रहे होंगे कि smiling Buddha और भारत की सैन्य-शक्ति के

बीच क्या संबंध है? आपको याद होगा आज से 20 वर्ष पहले 11 मई, 1998 शाम को तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था और उनकी बातों ने पूरे देश को गौरव, पराक्रम और खुशी के पल से भर दिया था। विश्वभर में फैले हुए भारतीय समुदाय में नया आत्मविश्वास उजाग़र हुआ था। वह दिन था बुद्ध पूर्णिमा का। 11 मई, 1998, भारत के पश्चिमी छोर पर राजस्थान के पोखरण में परमाणु परीक्षण किया गया था। उसे 20 वर्ष हो रहे हैं और ये परीक्षण भगवान बुद्ध के आशीर्वाद के साथ बुद्ध पूर्णिमा के दिन किया गया था। भारत का परीक्षण सफल रहा और एक तरह से कहें तो विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भारत ने अपनी ताक़त का प्रदर्शन किया था। हम कह सकते हैं कि वो दिन भारत के इतिहास में उसकी सैन्य-शक्ति के प्रदर्शन के रूप में अंकित है। भगवान बुद्ध ने दुनिया को दिखाया है- inner strength अंतर्मन की शक्ति शांति के लिए आवश्यक है। इसी तरह जब आप एक देश के रूप में मजबूत होते हैं तो आप सब के साथ शांतिपूर्ण रह भी सकते हैं। मई, 1998 का महीना देश के लिए सिर्फ़ इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि इस महीने में परमाणु परीक्षण हुए, बल्कि वो जिस तरह से किए गए थे वह महत्वपूर्ण है। इसने पूरे विश्व को दिखाया कि भारत की भूमि महान वैज्ञनिकों की भूमि है और एक मज़बूत नेतृत्व के साथ भारत नित नए मुकाम और ऊँचाइयों को हासिल कर सकता है। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने मंत्र दिया था - "जय-जवान जय-किसान, जय-विज्ञान" आज जब हम 11 मई, 1998 उसका 20वाँ वर्ष मनाने जा रहे हैं, तब भारत की शक्ति के लिए अटल जी ने जो 'जय-विज्ञान' का हमें मंत्र दिया है, उसे आत्मसात करते हुए आधुनिक भारत बनाने के लिए, शक्तिशाली भारत बनाने के लिए, समर्थ भारत बनाने के लिए हर युवा योगदान देने का संकल्प करे। अपने सामर्थ्य को भारत के सामर्थ्य का हिस्सा बनाएँ। देखते-ही-देखते जिस यात्रा को अटल जी ने प्रारंभ किया था, उसे आगे बढ़ाने का एक नया आनंद, नया संतोष हम भी प्राप्त कर पाएँगे।

संत कबीर की 500 वीं पुण्य तिथि पर सम्बोधन, मगहर, 28 जून 2018

समाज को रास्ता दिखाने के लिए भगवान बुद्ध पैदा हुए, महावीर आए, संत कबीर, संत सुदास, संत नानक जैसे अनेक संतों की श्रृंखला हमारे मार्ग दिखाती रही। उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम- कुरीतियों के खिलाफ देश के हर क्षेत्र में ऐसी पुण्यात्माओं ने जन्म लिया जिसने देश की चेतना को बचाने का, उसके संरक्षण का काम किया।

पशुपतिनाथ धर्मशाला का उद्घाटन, काठमांडू, 31, अगस्त, 2018

काठामांडू की यह पवित्र धरती हिन्दू और बोध आस्था की एक प्रकार से संगम स्थली है। यह दोनों मत किस प्रकार एक दूसरे के प्रति समावेशी है, इनके मानने वालों के बीच किस प्रकार का मेल-मिलाव है। काठमांडू की गलियों और पगडंडियों से गुजरते हुए अनुभव हर कोई यात्री कर सकता है। हर किसी को अनुभव होता है। भगवान पशुपतिनाथ का यह धाम भी बहुत आस्था के अनेक केंद्रों से घिरा हुआ है। बुद्ध भिक्षुओं के कण से गुत्था और अभी प्रदीप जी बता रहे थे - ओम मणि पद्मे हम - और शिव भक्तों के मुख से ओम नम: शिवाय का जाप कब एकाकार हो जाते हैं पता तक नहीं चलता। यह परंपरा भी नेपाल और भारत के बीच रिश्तों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। नेपाल के लुम्बिनी ने दुनिया को गौतम दिये, तो भारत के बौद्धगया ने बुद्ध दिये हैं। गौतम बुद्ध का दिखाया रास्ता आज अतिवाद और आतंकवाद जैसी दुनिया की अनेक समस्याओं को हल करने का प्रेरणास्रोत है।

भारतीय समुदाय को सम्बोधन, जापान, 29 अक्तूबर, 2018

भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर यह मेरी तीसरी जापान यात्रा है। और जब भी जापान आने का मौका मिला तो यहां मुझे एक आत्मीयता का अनुभव होता है। वो इसलिए क्योंकि भारत और जापान के बीच संबंधों की जड़ें पंथ से लेकर प्रवृति तक हैं। हिंदू हो या बौद्ध मत, हमारी विरासत साझा है। हमारे आराध्य से लेकर अक्षर तक में इस विरासत की झलक हम प्रति पल अनुभव करते है।

मां सरस्वती, मां लक्ष्मी, भगवान शिव और गणेश सबके साम्य जापानी समाज में मौजूद हैं। सेवा शब्द का अर्थ जापानी और हिंदी में एक ही है। होम यहां पर गोमा बन गया और तोरण जापानी में तोरी बन गया। पवित्र Mount Ontake (ओंताके) पर जाने वाले जापानी तीर्थयात्री जो पारंपरिक श्वेत पोशाक पहने हैं, उस पर संस्कृत-सिद्धम लिपि के कुछ प्राचीन वर्ण भी लिखवाते हैं। वे जब श्वेत जापानी तेंगुई पहनते हैं तो उस पर ॐ (ओम्) लिखा होता है।

साथियों, भारत और जापान के रिश्तों के ताने बाने में ऐसे अतीत के बहुत से मजबूत धागे हैं। भारत और जापान के इतिहास को जहां बुद्ध और बोस जोड़ते हैं, वहीं वर्तमान को आप जैसे नए भारत के राष्ट्रदूत मजबूत कर रहे हैं। सरकार का राजदूत एक है लेकिन राष्ट्रदूत यहाँ हज़ारों हैं। आप वो पुल हैं जो भारत और जापान को, दोनों देशों के लोगों को, संस्कृति और आकांक्षाओं को जोड़ते हैं। मुझे खुशी है कि आप अपने इस दायित्व को सफलता के साथ निभा रहे हैं।

गुरु रविदास की जन्म स्थली विकास परियोजना के शिलान्यास समारोह में सम्बोधन, 19 फरवरी, 2019

पिछले वर्ष ही मगहर में संत कबीर जी से जुड़े स्मारक की आधारशिला रखने मैं खुद गया था। इसी तरह, सारनाथ में भगवान बुद्ध से जुड़े संस्कारों को पवित्र स्थानों को संरक्षित किया गया है, सुंदरीकरण किया गया है। इसी प्रकार हम गुरूनानक देव जी की 550वीं जन्म जयंती के समारोहों को पूरी दुनिया में व्यापक स्तर पर मना रहे हैं।

लेह में भारतीय सशस्त्र बलों को सम्बोधन, 3 जुलाई, 2020 भगवान

गौतम बुद्ध ने कहा है-

साहस का संबंध प्रतिबद्धता से है, conviction से है। साहस करुणा है, साहस compassion है। साहस वो है जो हमें निर्भीक और अडिग होकर सत्य के पक्ष में खड़े होना सिखाए। साहस वो है जो हमें सही को सही कहने और करने की ऊर्जा देता है।

आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश रोज़गार अभियान के शुभारम्भ पर सम्बोधन, 26 जून, 2020

बौद्ध सर्किट के लिहाज़ से अहम कुशीनगर एयरपोर्ट को इंटरनेशनल एयरपोर्ट घोषित किया गया है। इससे पूर्वांचल में हवाई कनेक्टिविटी और सशक्त होगी और देश-विदेश में महात्मा बुद्ध पर आस्था रखने वाले करोड़ों श्रद्धालु अब आसानी से उत्तर प्रदेश आ सकेंगे। इससे भी स्थानीय युवाओं के लिए रोज़गार और स्वरोज़गार के अनेक अवसर बनेंगे।और पर्यटन क्षेत्र की एक विशेषता आप भी जानते हैं।ये क्षेत्र, कम से कम पूंजी में, अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देता है।

देव दीपावली महोत्सव, वाराणसी, 30 नवम्बर, 2020

अभी यहाँ से मैं भगवान बुद्ध की स्थली सारनाथ जाऊंगा। सारनाथ में शाम के समय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए और लोक शिक्षा के लिए भी आप सबकी जो लंबे समय से मांग थी वो अब पूरी हो गई है। लेजर शो में अब भगवान बुद्ध के करुणा, दया और अहिंसा के संदेश साकार होंगे। ये संदेश आज और भी प्रासंगिक हो जाते हैं जब दुनिया हिंसा, अशांति और आतंक के खतरे देखकर चिंतित है। भगवान बुद्ध कहते थे- न हि वेरेन वेरानि सम्मन्ती ध कुदाचन अवेरेन हि सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो अर्थात वैर से वैर कभी शांत नहीं होता। अवैर से वैर शांत हो जाता है। देव दीपावली से देवत्व का परिचय कराती काशी से भी यही संदेश है कि हमारा मन इन्हीं दीपों की तरह जगमगा उठे। सब में सकारात्मकता का भाव हो। विकास का पथ प्रशस्त हो। समूची दुनिया करुणा, दया के भाव को स्वयं में समाहित करे। मुझे विश्वास है कि काशी से निकलते ये संदेश, प्रकाश की ये ऊर्जा पूरे देश के संकल्पों को सिद्ध करेगी। देश ने आत्मनिर्भर भारत की जो यात्रा शुरू की है, 130 करोड़ देशवासियों की ताकत से हम उसे पूरा करेंगे।

रुद्राक्ष सहयोग एवं कन्वेन्शन सेंटर के उद्घाटन पर सम्बोधन, वाराणसी, 15 जुलाई, 2021

काशीकी बात ही क्या काशीतो वैसे भी दुनिया का सबसे प्राचीन जीवंत शहर है। शिव से लेकर सारनाथ में भगवान बुद्ध तक, काशी ने आध्यात्म के साथ साथ कला और संस्कृति को सदियों से सँजोकर रखा है। आज के समय में भी, तबला में 'बनारसबाज' की शैली हो, ठुमरी, दादरा, ख्याल, टप्पा और ध्रुपद हो, धमार, कजरी, चैती, होरी जैसी बनारस की चर्चित और विख्यात गायन शैलियाँ हों, सारंगी और पखावज हो, या शहनाई हो, मेरे बनारस के तो रोम रोम से गीत संगीत और कला झरती है।

सोमनाथ में कई परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास के अवसर पर संबोधन, 20 अगस्त, 2021

हज़ारों वर्ष पहले, सिंधु घाटी सभ्यता का लोथल बंदरगाह समुद्री व्यापार से जुड़ा हुआ था। प्राचीन समय के स्वतंत्र maritime माहौल में ही भगवान बुद्ध का शांति संदेश विश्व में फैल पाया। आज के संदर्भ में भारत ने इसी खुले और inclusive एथोस के आधार पर SAGAR – Security and Growth for All in the Region – का vision परिभाषित किया है। इस vision के जरिये हम अपने क्षेत्र में maritime security का एक inclusive ढांचा बनाना चाहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 'अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के रखरखाव पर खुली बहस:समुद्री सुरक्षा' विषय पर टिप्पणी, 9 अगस्त, 2021

बुद्ध सर्किट पूरे विश्व के बौद्ध अनुयाइयों को भारत में आने की, पर्यटन करने की सुविधा दे रहा है। आज इस दिशा में काम को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। ऐसे ही, हमारा पर्यटन मंत्रालय 'स्वदेश दर्शन स्कीम' के तहत 15 अलग अलग थीम्स पर tourist circuits को विकसित कर रहा है। इन circuits से देश के कई उपेक्षित इलाकों में भी पर्यटन और विकास के अवसर पैदा होंगे।

काशी विश्वनाथ धाम के उद्घाटन के अवसर पर सम्बोधन, 13 दिसम्बर, 2021

यहीं की धरती सारनाथ में भगवान बुद्ध का बोध संसार के लिए प्रकट हुआ। समाजसुधार के लिए कबीरदास जैसे मनीषी यहाँ प्रकट हुये। समाज को जोड़ने की जरूरत थी तो संत रैदास जी की भक्ति की शक्ति का केंद्र भी ये काशी बनी।

‘बिप्लोबी भारत गैलरी’ के उद्घाटन के अवसर पर संबोधन, 23 मार्च, 2022

तिरंगे के अंदर नीले चक्र को मैं भारत की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक के रूप में देखता हूँ। वेद से विवेकानंद तक, बुद्ध से गांधी तक ये चक्र चलता रहा, मथुरा के वृंदावन, कुरुक्षेत्र के मोहन, उनका सुदर्शन चक्र और पोरबंदर के मोहन का चरखाधारी चक्र, ये चक्र कभी रुका नहीं।

Ministry of Information
and Broadcasting
Government of India
Azadi Ka
Amrit Mahotsav